

प्यार पागलपन है

—•♥•—
और अन्य कहानियाँ

भावना शर्मा



BlueRose ONE .com
S t o r i e s M a t t e r

New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS

India | U.K.

Copyright © Bhavna Sharma 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@blurosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-414-1

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: October 2026

बहन का प्रेम—एक अंश इस कहानी संग्रह से

कांता और शांता के स्वभाव और एक दूसरे के प्रति प्रेम और स्नेह को देखकर स्कूल में कई लड़कियां ईर्ष्या से जल उठती। कांता अपनी छोटी बहन को मां के साथ मिलकर पढ़ाती। शांता का मन पढ़ाई में नहीं लगता और वो अपनी बड़ी बहन से कहती, यार, यार छोड़ो न ये पढ़ाई वगैरह जिसपर कांता उसको चेहरे पर हलकी चपत लगा देती। रात में सोती तो एक साथ, शांता आधी रात तक सोती नहीं और बड़ी बहन को भी अपने बातों से जगा कर रखती। एक रात सोते समय शांताने कहा, दीदी सलमान खां मेरे से उम्र में तीस साल से ज्यादा बड़ा है पर दिखता बहुत हैण्डसम है। क्या मैं उनसे शादी कर सकती हूँ ? कांता ने कहा शरम नहीं आती ऐसा बोलते “बाबूजी की उम्र का है।” शांता तपाक से बोली ‘दी’ तुमने चीनी कम फिल्म नहीं देखी तबु और अमिताभ बच्चन की उम्र में भी उतना ही फर्क था। कांता खीज गयी और बोली ठीक है सलमान से तेरी शादी की बात कल करेंगे। ओहो दीदी आप भी ना कहते हुए शांता सो गयी।

लेखिका

नाम—भावना भार्मा

शिक्षा—बी.ए. (Creative Writing)

हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य जगत में असंख्य किताबें एवं रचनाएं प्रकाशित।

भावना शर्मा के द्वारा लिखी किताब “The day that hurts” नारी के मजबूत इरादों को दर्शाता है।

भावना शर्मा द्वारा लिखी गयी किताबे

Book Title	Publication
A Bond of Love	JEC Publication
A Good Education is a Sensation	JEC Publication
A Match Made in Hell	MG Publication
A Time of Enlightenment	JEC Publication
According to Me	JEC Publication
Age Matters?	Writers Corner Publication
Bliss of Life	JEC Publication
Bonding Bouquet	Bluestar Publication
Boundless Beauty	Radhekrishn Publication
College Gate	Nirantar Publication
The Black Day of India Pulwama Attack	Deepmisti Publication
Forever Yours	Bluestar Publication
Gush of Memories	Bluestar Publication
Happiness Around Us	United Literates Publication
Happy Birthday	JEC Publication
Inkwell Odyssey	Sarvad Publication
book name rise again	Inverse Chronicles Publication
Jeevan ke Sangharsh Ki Yatra	Nirantar Publication
Layz Dil Se	Nirantar Publication
Love of Shadow	JEC Publication
Lovers Shadow	JEC Publication
Manzil-e-Khayal	Story Spinners Publication
Mann Ki Baat	JEC Publication
My Life	Worldgeniz Publication
Nature	MG Publication

Navigating the New Years	JEC Publication
New Generation	A uniq Writer Publication
Nothing Like Before	United Literates Publication
Onesided Love	Worldgeniz Publication
Our Harmonious Motherland	United Literates Publication
Rainy Season	SP Publication
Reflect, Renew, Rejoice	JEC Publication
Rise Again Book	Rise Again Book Publication
Sapne	JEC Publication
Santi	United Literates Publication
Ship of Life	United Literates Publication
Silent Soul	SB Publication
Silken Sonnets	Compiled by Aisha Anand
Soul Connection	AL-LINA Publication
Tales in Flash	Story Spinners Publication
Tales of Heart	United Literates Publication
The Karma of Life	SHK Publication
Together Forever	Compiled by Aagash Somraj C.
Value of Patience	SJ Publication
Victory After Achievement	Ink Oracle Publication
Voice of Inner Thoughts	DJ Publication & Radhekrishn Publication
Wishes	Auniq Writer Publication
Women's Dare to Lead	AL-LINA Publication
Youth Empowerment	JEC Publication
A Beautiful Mess	Publication

अनुक्रम

Love in Hongkong Flight.....	1
“फोन ओ फ्रेंड” एक रॉग नंबर.....	9
जीवन का संघर्ष.....	18
घर की लक्ष्मी बेटी.....	25
प्यार पागलपन है.....	32
बहन का प्रेम.....	41
चमेली (गाँव की अल्हड़ युवती).....	48
प्यार का झटका 440 वोल्ट का.....	56
कलियुग के रावण और श्रवण कुमार.....	65
भाभी माँ.....	74
पहला पहला प्यार है.....	86
प्यार अंधा होता है.....	93
प्यार एक धोखा है।.....	102
दहेज.....	110
प्यार एक पूजा है.....	116

Love in Hongkong Flight

लव इन हांगकाँग फ्लाईट



सुयेश टैक्सी से उतरा और भागते भागते एयरपोर्ट के अंदर पहुँचा। हांगकाँग इन्टरनेशनल एयरपोर्ट पर इंडिया जाने के लिये लोग फ्लाइट की इन्जतार में थे। सुयेश ने इन्कवायरी काउण्टर पर पता किया तो फ्लाइट आधा घंटा लेट थी। कॉफी पाइंट पर उसने कॉफी खरीदी और एस सीट पर बैठ गया। उसने कॉफी पीने के बाद ‘Hongkong News Paper’ खरीदा और पढ़ने लगा।

इतने में माइक पर अनाउन्स होना शुरू हुआ “Attention Passengers travelling by flight to India are requested to come for check in. I request physically handicapped to come in first and then business class passengers to come in and then followed by the passengers along with children. In the last economy

class passengers are requested to come in for boarding flight.

सुयेश फटाफट अपना हैण्डबैग लेकर काउंटर पहुँचा तो काफी लंबी लाईन लगी थी। सुयेश लाईन में खड़ा हो गया। उसी समय एक लड़की दनदनाती हुई आयी और सुयेश के पीछे खड़ी हो गयी। लड़की काफी गोरी थी, खुले बाल रख रखे थे, आँखों पर काला चशमा, कानों में नीली रंग के इयररिंग्स, होठों में लाल रंग का लिपस्टिक, नीली जीन्स और पीले रंग का टॉप पहन रखा था। लड़की ने हल्का परफ्युम लगा रखा था। लाइन में खड़े होते वक्त लड़की के हाथ में लिया हैण्डबैग सुयेश से टकरा गया। लड़की ने कहा आई एम सॉरी, हाय, आई एम लवलीना। सुयेश जो की लड़की से बहुत ही आकर्षित था कहा ‘Never Mind’, ‘I am suyesh’ दोनों ने एक दुसरे से हाथ मिलाये। सुयेश ने टिकट चेक करवाया और मेन गेट की ओर बढ़ गया।

सुयेश फ्लाइट में अपनी सीट के पास आया और हैण्डबैग रखने वाले ऊपरी डिब्बे में हैण्डबैग रख दिया। उसको खिड़की वाली सीट मिली थी। थोड़ी देर बाद लवलीना आयी, और कहने लगी ‘What a coincidence’ और अपना बैग ऊपर वाले डिब्बे में रख दिया। लवलीना ने सुयेश से कहा ‘Can I seat near the window if you don’t mind’ सुयेश सीट से बाहर निकला और लवलीना खिड़की वाली सीट पर बैठ गयी।

ऐयरहोस्ट्रेज संगीत सुनने के लिए हैडफोन बाँटने लगी। सुयेश ने हैडफोन सामने बने हैण्ड बैग में ठूँस दिया तो थोड़ी देर बाद लवलीना ने भी ठूँस दिया। ऐयरहोस्ट्रेज ने उसी समय एनाउंस किया कि फ्लाईट टेकऑफ् करने वाली है और सभी कृप्या अपनी बेल्ट बाँध ले। हवाई जहाज उड़ने लगा। लवलीना का बहुत ज्यादा आकर्षण सुयेश पर दिखने लगा था। लवलीना ने काला चशमा उतार दिया था। सुयेश एक टक लवलीना को देखता रहा तो लवलीना ने

ताड़ लिया। सुयेश झंप गया। लवलीना ने पुछा – गोइंग फार साइटसिंग। सुयेश ने कहा – कम्पनी कान्ट्रेक्ट दो साल का खत्म हुआ है और वो हमेशा के लिए वापस अपने घर भारत जा रहा है। सुयेश ने आगे बताया कि वो चाँदनी चौक के पास दिल्ली में अपने पैतृक बंगले में रहता है। सुयेश ने लवलीना से पुछा तो उसने बताया कि वो घुमने तथा अपनी बेस्ट फ्रेंड से मिलने हांगकाँग गयी थी। लवलीना ने बताया कि वो करोलबाग में सनशाइन अपार्टमेन्ट में रहती है।

परिचारिका ट्राली में ड्रिंक्स लेकर आयी। परिचारिका – मैम, सर ड्रिंक्स फार यु। सुयेश ओर लवलीना एक साथ बोल उठे – एप्पल ज्युस। परिचारिका ने दोनों को एप्पल ज्युस दिया। दोनों ज्युस पीने लगे। ज्युस खत्म हुआ तो सुयेश ने अपना और लवलीना का खाली गिलास परिचारिका को दिया।

इस बीच सुयेश और लवलीना बातचीत में इनफार्मल से फार्मल हो गये थे। सुयेश ने लवलीना को चुटकुला सुनाया – एक पति अपनी पत्नी को फोन करता है और कहता है डार्लिंग मैंने पिक्चर कि दो टिकट बुक करा रखी है। तुम तैयार होना शुरू कर दो। उस समय शाम के पाँच बज रहे थे। पत्नी ने पुछा “पिक्चर कितने बजे शुरू होगी। पति ने कहा कल शाम छः बजे। लवलीना इतना सुनकर सुयेश को हंसते हुए मुक्के मारने लगी और सुयेश बचने की कोशिश करने लगा। लवलीना – तुम सोचते हो औरतें मेकअप करने में चौबिस घंटे लगा देती है। सुयेश हंसते हुए – चुटकुला तो यही कहता है। सफर लंबा था तो लवलीना थोड़ी देर के लिए ऊँधने लगी और सुयेश के कन्धे पर सिर रखकर सोने की कोशिश करने लगी। सुयेश को भार लग रहा था पर अच्छा भी लग रहा था। सुयेश ऐसे ही जीवन संगिनी की कल्पना कर रहा था।

थोड़ी देर बाद परिचारिका ट्राली लेकर आयी और उसने पुछा ‘Veg Food or Non-Veg’ सुयेश ने लवलीना को जगाया तो लवलीना ने परिचारिका से कहा दो वेज फुड। सुयेश ने पुछा तुमने कैसे जाना

कि मैं वेजिटेरियन हूँ तो लवलीना मुस्कुरा कर बोली 'इट इस बीकास आप और मैं एप्पल ज्युस सेम चाइस। परिचारिका ने खाने की दो ट्रे दी दोनों को और दोनों खाना खाने लगे। खाना खत्म हुआ तो परिचारिका ने हाथ धोने फिंगर बाल्स दिये। दोनों ने हाथ धोकर पास रखे नैपकिन से पोछ लिया। लवलीना ने पुछा 'आर यु मैरिड'। सुयेश — मैं अपनी ड्रीमगर्ल का इन्तजार कर रहा हूँ, खयालों में आती है पर हकीकत में नहीं। लवलीना हंसते हुए कहा — मैं अब जो मिल गयी हू, तुम्हारा इन्तजार खत्म। सुयेश — रियली। लवलीना — आई डॉट क्रेक जोक्स। सुयेश — मतलब मेरा जोक पसंद नहीं आया। लवलीना — नहीं मैं तो अपने बारे में कह रही थी।

लवलीना और सुयेश को लगा बरसों से एक दुसरे को जानते है। लवलीना ने पुछा — दिल्ली में सर्विस करोगे या बिजनेस। सुयेश — मैं सोच रहा हूँ कि कम्प्युटर खरिदी बिक्री का एक बहुत बड़ा शोरूम खोल लुं। लवलीना — मेरे हाथ तो हमेशा कम्प्युटर पर रहते है। मैं भी तुम्हारे काम में हाथ बटाउंगी। सुयेश — मॉम, डैड को मनाना पड़ेगा इन्टरकास्ट मैरिज के लिये। लवलीना — यार मार्डन युग है और हिन्दु और इसाई धर्म के कई कपल्स को मैंने अच्छा जीवन व्यतीत करते देखा है। लवलीना — शादी के बाद मैं हिन्दु धर्म अपनाने को तैयार हूँ। सुयेश — हांगकाँग में कई बार चर्च गया हूँ। मैं मानता हूँ कि एक ऊपरी शक्ति इस संसार को चला रही है और मैं उस भाक्ति को नमन करता हूँ चाहे वो राम, रहीम, जीसस या गुरुनानक के नाम से पुकारे जाते है। लवलीना — ये हुई ना बात मैंने दिल से तुम्हे अपना मान लिया है कहीं दिल्ली एयरपोर्ट से निकलते ही मन बदल तो नहीं दोगे। सुयेश लवलीना के माथे को चुमता है और कहता है कि आई स्वीयर इन द नेम ऑफ यूनिवर्सल पावर एंड गॉड। लवलीना उसको चुम लेती है। लवलीना — आई टु। इंदिरा गाँधी इन्टरनेशनल एयरपोर्ट पर उतरने से पहले दोनों ने मोबाईल नंबर, इन्स्टाग्राम, टवीटर आदि के डिटेल्स शेयर किये।

इंदिरा गाँधी इन्टरनेशनल एयरपोर्ट पर लवलीना को लेने माँ-बाप आये थे। सुयेश को लेने उसका भाई आया था। लवलीना ने सुयेश का परिचय अपने माँ-बाप से कराया और इशारों में अपनी माँ को अपनी पसंद बता दी। दोनों अपने-अपने घर को चल दिये।



रात आठ बजे लवलीना ने फोन कर सुयेश को हयात होटल खाने पर बुलाया। सुयेश थका हुआ था पर लवलीना को मना नहीं कर पाया। हयात होटल में लवलीना अपनी चार दोस्तों के साथ बैठी थी। लवलीना ने सब का परिचय सुयेश से कराया। लवलीना ने कहा – दिज इज रबीना माई पर्सनल बाडीगार्ड जो हमेशा मेरे साथ चिपकु रहती है, दीज इस सोफिया माई फुड मेन कैंटरर, दीज इस रोजा माई ब्यूटीशीयन, दीज इज मैरी माई मार्केटिंग शेड्युलर सभी सहेलिया लवलीना को मारने दौड़ी क्योंकि ऐसा कुछ नहीं था और लवलीना केवल मजाक कर रही थी। मैरी – व्वाहट् ए क्युट हैण्डसम गई यू हैव गाट्टु लव इन फलाईट। रोजा पिछली बार सिंगापुर गयी थी पर पूरी फलाईट बोरियत रही। आँखे सेकने तक को कार्ड नहीं मिला। सोफिया – ड्यूड्, यु आर टु लक्की फॉर देट। लवलीना – नजर मत लगाओँ एक ही सिंगल पीस लार्ड ने मेरे लिए बनाया

है। पाँचों सहेलिया एस साथ एक दुसरे से अपनी हथेलिया टकराने लगी।

सुयेश ने अपने मम्मी-पापा को लवलीना के बारे में बताया तो पापा ने कहा — हम तो डर रहे थे कि कहीं तुम विदेशा में ही शादी कर के घर ना बसा लो। यह क्या कम है कि तुम हमारी मर्जी से शादी करने जा रहे हो। इस रविवार लवलीना को बुला लेना। हम उसे आशीर्वाद दे देंगे। रविवार को लवलीना हल्के गुलाबी रंग की साड़ी पहन कर आयी जो की उसके गोरे रंग पर बहुत फब रही थी। लवलीना उनके चरणों में झुकी तो दोनों ने उसे उठा कर आशीर्वाद दिया। माँ-बाप ये सुनकर बहुत खुश थे कि हिन्दु रीति रिवाज से शादी होगी। माँ-बाप ने लवलीना से कहा — तुम चाहो तो प्रेयर के लिये संडे चर्च जा सकती हो। अगले रविवार सुयेश और उसके माँ-बाप लवलीना के घर पहुँचे तो लवलीना के माँ-बाप शादी के लिए सहर्ष राजी हो गये।

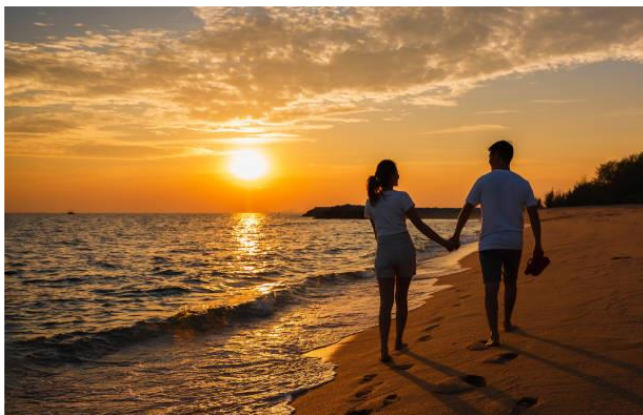
दो माह बाद शादी की तारीख निकली ओर लवलीना ने जिद करके हनिमून के लिये दो एयर टिकट हांगकाँग के लिये बनवाई। लवलीना ने कहा सुयेश से हांगकाँग फ्लाईट में बिताये प्यार के सुनहरे पल हमारी जिंदगी के सबसे खुबसुरत पल है जिन्हें हनीमून के समय याद करके लव और सेक्स करने का आनंद दोगुना हो जायेगा। सुयेश — अच्छा जी ये बात है, सेक्स की बड़ी जल्दी है आपको। लवलीना — शादी की नींव ही दुल्हा और दुल्हन को समाज से सेक्स के लिए स्वीकृति मिलना होता है। ये एक तरह से दो शरीर एवं दो आत्माओं का मिलन होता है और दो शरीर शारीरिक रूप से एक हो जाते हैं।

शादी हो जाती है। लवलीना के माँ-बाप ने होटल हयात में शादी की जिसमें पूरे 40 लाख खर्चे हुए। सुहागरात के लिए होटल का एक कमरा बुक था।

रात बारह बजे जब सुयेश कमरे में आया तो लाइट म्यूजिक चल रहा था और लवलीना वाशरूम में थी। सुयेश ने आवाज लगाई —

लवलीना कहा हो तुम। लवलीना — टु ऑसर द काल आफ नेचर।
सुयेश — जल्दी आओ ना। लवलीना — तुम भी अंदर आ जाओ।
सुयेश — दरवाजा तो खोलो शर्म किस बात की। लवलीना — गाउन
तो पहन लेने दो। थोड़ी देर बाद दरवाजा खुलता है और सुयेश
अपनी पत्नी लवलीना को बाँहों में उठायेँ आकर डबलबेड पर डाल
देता है। सुयेश बत्ती बुझा देता है और दो आत्माओं एवं शरीर का
मिलन हो जाता है।

सबेरे लवलीना चाय बनाती है। सुयेश — एक बार आना ना।
लवलीना — सारा शरीर दर्द कर रहा है और रात हांगकाँग की
फ्लाइट पकड़नी है। लवलीना — आज जो तुम्हे चाहिए हांगकाँग में
मिलेगा। सुयेश — लवलीना को गले के पास चूम लेता है। लवलीना
— प्लीज मान जाओ मेरे प्यारे सुयेश, मत भड़काओं मेरी भावनाएँ।
सुयेश और लवलीना हांगकाँग फ्लाईट बोर्ड करते हैं तो खाना देने
वो ही पुरानी वाली परिचारिका आयी और पुछा 'बोथ ऑफ यु गॉट
मैरिड' सुयेश — यस। परिचारिका — काँगरेचुलेशन एण्ड दीज इस
टु वेज फुड फॉर यु। लवलीना और सुयेश ताज्जुब कर रहे थे कि
परिचारिका की स्मरण शक्ति बहुत तेज है। दोनों एक दूसरे को
देखकर हँसने लगे।



—000—

“फोन ओ फ्रेन्ड” एक राँग नंबर

“फोन ओ फ्रेंड” एक राँग नंबर



बात 2001 की है जब भारत में 2G नेटवर्क तेजी से बढ़ रहा था। छोटे मोबाइल ज्यादातर दिखाई देते। अचानक सतबीर यादव के फोन की घंटी बजी। सतबीर यादव दिल्ली का निवासी था। सतबीर ने हैलों हैलों कौन बोल रहा है, कहा तो सामने से आवाज आई — हैलो मैं प्रिया बोल रही हूँ।

सतबीर — किससे बात करनी है’

प्रिया — क्या मैं रोहित वर्मा से बात कर सकती हूँ ?

सतबीर — ये सतबीर का नंबर है आप कहाँ से बोल रही हैं ?

प्रिया — मैं यूपी के शाहजहाँपुर से बोल रही हूँ। सारी गलत नंबर लग गया।

सतबीर — इट्स ओके, रोहित नहीं तो सतबीर से बात कर लीजिये।

प्रिया — अभी मैं जल्दी में हूँ। फिर कभी बात करते हैं।

सतबीर — प्रामिज। “फोन ओ फ्रेंड”

प्रिया — ठीक है। ओ—के।

प्रिया अपनी सहेली कंचन को रॉग नंबर के काल के बारे में और सतबीर से हुई बातचीत बता देती है।

कंचन — तुमने बात कर ली पर मैं कभी नहीं करती बाबा। अनजान आदमी का स्वभाव कैसा होगा, कौन जानता है।

प्रिया — बातचीत में सभ्य लग रहा था।

कंचन — पहली बार मीठी बात करते हैं और फिर सीधे सैक्स की बात करते हैं।

प्रिया — हर आदमी ऐसा नहीं होता।

काचन — ठीक है, सतबीर से आगे बात करो और फिर भुगतो।

प्रिया — ठीक है देखते हैं।

एक सप्ताह बाद सतबीर ने फोन किया तो प्रिया ने पूछा — कौन बोल रहा है। सतबीर ने कहा — मैं आपका रॉग नंबर सतबीर यादव बोल रहा हूँ।

प्रिया — गुड मॉर्निंग, कैसे हो सतबीर जी।

सतबीर — आकाश से लेकर धरती तक अपटूडेट।

प्रिया — क्या करते हैं आप?

सतबीर — मेरी ट्रेवल एजेंसी है। एक कार मेरी खुद की है। पाँच टेक्सी अटैच कर रखी हैं।

प्रिया — अच्छी आमदनी होती होगी।

सतबीर — कभी छप्पर फाड़ के और कभी कभी फाका हो जाता है।

प्रिया — घर में और कौन है

सतबीर — माँ बाप और बहन सुनीता। तुम्हारे घर में कौन कौन हैं

प्रिया — एक छोटा भाई और माँ बाप। पिताजी फैक्ट्री में प्रबन्धक हैं।

सतबीर — दिल्ली कभी आई हो ?

प्रिया — कभी नहीं आई।

सतबीर — ठीक है अब तुम काल करना।

प्रित्रा — ओ—के गुड डे।

प्रिया और उसकी सहेलियाँ एक अक्षर से शब्द बनाना खेल रहे हैं।

तप्ति — का से बताओ कण्ठा — कंचन — स से बताओ शब्द।

प्रिया — फटाक से बोलती है सतबीर। इस पर कंचन बोलती है रॉंग नंबर दिल पर चढ़ गया है।

पाँच दिन बाद प्रिया ना चाहते हुए भी सतबीर का नंबर डायल करती है। हैलो कौन बोल रहा है'

सुनीता — पहले आप बताये कि आप कौन ?

प्रिया — मैं प्रिया शाहजहाँपुर से बोल रही हूँ।

सुनीता — हम किसी शाहजहाँपुर वाली प्रिया को नहीं जानते।

सतबीर — ऐ सुनीता की बच्ची फोन मुझे दे। मेरा फोन है।

सुनीता — अच्छा महिलाओ से दोस्ती! मुझे मम्मी—पापा को बताना पड़ेगा।

सतबीर — जा बता दे पर पहले फोन मुझे दे कहता है और तुरंत सुनीता के हाथ से फोन छीन लेता है।

प्रिया — कैसे हैं सतबीर जी! आपकी बहन तो बहुत शरारती है।

सतबीर — शरारती नहीं वो हमेशा मेरे साथ मजाक करती है।

प्रिया — समय नहीं कट रहा था तो सोचा आपसे बात कर लूँ। आपने कहाँ तक पढ़ाई की है'

सतबीर — मैंने बी.ए. तक पढ़ाई की है। उसके बाद ट्रेवल एजेंसी खोल ली।

प्रिया — आपकी हाबीज क्या है

सतबीर — मुझे किताबें पढ़ने का शौक है, पुराने गाने सुनता हूँ और बाथरूम में नहाते वक्त गुनगुनाता हूँ।

प्रिया — क्या बात है! तो फिर हो जाये एक गीत आपकी आवाज में।

सतबीर — ठीक है आपकी फरमाइश पर सुनाता हूँ, शोर पिकचर का ये गाना मेरे दिल में बसा हुआ है। “एक प्यार का नगमा है मौजों की रवानी है जिन्दगी और कुछ भी नहीं तैरी मेरी कहानी है”।

प्रिया — बहुत खुब आपकी आवाज बहुत सुरीली है।

सतबीर — आप अपने बारे में बताये ना!

प्रिया — मैंने बी.एस.सी किया है और घर पर ही कुछ बच्चे पढ़ने आते हैं।

सतबीर — आपकी हाबीज क्या है

प्रिया — समाज सेवा, गाडनिंग और गाने सुनना।

सतबीर — हमारी पहली मुलाकात कब होगी ?

प्रिया — जब किस्मत चाहेगी।

सतबीर — किस्मत को तो हम बनाते हैं।

प्रिया — जब मिलना होगा तो कोई न कोई बहाना बन ही जायेगा।

सतबीर — अच्छा अब मैं रखता हूँ। गुड नाइट।

प्रिया — गुड नाइट सतबीर जी!

प्रिया को अब सतबीर की आदत सी हो गई थी। जब कभी सतबीर का फोन नहीं आता तो प्रिया उदस हो जाती थी। आज सतबीर का जन्मदिन है। प्रिया ने सतबीर को रात के 12 बजे ही विश किया।

प्रिया — जन्मदिन मुबारक हो सतबीर जी।

सतबीर – शुक्रिया प्रिया। तुम पहली हो जिसने बारह बजे मुझे विश किया।

प्रिया – आज का क्या प्रोग्राम है’

सतबीर – आज तो कार लेकर निकल जाऊँगा और सारा दिन कार चलाऊँगा।

प्रिया – आज के दिन तो छुट्टी कर लेते।

सतबीर – काम ही पूजा है।

‘प्रिया – थैंक गाड तुम्हारी आवाज तो सुनने को मिली। क्या कर रहे हो’

सतबीर – तुम्हें याद करके मच्छर मार रहा था।



प्रिया – झुठे कहीं के! इतनी रात को मच्छर मार रहे थे जैसे की मच्छरो को रात में नींद नहीं आती।

सतबीर – मैं सो रहा था। सुनो परसो मैं एक ग्राहक के साथ आगरा आ रहा हूँ। ग्राहक ताजमहल देखना चाहता है। सवेरे दस बजे दिल्ली से निकलेंगे। प्रिया क्या तुम आगरा आ सकती हो’

प्रिया – मुझे मम्मी-पापा से अनुमति लेनी होगी। ठीक है मैं अनुमति लेकर आ जाऊँगी। सतबीर – ठीक चार बजे ताजमहल के सामने

सिर पर पीली टोपी लगा कर जिस पर “बॉस” अंग्रेजी में लिखा होगा, तुम्हारा इंतजार करता खड़ा रहूँगा।

प्रिया — मेरी पहचान काले रंग की साड़ी होगी।

सतबीर — तीन साल से तुम्हारे चेहरे की बस कल्पना करता रहा, दो दिन बाद देखने को हसीन चेहरा मिलेगा।

प्रिया — बहुत ज्यादा मत तारीफ करो।

सतबीर — तो फिर तय रहा! हाँ हम एक दूसरे की परीक्षा लेंगे और अपने मोबाइल का उपयोग नहीं करेंगे।

प्रिया — मेरे दिल की धड़कन बढ़ जायेगी अगर तुम नहीं दिखाई दोगे।

सतबीर — ऐसा कैसे हो सकता है, हम दिल की धड़कन बढ़ने नहीं देंगे, क्योंकि तुम्हारा दिल हमारे पास है।

प्रिया — अभी एक दूसरे को देखा नहीं और दिल तुम्हारा हो गया।

सतबीर — जिस दिन तुमने रॉग नंबर डायल किया उसी दिन मेरा दिल तुम्हारा हो गया।

मम्मी — प्रिया बिटिया जरा इधर आना।

प्रिया — आई मम्मी। सतबीर से कहती है फिर बात करेंगे और फोन बंद करके मम्मी के पास चली जाती है! शुक्रवार का दिन था! प्रिया अपने मम्मी-पापा से अनुमति लेकर आगरा पहुँच गयी! अपने मन की उत्सुकता और जिज्ञासा को शांत नहीं कर पा रही थी! कल्पना की उड़ान में जो चेहरा सतबीर का उसे दिखाई देता वो डर जाती! बड़ी-बड़ी दाढ़ी, मूँछ और भारी शरीर की कल्पना करके उसके रोंगटे खड़े हो जाते! शाम चार बजे ठीक वो ताजमहल के सामने खड़ी थी! उसकी नजरे सतबीर को ढूँढ़ने लगी, भीड़ काफी थी! कुछ जगह पर उसने एक लडके को देखा! उसकी ओर आगे बढ़ी तो पहचान वाली पीली टोपी सिर पर नहीं थी, पीछे हट गयी! कुछ देर बाद एक स्मार्ट हैडसम युवक उसकी ओर बड़े जा रहा था! प्रिया ने देखा कि

उसने पीली टोपी पहन रखी है जिस पर “बॉस” लिखा है! युवक नजदीक आ कर खड़ा हो गा और कहने लगा!

“ये रांग नंबर प्रिया”! इतना सुनते ही प्रिया की खुशी का ठिकाना ना रहा और वो सतबीर के गले लगकर रोने लगी!

सतबीर – पगली रो क्यों रही हो! आज तो हमारे मिलन का दिन है। तीन साल बाद हमने एक दूसरे को देखा है।

हँसी-हँसी कह कर उसके पेट में गुरगुदी करने लगा!

प्रिया – बस बस बाबा! ज्यादा गुदगुदी मत करो वरना पेट दर्द हो जायेगा।

सतबीर – मैंने ग्राहक को ताजमहल दिखा कर होटल में ड्रॉप किया है। कार है और तुम साथ हो!

प्रिया – ताजमहल देख लते हैं फिर मुझे होटल में खाना खिलाकर बस स्टैंड छोड़ देना। रात दस बजे तक घर पहुँचना है।

सतबीर – इतनी जल्दी भी क्या है’

प्रिया – मैंने मम्मी-पापा को दस बजे तक घर पहुँच जाऊँगी कहा है।

सतबीर – तीन साल बाद मिलना और फिर तुरंत बिछड़ना!

प्रिया – अपने मम्मी पापा से बात करके सीधे बारात लेकर आना।

सतबीर – ठीक है जल्दी ही आऊँगा।

सतबीर ताजमहल देख कर होटल में खाना खिलाकर प्रिया को बस स्टैंड ड्रॉप कर देता है। साढ़े नौ बजे प्रिया घर पहुँच गयी! एक माह बाद सतबीर और उसके माँ बाप शाहजहाँपहुर प्रिया के घर आये और 21 फरवरी की शादी तय कर दी! शादी धुमधाम से हुई और प्रिया अपने ससुराल दिल्ली आ गयी! शादी के एक साल बाद सतबीर और प्रिया को बेटा हुआ तो घर में चारो तरफ जश्न ही जश्न था! 3 माह बाद एक रात दिल्ली से अमृतसर टेक्सी कार से एक ग्राहक को ले

जाते वक्त जबरदस्त सडक दुर्घटना में सतबीर की मौत हो गयी! घर में जैसे मातम छा गया! सास और ननद प्रिया को ताने मारने लगे। बहु के मनहुस कदम पड़े और इसने हमारे बेटे को रवा किया! प्रिया के मम्मी पापा उसे अपने साथ ले जाने के लिये दबाव बनाने लगे। उन्होंने कहा कि वो बच्चे को पाल लेंगे और प्रिया की दूसरी शादी करवा देंगे। प्रिया ने कहा — सतबीर का स्वरूप तो मैंने बेटे में पा लिया है, मुझे हर पल बेटे में सतबीर दिखाई देता है। एक सतबीर के रहते मैं दूसरा विवाह नहीं कर सकती। इस जन्म में मैं केवल सतबीर की हूँ। हमारी दोनों आत्माओं का मिलन करीब साढ़े चार साल पहले हो गया था जिस दिन मेरे फोन से सतबीर को रांग नंबर लगा था।



प्रिया ने ससुराल का साथ देने का प्रण किया और स्कूल में साइंस टीचर बन गयी। अच्छी तनस्वाह मिलती थी! धीरे-धीरे सास और ननद भी प्रिया की मेहनत के कायल हो गये। प्रिया अपने स्वर्गवासी प्रियतम सतबीर की यादों को मन में संजोये आज भी बेटे की आँखों में सतबीर को देखती है।

—000—

जीवन का संघर्ष

जीवन का संघर्ष



अतुल गुप्ता सैंतीस वर्ष का था। पिछले साल पिताजी की मृत्यु ब्रेन हैमरेज से हुई थी। अतुल अपने आप को पिता के मौत का दोषी मानता था। एक शाम अतुल ने पिताजी से पाँच हजार रुपये माँगे तो पिताजी ने कहा – जाओ, अपनी माँ से माँगो। अतुल की अपनी मम्मी से जमती नहीं थी। अतुल को मालूम था कि माँगने पर माँ रुपये नहीं देगी सो वो अपने पिता पर बरस पड़ा। अतुल कहने लगा – पापा आपने जिन्दगी भर मम्मी की गुलामी की है। आपका होना या ना होना एक बराबर है। पिता का ब्लडप्रेसर हाई हो गया और वो अजीब सी शारीरिक हरकत करने लगे। पिता जी को पैरालाइसिस हो गया था दाँये तरफ।

अतुल ने पास पड़ोस के दो लोगों को बुलवाया और पापा के शरीर को उठाने लगा। पापा ने दो बार झटका दे कर अतुल को अपने से दूर किया तो अतुल समझ गया की पापा का ब्लडप्रेसर उसके बोलने से बढ़ा है। बड़ी मुश्किल से एम्बुलेंस में बिठा कर अस्पताल ले आये।

अस्पताल ने **AIIMS** लखनऊ रेफर किया। वहाँ डाक्टरों ने ब्रेन हैमरेज हुआ है कहा। अतुल के पापा बेहोश थे और उन्हें आई सी यू में रखा गया। अतुल की माँ मनोरमा तथा बहु श्यामा भी साथ थी। मनोरमा की बेटे से नहीं जमती थी सो उन्होंने बहु श्यामा को अपने प्रभाव में कर रखा था। दूसरे दिन डाक्टरों ने मनोरमा से कहा— ब्रेन हैमरेज है बेहोशी में है और शायद ही होश आये। बेहोशी में कृत्रिम साँस आक्सीजन सिलेंडर से कब तक दोगे। बचने की कोई उम्मीद नहीं है। मनोरमा ने अतुल से कहा — चलो पापा को डीस्चार्ज करवा लो घर चलते हैं, तुम क्यों व्यर्थ रुपया बर्बाद कर रहे हो। अतुल ने कहा — मैं पापा की आखिरी साँस तक उम्मीद रखूँगा और इलाज करवाऊँगा!



अतुल के चाचा हैदराबाद से अपने बड़े भाई को देखने आये तो पचास हजार रुपये अतुल को इलाज हेतु दे गये। अतुल की सास लाजवंती भी अपने समधी को देखने आयी तो दामाद को एक लाख रुपये इलाज के लिये दे गयी। **AIIMS** के पास में पूरा परिवार गेस्ट हाउस में ठहरा था। दिन में बारी बारी से सब आई सी यू कक्ष के बाहर बैठते। मनोरमा रोज अतुल से कहती — क्यों रुपया बर्बाद कर

रहे हो पर अतुल का अगाध प्रेम और स्नेह पिता से था सो वो मना करता रहा। अतुल अपने आप को पिता की इस हालात के लिये दोषी मान रहा था। चालिसवे दिन पिता स्वर्गवासी हो गये। बड़ी गाड़ी में शरीर को लेकर घर आ गये।

अतुल अपने पापा के पार्थिव शरीर को लेकर घर आया तो मकान मालिक ने अतुल से कहा — अपने पापा के मृत शरीर को तुम घर के अंदर लेकर नहीं जा सकते इनका शरीर बरामदे में रखो और यही से दाह संस्कार के लिये ले जाना। अतुल मन ही मन रोता रहा और पापा के मृत शरीर को बरामदे में रखकर करीब ही बैठकर रोने लगा।

पापा के दाह संस्कार के बाद अतुल ने तय कर किया वो इस शहर में नहीं रहेगा जहाँ मृत शरीर के लिये भी लोगों के मन में भावनाएँ इतनी विचित्र हैं।

अतुल धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलता था सो उसे दूसरे शहर में काल सेन्टर में नौकरी मिल गयी। अतुल का आनलाईन इण्टरव्यू में चयन हुआ था तथा नियुक्ति पत्र भी ई मेल से आया था।

काल सेन्टर वालों ने मुफ्त आवास प्रदान किया। काल सेन्टर ज्वाइन करने के बाद अतुल को काल सेन्टर मालिक विनय का स्वभाव बड़ा विचित्र लगा। विनय सभी कर्मचारियों से सख्त मिजाज रखता था और घर पर चाहे कोई बीमार हो या कोई पारिवारिक आयोजन कभी छुट्टी नहीं देता।

अतुल रोज साइकल पर आफिस आता था और दोपहर लंच बाक्स साथ में लाता था। एक दिन अतुल के लंच के डिब्बे से तेल रीस कर बाहर गिरा और उससे समाचार पत्र गंदा हो गया। विनय ने देखा तो अतुल को गुस्सा कर दिया। अतुल ने सॉरी सर कहा और शाम घर लौटने पर पत्नी को काफी डाँटा। अतुल ने पत्नी से कहा — तुम अगर सूखी सब्जी नहीं रख सकती तो कल से लंच बाक्स देना बंद कर दो। अतुल जानबूझकर दो तीन दिन लंच बाक्स नहीं

ले कर गया तो पत्नी श्यामा का रो रोकर बुरा हाल हुआ। अतुल ने श्यामा को समझाया और अगले दिन से फिर लंच ले जाने लगा। छः माह बीत गये और उसके बाद एकदिन पत्नी को 'डाइरिया' होने पर अस्पताल लेकर आया। अतुल ने दो तीन बार सूचना देने काल सेंटर के मलिक विनय अग्रवाल को फोन किया तो फोन रिसिव नहीं हुआ। पत्नी को डॉक्टर ग्लूकोज चढ़ा रहे थे तो अतुल ने डॉक्टरों से अनुमति लेकर विनय अग्रवाल को सूचना देने पहुँचा। विनय किसी ग्राहक से बात करने में व्यस्त था। दस मिनट बाद जब विनय खाली हुआ तो अतुल ने विनय को बताया कि पत्नी को शरीर में पानी की कमी के चलते अस्पताल में ग्लूकोज, डॉक्टर चढ़ा रहे हैं। कुल तीन बोतल चढ़ेगी। इसमें लगभग तीन घंटा लग जायेगा।

विनय ने कहा — अतुल जी तीन घंटे क्लास ले लीजिये और फिर पत्नी के पास चले जाइये। ये सुनकर अतुल को गुस्सा आ गया और उसने विनय से कहा सर मैं आपको सूचना देने आया था अनुमति लेने नहीं। अतुल ने गुस्से से कहा जहाँ कर्मचारियों के पारिवारिक सदस्यों के हित की रक्षा नहीं होती वहाँ मैं काम नहीं करूँगा। अतुल ने नौकरी से इस्तीफा दिया और पत्नी की अस्पताल से शाम को ठीक होने पर घर ले गया। अतुल ने प्रण किया कि एक दिन वो विनय का कालसेंटर खुद खरीदेगा। उसके लिये जी तोड़ मेहनत करेगा। अतुल का दूसरे काल सेंटरों में बड़ा नाम था सो अगले दिन सनशाइन काल सेंटर के प्रबंधक ने फोन कर के उसे अपने ऑफिस बुलाया। अतुल को बीस हजार तनखाह तथा प्रोत्साहन राशि अलग से मिलती थी। सनशाइन काल सेंटर के मालिक बालकृष्ण ने प्रबंधक के कहने पर पच्चीस हजार तनखाह और नये विद्यार्थियों की एडमीशन दिलाने पर प्रोत्साहन राशि अलग से देने कहा। अतुल ने मालिक से परिवार के सदस्यों की हितों की रक्षा हेतु लीव छुट्टी की बात कही तो मालिक बालकृष्ण सहर्ष मान गये। अतुल ने सनशाइन ज्वाइन किया तो विनय के भेजे चार लड़कों ने उसे घर पर आकर धमकी दी। अतुल ने कोई परवाह नहीं की और काम पर जाने लगा।

बालकृष्ण अपने कर्मचारियों को मित्र मानता था और अतुल से खास लगाव हो गया था। इस बीच अतुल को पहली मंजिल पर आकर लड़कों को ट्रेनिंग देना तकलीफ दे रहा था। उसके घुटनों में खड़ खड़ की आवाज होती और पाँव तथा घुटनों में बहुत तेज दर्द होता था। दर्द असहनीय होने लगा तो आर्थोपेडिक्स डॉक्टर से अतुल मिला। डॉक्टर ने एक बड़ा इन्जेक्शन लेकर अतुल के घुटनों से कुछ द्रव्य निकाला। लैब परीक्षण में घुटनों में ग्रीसिंग खत्म होने की रिपोर्ट आयी।

डॉक्टर केदार ने अतुल से सीढ़िया चढ़ने हेतु मना किया और बोला इसका कोई आपरेशन नहीं हो सकता। अतुल को ज्यादा देर खड़े रहने से भी मना किया गया। अतुल ने फोन पर मालिक बालकृष्ण से बात की और आगे क्लास लेने में असमर्थता जताई। बालकृष्ण ने स्वास्थ्य कारणों से उसका इस्तीफा मंजूर कर उसे किये गये कार्य के लिये भुगतान कर दिया।



अतुल अपनी बीमारी से काफी परेशान था सो एक दिन अपने दोस्त बंटी के मेडिकल स्टोर पहुँचा और उसे परेशानी बताई। बंटी ने प्राकृतिक फलों के रस से तैयार किया गया एक कैप्सूल दिखाया और

कहा सुबह शाम निरन्तर एक कैप्सूल लेते रहना। भगवान चाहेगा तो पन्द्रह दिन में सीढ़ियां चढ़ने लगोगे एवं फुर्ती से चलोगे। अतुल अपने दोस्त के कहे अनुसार कैप्सूल खाने लगा और दस दिन में ही घुटनों से निकलने वाली खड़ खड़ की आवाज बंद हो गयी और धीरे धीरे सीढ़ियां भी चढ़ने लगा। अतुल हैरान था कि डाक्टर केदार ने इसका कोई इलाज नहीं हो सकता कहा और मात्र पन्द्रह दिन से कम में दोस्त बंटी ने उसे भला चंगा कर दिया। घुटनों के ठीक होते ही अतुल ने ग्राउण्ड फ्लोर पर 'रेडियेन्ट कॉलसेन्टर'ट्रेनिंग की स्थापना की। अतुल के धाराप्रवाह अँग्रेजी से प्रभावित कई विद्यार्थी दूसरे कालसेन्टर छोड़ कर अतुल के रेडियेन्ट काल सेन्टर में प्रवेश लेने लगे।

बाहर से जब कम्पनियां प्लेसमेन्ट शिविर लगाती तो अतुल के सेन्टर का 100% प्लेसमेन्ट रिकार्ड होता। रेडियेन्ट का नाम हर जगह गूँजने लगा तो बाहर के शहर से अतुल के पास आकर फ्रेंचाइजी लेने के लिये दबाव डालने लगे। श्यामा ने अतुल को फ्रेंचाइजी देने के लिये मनाया। तीन वर्ष में देखते देखते पचास सेन्टर हो गये। एक दिन सुबह विनय रेडियेन्ट काल सेन्टर आकर अतुल से मिला। उसने अतुल से कहा कि मैं अपना काल सेन्टर तुम्हे बेचना चाहता हूँ। पत्नी श्यामा ने अतुल को मना किया परन्तु अतुल ने कहा कि तुम्हारी बीमारी के समय मैंने संकल्प किया था कि विनय का कालसेन्टर मैं एक दिन खरीदूँगा, आज बरसो बाद मेरी आत्मा खुश हुई। अतुल ने कहा भले ही मुझे उसमें फायदा हो या घाटा पर मैं इसे जरूर खरीदूँगा। अतुल ने विनय का काल सेन्टर खरीद लिया। अतुल के मन की मुराद आज पूरी हुई उसके लिये उसने भगवान को धन्यवाद दिया। अतुल ने सोचा आदमी अगर दृढ़ संकल्पित हो तो असंभव को भी संभव कर सकता है। अतुल के जीवन का संघर्ष इतना कड़वा होने पर भी उसका अंत उसकी इच्छा पूरी होने के साथ ही सुखद हुआ। अगर हम सभी अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्पित हो तो जिन्दगी में कुछ भी असंभव नहीं पर संभव है।

घर की लक्ष्मी बेटी

घर की लक्ष्मी बेटी



गौरीशंकर जी का विवाह शोभा के साथ बड़ी धूमधाम से हुआ था। गौरीशंकर स्टेट बैंक में रिलेशनशिप ऑफिसर थे। ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा देना ही स्टेट बैंक का लक्ष्य था। शादी के बाद हनीमुन मनाने शिमला गये और वहां से चंडीगढ़ होते हुए वापस कानपुर पहुंचे। गौरीशंकर जी की बहुत बड़ी मित्र मण्डली थी, जिसके चलते रोज अपनी पत्नी शोभा के साथ आमंत्रण पर खाना खाने मित्र के घर पहुंचते। एक दिन वो अपने मित्र सचिन के घर पहुंचते तो सचिन किसी जरूरी काम से बाहर गया हुआ था। सचिन की पत्नी नेहा ने उनका स्वागत किया। नेहा की पांच वर्षीय बेटी कुसुम ने पूछा, अंकल आप आंटी को लेकर क्यों आये हो ? नेहा ने बेटी को डांटा तो गौरीशंकर ने कहा आपके पापा ने हमें बुलाया है। कुसूम ने कहा पापा घर पर नहीं है। आप बाद में आना। इसपर सभी लोग बच्ची की मासुमियत पर हंसने लगे।

शोभा गर्भवती हुई तो सास ससुर रोज बोलने लगे—बहु को बेटा ही होगा। घर का वारिस जल्द ही घर में आयेगा। डॉक्टर ने डिलीवरी की डेट दस अगस्त दी। शोभा सास ससुर और ननद के द्वारा कहा गया कि घर में बेटा ही होगा, बात से बहुत चिन्तित थी। मन में खटका था अगर बेटी हुई तो सास ससुर को क्या जवाब देगी। नौ अगस्त को शोभा को नर्सिंग होम में भरती कराया गया। गौरीशंकर ने बैंक से छुट्टी ले ली और अपनी पत्नी के पंलग के पास ही कुर्सी डाल कर बैठ गया था। वो पत्नी को हिम्मत दे रहा था। दस अगस्त को प्रातः दस बजे शोभा को लेबर पेन प्रारंभ हुआ तो शोभा को ऑपरेशन थियेटर ले जाया गया। सास ससुर और ननद भी गौरीशंकर के साथ नर्सिंग होम में मौजूद थे। ग्यारह बज कर पांच मिनट पर ऑपरेशन थियेटर का दरवाजा खुला और नर्स ने सभी को बधाई दी कि बेटी पैदा हुई है।



सास—ससुर और ननद बेटी का चेहरा देखे बिना कुड़कुड़ाते हुए घर वापस लौट गये। गौरीशंकर ने पत्नी शोभा को बधाई दी और कहा हमारे घर लक्ष्मी आयी है। शोभा ने आंसू पोंछते हुए सास ससुर और

ननद की बेटी के जन्म पर नाराजगी का जिक्र किया तो गौरीशंकर ने कहा कोई बात नहीं अगले साल लक्ष्मी का भाई होगा।

घर में सास ससुर और ननद बेटी लक्ष्मी से सदैव दूर रहते। लक्ष्मी छः माह की हुई तो फिर सास पोते की जिद करने लगी। तीन माह बाद शोभा ने सास को गर्भवती होना बताया। सास और ननद शोभा की बहुत देखरेख करने लगे। उसके खाने-पीने पर ज्यादा ध्यान देने लगे। नौ माह में फिर एक बार लक्ष्मी के भाई की आशा में शोभा को नर्सिंग होम भरती कराना पड़ा। गौरीशंकर जी फिर छुट्टी लेकर शोभा के पास बैठे रहे। शोभा को फिर लेबर पेन हुआ और उसे डिलीवरी हेतु ऑपरेशन थियेटर ले जाया गया। एक घंटे बाद नर्स ने सूचना दी कि बेटी हुई है। सास ससुर को तो काटो सुन नहीं। बड़बड़ाते हुए नर्सिंग होम से बाहर निकले की कौन सी गलत घड़ी में बहु का हमारे घर आगमन हुआ था।

गौरीशंकर जी भी उदास हुए पर उन्होंने उदासी पत्नी पर जाहिर नहीं होने दी। शोभा का रो रो कर बुरा हाल था। और गौरीशंकर जी शोभा को समझा रहे थे और बेटी को पलने (पालने) में खिला भी रहे थे।



गौरीशंकर जी ने शोभा से कहा धार्मिक ग्रंथों में इस बात का उल्लेख है कि घर की बेटी, बहन और मां माता लक्ष्मी का रूप होते हैं इसलिए इन सभी को हमेशा प्रसन्न रखना चाहिए। कभी भी गुस्सा नहीं करना चाहिए। शोभा ने कहा कि आप अपने माता-पिता और बहन को ये बात बताये।

दूसरी बेटी का नाम गौरी रखा गया। और घर की अंतर्कलह के बीच समय बीतने लगा। छः माह बाद सास फिर शोभा से कहने लगी बहु जो हुआ सो हुआ चलो फिर से गर्भ धारण की तैयारी करो। तीसरे माह शोभा फिर गर्भवती हो गयी। शोभा घर का कामकाज लक्ष्मी और गौरी का पालन पोषण और गर्भ ठहरने पर भी उसी तरह कामकाज करना गौरीशंकर जी को परेशान कर देता। गौरीशंकर जी की बहन और मां बिल्कुल काम नहीं करते थे।

डिलीवरी का समय आया तो ठीक डिलीवरी से पहले नर्सिंग होम की नर्स, शोभा की सास पर चिल्ला पड़ी, नर्स बोलने लगी आप कैसी दादी हो जो बच्चे के जनम से पहले मुझसे आकर कह रही हो कि अगर बेटी पैदा हुए तो मार देना। नर्स ने कहा आप एक करोड़ भी दोगी तो भी मैं ये नहीं करूंगी। चौरासी लाख योनियों में जनम लेने के पश्चात अब इस जीव को प्रभू की कृपा से मानव रूपी जन्म मिल रहा है जो कि मूल्यवान है। नर्स ने कहा मैं कोन होती हूं भगवन की रचना को मिटाने वाली, आप मानवता के नाम पर कलंक हो।

गौरीशंकर और शोभा ये सुनकर स्तब्ध रह गये। गौरीशंकर जी को अपनी मां से ये आशा नहीं थी। उनकी मां इस हद तक नीचे गिर सकती है। उन्होंने सोचा भी नहीं था। गौरीशंकर जी की मां ने ये सब सुना तो तुरन्त भाग खड़ी हुई।

डिलीवरी हुई और गौरीशंकर जी फिर निराश हुए कि बेटी हुई है पर बेटी को चूम कर उसे पालने में सुला दिया।

घर पर तो जैसे मातम का माहौल था पर गौरीशंकर जी और शोभा ने इस ओर ध्यान नहीं दिया और तय किया कि इन तीनों बेटियों को

खूब पढ़ाएंगे लिखाएंगे। गौरीशंकर जी ने परिवार नियोजन केन्द्र में नसबंदी करवा ली।

तीसरी बेटी का नाम सीता रखा गया। तीनों बेटियों की पढ़ाई सुचारु रूप से होने लगी। तीनों बेटियां पढ़ाई लिखाई में बहुत तेज थीं। हर परीक्षा में एक दूसरे से ज्यादा अंक पाने की होड़ रहती। तीनों खेल कूद में भी आगे रहती और घर अनगिनत शील्ड और मेडल का ढेर लग गया।

बड़ी बेटी लक्ष्मी ने मेडिकल प्रवेश परीक्षा में टॉप किया तो सभी समाचार पत्र और चैनल के पत्रकार घर पर लक्ष्मी का इन्टरव्यू लेने पहुंचे तो शोभा का खुशी का ठिकाना नहीं था। सास शारदा अपनी पोती लक्ष्मी के साथ फोटो खिंचवाने लगी और बोलने लगी मैंने तो जन्म के समय इसका चेहरा देखकर समझ लिया था कि हमारी बेटिया खानदान का नाम रोशन करेगी। गौरीशंकर जी और शोभा माँ के इस बदले हुए स्वभाव पर विस्मित थे।

लक्ष्मी ने एम.बी.बी.एस. में प्रवेश कर एक प्रतिष्ठित कॉलेज में प्रवेश लिया। कॉलेज प्रबंधक मेडिकल प्रवेश परीक्षा टॉपर को निःशुल्क शिक्षा दे रहा था।

बी.एस.सी. करने के बाद गौरी ने कोचिंग की और भाभा ऑटोमिक रिसर्च सेंटर में वैज्ञानिक बनने हेतु प्रवेश परीक्षा दी और उसका चयन हो गया। रिसर्च सेंटर ने एक वर्ष ट्रेनिंग देना प्रारंभ किया।

सीता ने एम.सी.ए. किया और अमेरिका की एक प्रतिष्ठित कंपनी ने उसे आकर्षक पैकेज पर स्पॉन्सर कर अमेरिका बुला लिया।

गौरी एक सफल वैज्ञानिक बन गयी और अपने इन्टेलिजेंस के दम पर रिसर्च सेंटर में सब की चहेती बन गयी। भारत ने सेटेलाइट अंतरिक्ष में भेजने की तारीख निश्चित की तो टीम में गौरी का भी नाम था।

तय तारीख पर सेटेलाइट लॉच से पहले सभी चैनल टीम सदस्यों का परिचय लाइव कर रहे थे। गौरीशंकर जी के घर में पूरा परिवार और लगभग पड़ोस के सभी लोग घर पर मौजूद थे। टीम के झुंड में जब भी गौरी के चेहरे पर लाइट फोकस होती तो सास शारदा जोर से चिल्लाती देखो, देखो अपनी गौरी और जोर से तालियाँ बजाती। गौरी ने जब अपना परिचय दिया तो मां बाप गौरीशंकर, शोभा और दादा दादी का नाम कहा। दादी अपना नाम सुनकर आंखों में आंसू भर कर टी.वी. पर अपनी पोती गौरी की बलाएं लेने लगी। इसी समय गौरीशंकर जी ने मां से कहा मां "ये क्या कर रही हो ये बेटा" नहीं बेटी है। इस पर शारदा ने आंसू पोछते हुए कहा गलती हमेशा छोटो से होती है, ऐसी बात नहीं गलती मुझसे भी हुई है। गौरी लक्ष्मी और सीता तीनों हमारे बेटे हैं। इन तीनों बेटियों ने दिखा दिया कि वो बेटे से बड़कर हैं। मां बाप के अच्छे संस्कार हमेशा बेटियों को भी बेटे से ज्यादा अव्वल बनाते हैं मैंने देख लिया कह कर शारदा हंसने लगी। पास पड़ोस के लोग जो टी.वी. देख रहे थे। ये सब सुनकर दादी शारदा के लिये तालियाँ बजाने लगे।

---000---

प्यार पागलपन है

प्यार पागलपन है



सत्यम शर्मा का परिवार हैदराबाद में रहता था। बड़ा बेटा रमेश ओस्मानिया युनपसिर्सटी में बी.कॉम. तृतीय वर्ष में पढ़ाई कर रहा था। छोटा बेटा उमेश 3 साल छोटा था और इन्टर द्वितीय वर्ष कर रहा था। मां मनोरमा स्नातक तक पढ़ी लिखी थी। पिता हाई स्कूल पास थे शायद कम पढ़ाई के कारण से मां से दब कर रहते, पर पिता जी धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलते थे।

माता-पिता ने कमल कौवेन्ट स्कूल खोल रखा था और पहले वर्ष ही काफी विद्यार्थियों के अभिभावकों ने अपने बच्चों का एडमिशन कराया था।

घर से स्कूल दो किलोमीटर दूरी पर था, इसलिए स्कूल के करीब ही किराये का घर लिया गया।

सत्यम शर्मा का परिवार शाम 7:00 बजे अपने नये घर में पहुंचे जो कि ग्राउण्ड फ्लोर पर था। स्कूल के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों की

बदोलत रात 10:00 बजे तक घर में सामान व्यवस्थित रूप से रख दिया गया।

प्रातः 06:00 बजे रमेशं जो कि उस समय 23 वर्ष का था, उठकर घर के बरामदे में आया। रमेश की नजर सड़क के उस पार स्थित घर पर पड़ी तो जैसे आंखों पर विश्वास नहीं आया। घर के पास बने कुएं से एक नव यौवना सुंदरी पानी निकाल रही थी। ऐसा लगता था कि भगवान फुरसत में उसे सांचे में डालकर तराशा था।

रमेश आंखे मल-मल कर बार-बार उसे देख रहा था। ऐसा करते उसने रमेश को देख लिया और जोर से हसने लगी। माँ ने जोर से आवाज लगाई, रमेश चाय नहीं पीनी जल्दी अंदर आओ। माँ की अवाज को सुनकर रमेश घर के अंदर भागा चाय के लिये। रमेश सोचा ओज तक मैंने किसी लड़की के लिये ऐसी अनुभूति दिल में नहीं की थी। लड़की का घर पिछले हिस्से में था और सामने दुकान थी। इंजिनियरींग दुकान थी तथा लोहे से संबंधित काम होता था।

रमेश दिन भर घर के बरामदे में आता पर लड़की का कहीं अता-पता नहीं था। रमेश का बार-बार कुँए की तरफ देखना हास्यापद था।

शाम को रमेश बाजार जाकर दो लोहे के टुकड़े खरीद कर सामने वाली दुकान पर टांका लगाने पहुँच गया। दुकान का मालिक महेश ने टांका लगा दिया और 20 रुपये मांगे। रमेश ने बीस रुपये दिये पर उसकी निगाहे उस सुंदरी को दूँढ़ रही थी। महेश ने पूछा आप पहली बार दुकान आये हो रमेश ने अपने परिवार का पूरा विवरण सुना दिया और कमल कावेन्ट स्कूल उसके माता-पिता द्वारा संचालित है बताया।

महेश ने बताया कि दस साल पहले ये दुकान मैंने खोली। मेरा छोटा भाई सतीश मेरी मदद करता है। मेरी दो बहने हैं, बड़ी सौम्या स्नातक तृतीय वर्ष में है और छोटी बहन सौंदर्य 21 वर्ष की है और बी. प्रथम वर्ष में महिला डीग्री कॉलेज में पढ़ रही है।

रमेश ने लोहे का टुकड़ा लिया और धन्यवाद कहकर चल दिया। घर में घुसते हुए माँ ने देख लिया और पूछ लिया। ये लोहे का टुकड़ा किसलिए लाये हो? रमेश हिचकिचाते हुए उत्तर दिया कि स्कूटर के लिये है, माँ चुप हो गयी।

रमेश ने रात 09:00 बजे देखा कि सौंदर्य और उसकी बड़ी बहन कुँए के पास टहल रही है, रमेश भी टहलने लगा और आशा करने लगा कि बड़ी बहन शायद अंदर जाये। आधा घंटा बीत गया और पाँव जवाब देने लगे, उसी समय रमेश ने देखा कि छोटी बहन अंदर चली गयी तो 10 मिनट बाद अपनी किस्मत को कोस्ते हुए मन मसोस कर सोने चला गया। रात आंखों में रमेश की नींद नहीं आ रही थी। किसी तरह रात 02:00 बजे सोया और सवेरे 06:00 बजे उठ गया। फटाक से घर का मेन गेट खोल कर बरामदे में आ गया तो देखा भगवान आज बहुत मेहरबान है और सौंदर्य कुँए से पानी भर रही थी। उस समय वो अकेली थी और रमेश मौका हाथ से गवांन नहीं चाहता था।

रमेश ने अपने दोनों हाथ बार—बार ऊपर उठकर माथे को लगाकर झूककर सौंदर्य का अभिवादन किया। सौंदर्य ने बार—बार रमेश को ऐसा करते देखकर जोर—जोर से हंसी और वो भी उसी तरह दोनों हाथ ऊपर उठाकर माथे को लगाकर झुक कर रमेश का अभिवादन करने लगी। ये देख रमेश नाचने लगा, उसी समय रमेश का छोटा भाई उमेश किसी काम से घर के बाहर आया और बड़े भाई को नाचते देख उसकी आंखें सड़क के दूसरी छोर पर गयीं। कुँए पर पानी भरती सौंदर्य को भी हसंता देख उसने माजरा समझ लिया और बोलने लगा भईयां मैंने भाभी को देख लिया है। बड़ी सुंदर है। रमेश ने छोटे भाई के हाथ में बीस रुपये देकर यह बात माता—पिता से ना बताने को कहा।



रमेश प्रातः 10:00 बजे से पहले महिला डीग्री कॉलेज के पास खड़ा हो गया। पांच मिनट बाद रमेश ने सौंदर्य को दो तीन सहेलियों के साथ आते देखा। रमेश फिर से दोनों हाथ उठाकर सिर झुका कर सौंदर्य का अभिवादन किया तो वो अपनी सहेलियों के साथ रुक गयी। सौंदर्य ने वार्तालाप प्रारम्भ की, ये मेरे पड़ोस में रहते हैं। सहेलियां शायद समझ चुकी थी, इसलिए वो नमस्ते कर आगे निकल गयीं।

रमेश और सौंदर्य अकेले थे, रमेश ने अपना नाम बताया और सौंदर्य ने नाम बताया तथा अपना दिल खोलकर उसके सामने रख दिया। रमेश पंजाबी ब्राम्हण था और सौंदर्य तेलुगु थी। रमेश जानता था कि उसके मां-बाप तानाशाह थे और कभी भी तेलुगु बहु को स्वीकार नहीं करेंगे। सौंदर्य शाम चार बजे कोलेज के गेट पर मिलने को कहकर कॉलेज चली गयीं।

रमेश तुरन्त कॉलेज भागा पर तब तक पहला पीरियड प्रारम्भ हो गया था। मैथ्यु सर ने रमेश को लेट आते देख पूछा, आज तक तुम कभी लेट नहीं आये पर आज ऐसा क्यों? रमेश इससे पहले कुछ कहता कि किसी शरारती लड़के ने कहा, पहला-पहला प्यार है,

पहली-पहली बार है और कक्षा के सभी छात्र हंसने लगे। शरारती छात्र, रोज महिला कॉलेज लड़कियों को छेड़ने जाते थे और आज उसने रमेश को सौंदर्य के साथ देख लिया था।

रमेश ने आखरी पीरियड एकाउन्ट्स का बंक कर महिला कॉलेज पहुच गया। रमेश अपने सपनों की राजकुमारी से मिलने का मौका नहीं खोना चाहता था। 04:00 बजे जैसे ही सौंदर्य कॉलेज से बाहर आई तो रमेश ने पास के होटल में चाय पीने का प्रस्ताव रखा जिसे सहर्ष सौंदर्य ने स्वीकार किया। रमेश ने मोटर साइकिल स्टार्ट की और सौंदर्य को पीछे बिठाकर होटल आनंद पहुंचा। होटल में दोनों रेस्टोरेंट की आखरी सीट पर बैठे।

रमेश ने सौंदर्य से कहा कि वो उसके बिना जी नहीं सकेगा। सौंदर्य ने तेलुगु में पूछा की अम्मा नयना ओप कुँटारा (क्या आपके मां-बाप मान जायेंगे) रमेश ने कहा अगर नहीं माने तो मैं तुम्हे लेकर भाग जाऊँगा और मंदिर में तुमसे शादी कर लूँगा। सौंदर्य ने रमेश को बताया कि उसकी बड़ी बहन सौम्या को महवारी नहीं होती, इसलिए उसका विवाह नहीं हो रहा है। बड़ी बहन के कुँवारी रहते मैं कैसे शादी कर सकती हूँ। दोनों ने सात जन्मों तक साथ निभाने का वादा कर एक-दूसरे से विदा ली।

रमेश और सौंदर्य उसके बाद कभी मंदिर में मिलते कभी राशन दुकान पर और कभी होटल में। एक वर्ष बीत गया और बी. कॉम फर्स्ट डिविजन में रमेश पास हो गया। रमेश ने सौंदर्य को पिक्चर 3 से 6 दिखाई उसके बाद होटल में खाना खिलाया और रात 10:00 बजे करीब मोटरसाइकिल से सौंदर्य को अपने घर के करीब छोड़ा। पिक्चर देखते वक्त एक रोमैंटिक सीन में रमेश अती उत्साहित होकर सौंदर्य को चुम लिया था, जिससे वो नाराज थी। सौंदर्य को मोटरसाइकिल से उतारते वक्त रमेश के मामाजी ने देख लिया। वो प्रथम तल पर रहते थे और ठेकेदारी करते थे। मामाजी ने रमेश की माँ से कहा बहन मेरा भांजा सामने वाली तेलुगू लड़की से ही ब्याह करेगा और खानदान की नाक कटायेगा।

मोहल्ले में रमेश और सौंदर्य के प्यार की खबरे काफी हो रही थी। मनोरमा ने अगली सुबह सौंदर्य को घर बुलाया। रमेश प्रातः 08:00 बजे किसी के घर जाकर कॉमर्स की ट्युशन लेता था। मनोरमा ने उसी समय सौंदर्य से बातचीत की। मनोरमा ने सौंदर्य को साफ-साफ कह दिया कि किसी भी कीमत पर हम तेलगु बहु को नहीं अपनायेंगे।

सौंदर्य दो दिन तक कॉलेज नहीं आई और न ही कुँए पर पानी भरने। रमेश को तो काटों तो खून नहीं। तीसरे दिन रमेश ने सौंदर्य को राशन की दुकान पर घेर लिया। सौंदर्य बात नहीं करना चाहती थी, परंतु रमेश ने जब अपनी कसम दी तो सौंदर्य ने रमेश की माँ मनोरमा द्वारा कहे शब्द दोहरा दिया। सौंदर्य रोने लगी।

रमेश फटाफट अपने घर आया और उसने अपनी माँ को बहुत समझाया और कहा कि आप लोग स्वीकृति नहीं दोगे तो हम भाग कर मंदिर में शादी कर लेंगे।

रमेश के घर में सब खिलाफ थे। चार दिन बाद पिताजी ने कहा कि हम लोग घर शिफ्ट कर रहे हैं। रमेश पिताजी से बहुत डरता था, इसलिए कुछ नहीं बोला। रमेश हमेशा माँ पर हावी रहता। इसलिए माँ हमेशा पिता से रमेश को कहलाती।

अगले दिन ट्रक में सामान भरकर रमेश का परिवार दो किलोमीटर दूर अपने नये किराये के घर पहुंचा। इस बीच रमेश अपने और अपने परिवार वालों के बीच कशमकश महसूस कर रहा था।

मकान की दूरी के कारण रमेश का सौंदर्य से मिलना बहुत कम हो गया। रमेश जब कभी मिलता तो सौंदर्य को रोते हुए पाता। पिता की तानाशाही के चलते रमेश चुप था। रमेश को सौंदर्य से किये सारे वायदे हवाई किले नजर आने लगे।

एक माह बाद सत्यम शर्मा ने रात में घर में सभी से कहा कि कल हम 40 किलोमीटर दूर किसी के घर आमंत्रण पर जा रहे हैं। पिता जी ने सभी को 08:00 बजे तैयार रहने को कहा।

08:00 बजे कार में बैठने के बाद माँ ने बताया कि रमेश के लिये लड़की देखने जा रहे हैं। पिताजी ने कहा कि लड़की देखने के बाद मंगनी की रसम भी होगी। मैं अवाक चुपचप बैठा सुनता रहा।

लड़की उमा चाय लेकर आई और रमेश ने देखा तो एक बारगी उसे उमा की आंखों में सौंदर्य नजर आई। नाश्ता करने के बाद उमा के पापा ने पूछा तो लड़की पसन्द है ना। रमेश के पापा ने हां कहा और रमेश चुप रहा। फिर क्या था सभी एक दूसरे को बधाई देने लगे और रमेश अपने प्यार की कब्र पर कफन पहनाने की तैयारी कर रहा था।

मंगनी की रसम के बाद रमेश का परिवार घर वापस आ गया और अगले ही दिन 21 फरवरी शादी की तारीख निकल आई।

घर मोहल्ले में सत्यम शर्मा ने बेटे की मंगनी की मिठाई बांटी गयी और जानबुझकर सौंदर्य के घर भी मिठाई भेजी गयीं। रमेश साहस करके सौंदर्य के घर पहुंचा तो भाईयो ने सौंदर्य को बुलाने से मना कर दिया। रमेश के बार-बार कसम देने पर सौंदर्य को बुलाया गया।

रमेश ने तुरन्त सौंदर्य का हाथ पकड़ा और कहा चलो भाग चलते हैं और मोटर साइकील स्टार्ट कर दी। सौंदर्य ने मोटरसाइकील की चाबी निकाल ली। सौंदर्य ने कहा प्यार पागलपन है जानती हूं। मैं भी तुम्हे पागलपन के हद तक प्यार करती हूं। सौंदर्य ने रमेश से कहा अब तुम्हारा प्यार उमा है, मैं नहीं। रमेश तुम्हे अब पागलपन की हद तक उमा से प्यार करना होगा। ऐसा मुझे वचन दो। इसके बाद तुम कभी भी मुझसे मिलने की कोशिश नहीं करोगे। सात जनमों तक उमा का साथ निभाने के बाद अगर कोई मनुष्य जन्म तुमने लिया तो मैं तुम्हारी बनना चाहूंगी। सौंदर्य की आंखों से निरन्तर आंसू बह रहे थे और रमेश फफक-फफक कर रो रहा था। रमेश फिर कभी ना मिलने का वादा कर रोते-रोते मोटरसाइकील लेकर घर आ गया।



—00—

बहन का प्रेम

बहन का प्रेम



कामता प्रसाद जी का परिवार बहुत ही छोटा था। “मैं और मेरे दो” के सिद्धांत को दिमाग में रख कर दो लड़कियाँ पैदा होने के बाद परिवार नियोजन कैम्प में नसबंदी करवा ली। पत्नी काव्या पढ़ी लिखी थी, पर कामता प्रसाद हार्डवेयर की बहुत बड़ी दुकान चलाते थे और सभी प्रकार के हार्डवेयर सामान दुकान में उपलब्ध थे। बीस किलोमीटर दूरी तक कस्बे में कोई दुसरी दुकान उपलब्ध नहीं थी। कामता प्रसाद जी दोनों हाथ से नोट बटोर रहे थे। काव्या हिसाब किताब दुकान का रखती और लड़कियों को स्कूल से मिले होमवर्क भी करवाती।

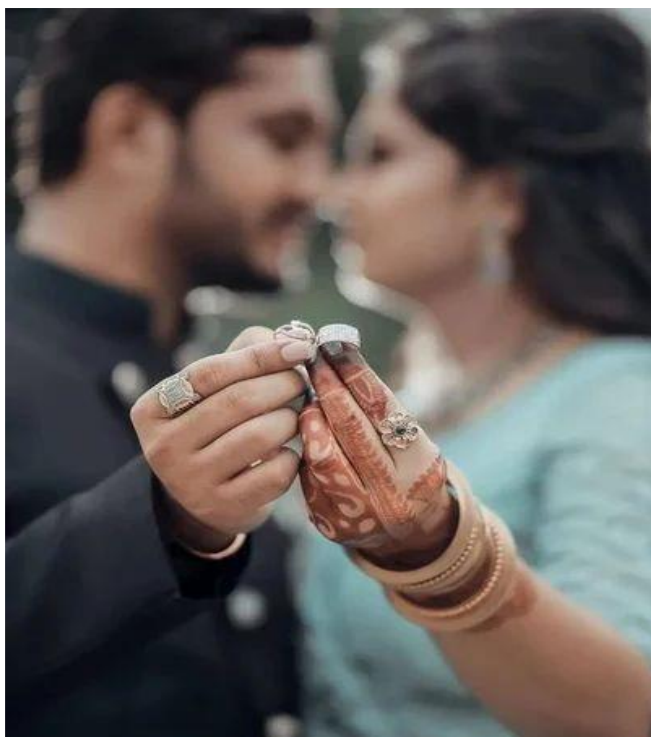
काव्या की बड़ी बेटी निश्चय ही पढ़ाई लिखाई में अव्वल थी। कांता हाईस्कूल में पढ़ रही थी और उसी स्कूल में शांता आठवी कक्षा में पढ़ रही थी। शांता हमेशा शरारते करती और उसका मन पढ़ाई में कम लगता। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ रही थी।

स्कूटी पर सवेरे नौ बजे दोनों स्कूल जाती और शाम चार बजे वापस आती। आज बुधवार का दिन था। स्कूटी पर दोनों स्कूल के लिये निकली। रास्ते में एक खुली जीप में लड़को का हुजुम हुटिंग करते हुए जा रहा था। दोनों लड़कियों को स्कूटी पर जाते देख एक लड़का कहने लगा हे स्वीटी कहा जा रही हो छोटी शांता शरारतीपन से बोली नदी में डुबने जा रहे हैं, तुम भी डुबोगे तो चलो ! लड़का खामोश हो गया। दूसरा लड़का बोलने लगा, बड़ी जालिम निगाहें हैं, कच्चा खा जाओगी क्या ? कांता ने स्कूटी रोक दी, तुरंत जीप भी रुक गयी और शांता जीप के पास आयी और बोलने वाले लड़के को कस कर एक थप्पड़ मारा और जींस पेण्ट में बांधी हुई लेदर बेल्ट निकाल ली। सभी लड़के जीप छोड़कर भागे तो दोनों लड़कियां जोर-जोर से हंसने लगी और कहने लगी जालिम निगाहों को अच्छे से देख तो लो।

कांता और शांता के स्वभाव और एक दूसरे के प्रति प्रेम और स्नेह को देखकर स्कूल में कई लड़कियां ईर्ष्या से जल उठती। कांता अपनी छोटी बहन को मां के साथ मिलकर पढ़ाती। शांता का मन पढ़ाई में नहीं लगता और वो अपनी बड़ी बहन से कहती, यार, यार छोड़ो न ये पढ़ाई वगैरह जिसपर कांता उसको चेहरे पर हल्की चपत लगा देती। रात में सोती तो एक साथ, शांता आधी रात तक सोती नहीं और बड़ी बहन को भी अपने बातों से जगा कर रखती। एक रात सोते समय शांताने कहा, दीदी सलमान खां मेरे से उम्र में तीस साल से ज्यादा बड़ा है पर दिखता बहुत हैण्डसम है। क्या मैं उनसे शादी कर सकती हूं ? कांता ने कहा शरम नहीं आती ऐसा बोलते “बाबूजी की उम्र का है।” शांता तपाक से बोली ‘दी’ तुमने चीनी कम फिल्म नहीं देखी तब्बु और अमिताभ बच्चन की उम्र में भी उतना ही फर्क था। कांता खीज गयी और बोली ठीक है सलमान से तेरी शादी की बात कल चलायेंगे। ओहो दीदी आप भी ना कहते हुए शांता सो गयी।

धीरे-धीरे समय बीतता गया और कांता दुर्गा गर्ल्स कॉलेज में बी.एस. सी. तृतीय में तथा शांता बी.ए. प्रथम वर्ष में पंहुच गयी। कांता बहुत समझदार थी पर शांता में अब भी बचपना झलक रहा था। एक दिन कामता प्रसाद ने काव्या से कहा कि लखनऊ से मेरे मित्र का परिवार यहां शादी के कार्यक्रम में आ रहा है। एक दिन रविवार को वो हमारे घर लंच करेंगे। उनके दो बेटे हैं शायद कांता को पसंद कर लें। रात का समय था सभी घर पर थे।

कांता ने बाबा के मुंह से सुना तो शरमा कर अपने कमरे में चली गयी। छोटी बहन शांता ये देखकर बोली बाबूजी दीदी शादी के नाम से शरमा रही है आप ऐसा कीजिये मेरे लिये लड़का पसंद कर लेना। काव्या ने तुरंत डांटा और कहा कि हट बेशरम कहीं की कांता के रहते तेरी शादी पहले कैसे हो सकती है।



कुनाल जी का परिवार रविवार को कामता प्रसाद जी के घर पहुँचा और कांता से बातचीत करने के बाद उन्होंने बड़े बेटे के लिये कांता को पसंद कर लिया। कुनाल जी के बड़े बेटे महेश और कांता की जोड़ी खूब जंच रही थी। रसोई में खाना पकाते वक्त शांता ने अपनी मां से कहा मैं दीदी की शादी के बाद अकेले कैसे रहूंगी। मां ने समझाया समय के साथ सब ठीक हो जाता है। शाम के समय महेश और कांता ने एक दूसरे को अंगूठी पहना कर सगाई कर ली। कुनाल जी ने शादी की तारीख पंडित से निकाल कर भेजी। शादी में दो माह बचे थे क्योंकि बी.एस.सी फाइनल की परीक्षा के बाद का मुहुर्त तय किया गया।

महेश को कांता बहुत पसंद आयी थी। महेश ने मोबाइल डायल किया तो फोन शांता ने उठाया। शांता ने बोला जीजाजी साली भी आधी घर वाली होती है। तब तक हमसे बतियाईये, दीदी नहा कर वापस आ जायेंगी। महेश ने साली से हाबिज के बारे में पूछा तो शांता ने गाने गाना कहा। महेश ने एक गाना सुनाने कहा तो शांता ने गाया “ हमें तुमसे प्यार कितना ये हम नहीं जानते मगर जी नहीं सकते तुम्हारे बिना। इतने में कांता ने शांता से पूछा कि किसका फोन है? शांता ने आंखे मटकाते हुए कहा, तुम्हारे सैया का और फोन पकड़ा दिया। महेश ने कांता से कहा यार लगता है भविष्य में साली से ही बात करना पड़ेगा नहीं तो हमारा गुजारा नहीं।

इक्कीस अप्रैल को शादी थी। कामता प्रसाद जी ने लड़को वाले के ठहरने के लिये बहुत अच्छा इंतजाम गोल्डन मैरिज हाल में किया था। हॉल में प्रथम और द्वितीय तल पर डबल बैड वाले पचास कमरे सोने के लिये ले रखे थे। खाने का इन्तजाम गोल्डी कैटरिंग को दिया गया। शांता का रो रो कर बुरा हाल था क्योंकि शादी के बाद बड़ी बहन कांता को ससुराल जाना था। विदाई की वेला आ गयी और कांता माता-पिता के गले लग कर खूब रोई। उसके बाद उसने शांता को गले लगाया तो शांता चिल्लाने लगी, दीदी आप हमें अकेले छोड़ कर नहीं जाओगी, हम भी आपके साथ चलेंगे, रोते हुए

बार-बार ये कहते हुए वो बेहोश हो कर गिर पड़ी। सभी बाराती परेशान हो गये। पानी लाकर छिड़का गए। थोड़ी देर बाद शांता होश में आयी तो कुनाल जी और उनकी पत्नी ने कामता प्रसाद से कहा कुछ दिनों के लिये हम शांता को ले जाते है आप पंद्रह दिन बाद लिवा लाना। शांता एक दम खुश हो उठ गयी और बोली मैं भी ये ही चाहती हूं। एक बराती ने कहा कि ऐसा प्रेम पहले कभी बहनों में कहीं देखा नहीं था।



बारात चली गयी और कामता प्रसाद पहली बार दोनों बेटियों की कमी महसूस करने लगे। कुनाल जी के घर में जश्न का माहौल था और शांता ने नाच नाच कर घर को सिर पर उठा रखा था। शांता ने पूरी तरह से घर संभाल लिया और एक दो बार वह घर में काम करते करते महेश के छोटे भाई सुनील से टकराई, आंखे चार हुई और एक दूसरे से इशारों ही इशारों में ही कुछ कहने लगी। कुनाल जी और उनकी पत्नी शांता से बहुत प्रभावित हुई और इस बीच सुनील जो की मां के बहुत करीब था, मां को बता दिया कि उसे शांता बहुत पसंद है।

15 दिन बाद शांता के माता—पिता लेने आये तो कुनाल जी ने कहा शांता अब हमारे सुनील की हो गयी है। बस विवाह होना बाकी है। कामताप्रसाद जी ने हंसते हुए कहा कि दोनों बेटियों के एक घर में बसने से हमारी सब टेंशन दूर हो गयी है। कांता ने इस बात पर छोटी बहन शांता की चुटकी की तो शांता शरमा कर भाग गयी। कुनाल जी ने कहा कि दो बहनों के बीच ऐस प्रेम पहली बार देख रहे हैं जो कि दुनिया में निराली है। इस पर सभी लोग हंस दिये।

—000—

चमेली
(गाँव की अल्हड़ युवती)

चमेली (गाँव की अल्हड़ युवती)



चमेली हरदा गाँव की रहने वाली थी। करीब पाँच हजार आबादी थी। चमेली माँ बाप की इकलौती संतान थी। करीब पाँच एकड़ की खेती थी। चमेली के पिता रामशरण और माँ सवित्री हमेशा चमेली को अच्छे उपदेश देते परन्तु आदत से मजबूर चमेली हमेशा कोई ना कोई शरारत करती रहती। घर के दरवाजे गुलेल लेकर एक दिन चमेली ने पेड़ पर बैठी एक चिड़िया को निशाना साधा तो वहाँ से पानी भर कर लौट रही प्रीति के सिर पर रखे घड़े पर पत्थर लगा और घड़ा फुट गया। चमेली भाग कर घर के अन्दर आ गयी और प्रीति गुस्से में चमेली के दरवाजे पर खड़ी होकर चिल्लाने लगी।

प्रीति ने सवित्री से कहा— मौसी देखो ना कितनी दूर से पानी भर कर लाती हूँ और तुम्हारी लाड़ली ने एक झटके में मटकी फोड़ दी। चमेली भी लड़ने लगी। चमेली ने कहा प्रीति इसमें मेरा क्या दोष अगर मेरी गुल्लक को तुम्हारे घड़े में चिड़िया नजर आयी। सवित्री ने घर में रखा एक नया घड़ा प्रीति को दिया और चमेली की तरफ से माफी माँगी। चमेली हमेशा बैलागाड़ी में गाँव घूमने जाती है। चमेली निकलती है घर से तो सामने से सीताराम काका दिखाई पड़े।

चमेली — काका पाँव लागूँ।

सीताराम — चमेली, बिटिया पाँव नहीं पड़े कोसन हमारी गाँव की प्रथा है।

चमेली — काका अब हम पाँव नहीं पड़े तो आप आशीर्वाद नहीं दोगे अगर आशीर्वाद नहीं मिलेगा तो हमारा भविष्य सुनहरा कैसे होगा

सीताराम — जुग—जुग जियो बिटिया।

चमेली — काका हमें उतना ही आशीर्वाद दो की एक जुग जी ले। बाकी के सभी जुग आप जीना कई सौ साल तक।

सीताराम — बिटिया तुमसे बहस में कोई जीत नहीं सकता।

चमेली — हम बहस कहाँ कर रहे हैं। हम तो पाँव छूने के बहाने धरती माँ को छू कर नमन कर रहे हैं। एक पंथ दो काज धरती माँ से भी आशीर्वाद ले लिया और आपका आशीर्वाद भी, एक पर एक प्री होना ही चाहिये।

सीताराम — सही कहती हो बिटिया।

चमेली — तो हम चले काका, जयराम जी की। **बैलागाड़ी हाँकते हुए** — हे धनुआ चल हूँ हूँ। सामने से **कमला मौसी** आती दिखाई दी।
मौसी राम राम।

कमला — बिटिया कैसी हो



चमेली — हमने सुना है राधा बहन का छतरपुर में ब्याह तय हो गया है! काहे बात जो हमसमे छिपात हो। हम मिठाई खाये बिना नहीं मानेंगे।

कमला — तुमसे क्या छिपाना। लड़का बारहवी पास है और 6 एकड़ खेती है। बिटिया घर चलो मिठाई खिलाती हूँ।

चमेली — मौसी आपने बोला और हमने खा ली। चलो अच्छा हुआ। ब्याह का महुर्त कब का है

कमला — अगला माह की इक्कीस तारीख।

चमेली — चलो ठीक है मौसी चलते हैं, तनिक चारा खरीद कर लाना है।

कमला — ठीक है बिटिया।

चमेली — जयराम जी की मौसी। ऐ धनुआ चल हूँ हूँ।

चमेली घर पहुँच कर बैलों की जोड़ी खोल कर उन्हें पानी पिलाती है और खाने के लिये चारा देती है।

सवित्री — बिटिया हाथ पैर मुँह धो ले खाना लगाते है।

चमेली — माँ के गालो को चुमते हुए — मेरी प्यारी अम्मा। चल हट गाल गीला कर दिया कह कर सवित्री उसे अलग करती है।

सवित्री — दिन भर कहाँ मटर गश्ती करती हो। गाँव की सरपंचिनी हो।

चमेली — क्या करे अम्मा सबकी खोज खबर लिये बिना खाना खाने का मन नहीं करता। खाना हजम नहीं होता।

सवित्री — चल जल्दी आ।

चमेली — आ रही हूँ अम्मा। खाना इतना स्वादिष्ट बना है लगता है उँगलीया चाट जाऊँ।

सवित्री — ज्यादा मस्का मत लगा! रात का खाना तुझे बनाना है।

चमेली — अम्मा, हमसे खाना बनवाने के अलावा और कोई काम ले लो।

सवित्री — ससुराल जाकर क्या करेगी

चमेली — अम्मा, पति से बनवाऊँगी और नही तो क्या ऐसे ही अपना शरीर सौपै दूँगी।

सवित्री — सास और ननद क्या खायेंगी।

चमेली — मैं तो हिलटलर की छटी औलाद हूँ, ससुराल में राज करूँगी।

सवित्री — चलो ठीक है, अभी जरा बाजार से जाकर रात के लिये सब्जी खरीद ला।

चमेली — लो मैं यूँ गयी और यूँ वापस आई।

चमेली बैलगाड़ी लेकर निकलती है तो सामने बच्चों का झुंड खेलता दिखाई देता है।

चमेली — ऐ बच्चा पार्टी क्या कर रहे हो ?

बच्चे — दीदी हम गिल्ली डंडा खेल रहे है।

चमेली — अरे तो हम भी खेलेंगे तुम्हारे साथ।

रामू — लो दीदी गिल्ली डंडा।

चमेली — ये मेरा डंडा गिल्ली को मारा और गिल्ली जाकर लगी सूरज के सिर पर, हलका सा खून बहने लगा।

चमेली — ऐ सूरज दिखता नहीं, हम गिल्ली डंडा खेल रहे हैं फिर भी सीधा मुँह उठाये चले आ रहे हो।

रामू — भैया के माथे से खून निकल रहा है। चमेली अपनी चुनरी तुरन्त फाड़ कर सूरज के सिर पर पट्टी बाँधती है।

सूरज — थैंकयू।

चमेली — ऐ सूरज के बच्चे अंग्रेजी का शब्द अपनी जेब में रखो, हम तो हिन्दी जानते हैं।

सुनेज — ठीक है भाई धन्यवाद।

चमेली — हाँ अब ऐसन बोल कर हमारा और मातृभाषा का दिल खुश कर दिया। बैलागाड़ी को हाँकते हुए चल धनुआ हूँ हूँ।

चमेली — लो अम्मा हम सब्जी ले आये।

सवित्री — ये क्या तुमने तो आधे रुपये भी खर्च नहीं किये।

चमेली — गाँव में हमारी जुबान ज्यादा खर्च होती है और रुपये कम।

रामशरण — भाग्यवान, बिटिया ससुराल चली जायेगी तब क्या करेगी।

सवित्री — हम खुद खरीदी करेंगे। चमेली प्रातः भोर में गाँव घूमने निकलती है अपनी बैलागाड़ी को हाँकती हुई। अरे दाई, ताई, मौसी, चाची, भाभी सभी एक साथ निपटने बैठे हैं! आज देर कर दी।

तीन स्वर — हाँ बिटिया थोड़ा देर भई।

चमेली — हम तो ससुर कलुआ मुर्गा के जल्दी बाँग देने से जाग गये तो सोचा फटाफट फ्रेश हो कर निपट ले तो तड़के बैलागाड़ी लेकर निकल पड़े।

चमेली — आप सभी लोग आराम से बैठो और फ्रेश हो लो। ससुर सुबह सबसे जरूरी काम यही है। दिन भर शरीर में खा खा कर डालो और सुबह निकालो। चलो हम चले — चल री धनुआ हूँ हूँ।

एक सप्ताह बाद कुटेला गाँव से लड़के वाले चमेली को देखने आये और उन्होंने चमेली को पसंद कर लिया। अगले माह चौदह तारीख को ब्याह तय हुआ। शादी वाले दिन पुरा गाँव सजा हुआ था। परे गाँव में रंग बिरंगी रोशनी चमक रही थी। पुरा गाँव शादी की तैयारी में जुटा था। ऐसा लग रहा था कि रामशरण की बिटिया की नही परन्तु पुरे गाँव की बिटिया की शादी है।

बारात का खूब सत्कार हुआ और रामशरण जी ने गृहस्थी में काम आने वाली सभी उपयोगी चीजे विवाह में चमेली को दी। शादी के बाद बारात चली गयी।



एक सप्ताह बाद दूल्हा सतीश और चमेली फेरा लगाने गाँव आये। गाँव के सभी लोग हैरान थे चमेली का स्वभाव बदल गया था। हमेशा शरारते करनी वाली, अलहड़ दिखने वाली, सब को हँसाने वाली एक गंभीर 'बहू बन चुकी थी। उसके इस परिवर्तन पर प्रीति ने जो कि उसकी खास सहेली थी पूछा — ऐ चमेली क्या हो गया है तुझे, इतनी चुप क्यों हो ?

चमेली — मेरी सास और ननद को मैंने पहली सुबह तुलसी को जल चढ़ाते, सूर्य को अर्घ्य देते देखा। उसके बाद पूजा घर में आधा घंटा पूजा उन्होंने की और फिर रसोईघर में नाश्ता और खाना बनाने सास और ननद जुट गयी। नई नवेली दूल्हन होने के नाते मुझे कुछ दिन रसोईघर से दूर रखा गया। एक दिन विशेष महर्त पर मुझे रसोईघर में मुझे खीर बनाने कहा गया। रसोईघर में मेरी ननद ने खीर बनाने में मेरा सहयोग किया तो इज्जत बच गयी। माँ सवित्री के लाख कहने पर मैंने मायके में खाना नहीं बनाया पर मेरी ननद दुर्गा साक्षात् दुर्गा माता का स्वरूप है। उसने मुझे ढाँढस बंधाया और अब मुझे पूरा खाना बनाना सीखा रहे हैं।

मैं भी सुबह जल्दी उठ कर पूजा करती हूँ। ससुराल में अगर सास या ननद दोनों में कोई भी बहु का साथ दे तो बहु के लिये ससुराल स्वर्ग हो जाता है। मेरी ननद ने ससुराल में मेरी माँ का स्थान ले लिया है। बहुत खयाल रखती है मेरा।

शादी के बाद एक अतिरिक्त जिम्मेदारी का एहसास होने लगा है। शादी के पहले तक मैं हरदा गाँव की अलहड़ बिटिया थी पर आज मैं कुटेला गाँव की संस्कारी बहु हूँ जिस पर सबको मान है!

समय बड़ा बलवान होता है और हर मनुष्य के जीवन में स्थिति अनुसार हमेशा परिवर्तन का एहसास करवा देता है।

प्रीति देख दंग रह गयी चमेली की बात सुनकर। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि ये वो ही उसकी पुरानी अलहड़ सहेली चमेली है।

प्यार का झटका 440 वोल्ट का

प्यार का झटका 440 वोल्ट का



कृष्णदत्त तिवारी का परिवार मेरठ में रहता था। बड़ा सरकारी बंगला था। कृष्णदत्त तिवारी इनकम टैक्स कमीशनर थे। उनकी पत्नी गृहिणी थी। पत्नी शान्ता, बड़ा बेटा सोमदत्त बी.कॉम. प्रथम वर्ष में तथा बेटी सौम्या इन्टर प्रथम वर्ष में पढ़ाई कर रही थी। इतने बड़े पद पर रहते हुए भी कृष्णदत्त तिवारी बहुत संस्कारी और धार्मिक थे। घर में सुबह शाम पूजा पाठ एवं आरती जरूर होती और बालगोपाल को प्रतिदिन प्रसाद भोग लगाया जाता। कृष्णदत्त तिवारी और शान्ता ने बच्चों में प्रारंभ से ही अच्छे संस्कार डाले। सोमदत्त सवेरे उठते ही हथेली में अपना चेहरा देखते फिर हथेलियों को आपस में रगड़ कर चेहरे पर दोनों हथेलियों का स्पर्श करते तथा उसके बाद धरती माता को नमन करके आंखों को लगाते, उसके बाद माता-पिता के पांव छुता तथा फिर भगवान के दर्शन कर खड़े-खड़े हनुमान जी का स्मरण कर अपनी दिनचर्या प्रारंभ करता। भाई और बहन में बहुत ही स्नेह था और एक-दूसरे पर जान छिड़कते थे।

प्रातः पूरा परिवार डाइनिंग टेबल पर एक साथ बैठकर नाशता करता। कृष्णदत्त तिवारी जी ने बेटे सोमदत्त को बुलेट मोटरसायकल एवं सौम्या को स्कूटी खरीद कर दी थी कॉलेज जाने के लिये। प्रातः साढ़ नौ बजे दोनों बच्चों कॉलेज के लिये जाते और कृष्णदत्त तिवारी जी को सरकारी ड्राइवर एम्बेसडर कार में लेकर ऑफिस चला जाता।

सोमदत्त और सौम्य हमेशा फर्स्ट डिविजन में पास होते। बच्चों की सफलता पर कृष्णदत्त तिवारी जी हमेशा गौरान्वित महसूस करते। दोनों बच्चों “खरा सोना” थे और उनमें कोई ऐब या बुराई नहीं थी।

इस बार भी बी.कॉम. फर्स्ट ईयर में सोमदत्त ने पूरी कक्षा में टॉप किया था और सौम्या ने भी नब्बे प्रतिशत अंक इन्टर प्रथम वर्ष में प्राप्त किये थे। सब अच्छा चल रहा था कि एक दिन कृष्णदत्त जी के ट्रांसफर का आदेश आ गया। उनका ट्रांसफर दिल्ली कर दिया गया था।

कृष्णदत्त जी खुश थे कि देश की राजधानी में सेवा देने का अवसर सरकार ने उन्हें उपलब्ध कराया है। कृष्णदत्त जी बहुत ईमानदार थे एवं ऑफिस में भी सबको भ्रष्टाचार के खिलाफ हिदायत देते।

कृष्णदत्त जी का परिवार सामान समेटकर दिल्ली आ गया। करोलबाग के पास उन्हें सरकारी बंगला मिला। कृष्णदत्त जी ने अपने बेटे का एडमिशन टेस्ट दिलवाया तो बेटा सोमदत्त हर विषय में सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त कर कॉलेज में दाखिला ले लिया। कॉलेज का नाम बहुत ही विख्यात था। श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में प्रवेश लेना मानों लोहे चबाने जैसा था। कृष्णदत्त जी ने बेटे को जी तोड़ मेहनत कर कॉलेज में अपना नाम सदैव ऊंचा रखने कहा। बेटी सौम्या का आसानी से महिला कॉलेज में एडमिशन हो गया।

सोमदत्त पहले दिन बुलेट चलाते हुए कॉलेज पंहुचा और पार्किंग में बुलेट खड़ी कर दी। इतने में सांय सांय करती सायरन की आवाज के साथ खुली जीप में छः लड़कियाँ आयी और गाड़ी पार्क कर दी। एक झटके के साथ उछल कर सभी लड़कियाँ खड़ी हो गयी। बहुत

ही आधुनिक दिखाई देने वाली एक लड़की ने सोमदत्त से कहा **Hi Dude!** तुम आंखों से देख रहे हो या आंखों में बटन लगा रखे हैं और तुम्हे दिखाई नहीं देता सामने बोर्ड लगा है “फोर व्हीलर पार्किंग” सोमदत्त ने बोर्ड की तरफ देखा और सॉरी कहा। उनमें सभ्य और सुशील दिखने वाली लड़की काजल ने इट्ज ओके कहा।

सोमदत्त ने अपनी बुलेट स्टार्ट की और उसे टू व्हीलर पार्किंग में खड़ा कर दिया। पूछताछ काउंटर पर उसे पता चला कि उसकी क्लास सेकैन्ड फ्लोर पर कमरा नंबर 18 में लगती है। सोमदत्त लिफ्ट से सेकैन्ड फ्लोर पहुंच गया। आज उसने पूजा के बाद अष्टगंधा तिलक माथे पर लगाया था जो कि पीला चंदन था और चमक रहा था।

सोमदत्त ने जैसे ही कक्षा में कदम रखा तो कुछ लड़के और लड़कियाँ कह उठे प्रणाम पंडितजी। सोमदत्त साहसी था, तो मेज के पास खड़ा हो गया अपना परिचय देने। ज्यादातर लड़के लड़किया पंडितजी आप मंदिर में जाकर पूजा करें। काजल जो शायद लड़कियों की पास थी एकदम खड़ी हो गयी और बोलने लगी **Listen guys** उसे बोलने दो। ये सुनकर सब चुप हो गये।

सोमदत्त ने अपना परिचय दिया अंग्रेजी में धाराप्रवाह बोलते हुए तथा अपने मां-बाप के बारे में भी बताया। कॉलेज का पहला दिन था और जब सोमदत्त ने काजल को खड़े होकर **Listen guys** कहते सुना तो उसके दिल को जोर का झटका लगा जैसे 440 वोल्ट करंट उसके शरीर में प्रवाहित होने लगा। काजल बहुत ही सुंदर लग रही थी उसने गुलाबी टॉप नीले रंग की जीन्स पर गुलाबी बेल्ट लगा रखी थी। कान में गुलाबी रंग के छोटे इयररिंग्स, गुलाबी लिपस्टिक ने उसके शरीर में और चार चांद लगा दिये थे।

काजल बड़े उद्योगपति घराने से थी। काजल बहुत ही संस्कारी लड़की थी। पूरी कक्षा में उसका दबदबा था। वो कक्ष में जो चाहती वही होता।

सोमदत्त परिचय देने के बाद जाकर सीट पर बैठ गया तो काजल ने खड़े होकर कक्षा की तरफ से स्वागत किया। सब ने एक-एक करके अपना नाम बताकर सोमदत्त से हाथ मिलाया। सोमदत्त के हाथ में जैसे ही काजल का हाथ आया तो सोमदत्त के सारे शरीर में बिजली दौड़ गयी।

सोमदत्त को पहली नजर में काजल से प्यार हो गया। सोमदत्त को लगा जैसे कीचड़ में काजल रूपी कमल खिला हो। प्रथम पीरियड में "प्रोफेसर पब्लिक लिमिटेड" और "प्राइवेट लिमिटेड कंपनी" में अंतर बता रहे थे पर सोमदत्त का मन पढ़ाई में कम और काजल में ज्यादा लगा था। सोमदत्त ने कई बार कॉलेज में काजल को घुरता हुआ काजल द्वारा निगाहों से ताड़ लिया गया।

लंच ब्रेक में सोमदत्त कैंटिन पंहुचा और चाय नाश्ता खरीद कर बैठा ही था कि काजल और उसके साथ गुफ की पांच लड़कियाँ कुर्सियों पर बैठ गयी। एक लड़की ने काजल को इशारा कर सोमदत्त की उपस्थिति का एहसास कराया।

काजल उठकर आयी और उसने अपने गुफ के साथ चाय और नाश्ते के लिये आमंत्रित किया। सोमदत्त ने शिष्टाचार के नाते निमन्त्रण स्वीकार कर पंहुच गया।

सरला नाम की लड़की ने कहा ड्यूड आपको कोई और नाम नहीं मिला जो सोमदत्त रख लिया। काजल इस पर सरला पर बरस पड़ी। सरला ने काजल से कहा सॉरी बॉस मैंने तो फॉरमल रूप में पूछ लिया था। काजल ने बताया पापा सवरे आठ बजे जाते हैं और रात बारह बजे वापस आते हैं। उनके 10 फैक्ट्री है और उन्हें सिर खुजाने की फुर्सत नहीं है। मम्मी को दिन भर किटी पार्टी और अन्य आयोजनों से फुर्सत नहीं है। काजल ने बताया उसका छोटा भाई हाईस्कूल कर रहा है। सेण्ट जेवियर्स कॉवेंट स्कूल से। काजल को अपने छोटे भाई की बहुत चिंता थी क्योंकि वो देर रात घर आता

और हमेशा उसके मुंह से सिगरेट की बदबू तथा कभी कभार शराब की गंध भी आती।

काजल ने तारीफ की सोमदत्त की और कहा कि आज के मार्डन युग में तुम्हारे जैसा आदमी देखने में नहीं मिलेगा।

सोमदत्त ने काजल का शुक्रिया कहा। सोमदत्त ने सभी लड़कियों के आचरण और स्वभाव की तारीफ की और चाय नाश्ता करके उठ गया। उसने इस ट्रीट के लिए सभी को धन्यवाद दिया। कुर्सी से उठ कर जाते वक्त सोमदत्त ने सुना सोफिया कह रही थी अपने गुफ से "हाय यार क्या मलाई चेहरा है" जालिम सा लगता है चाट जाऊ पूरी तरह। काजल को ये सुनकर तैश आ गया और उसने अपना हाथ जोर से मेज पर मारा और कहा साइलेन्ट गार्ड्स। लड़कियों ने बॉस को गुस्से में देखा तो चुप हो गयी। गुफ में स्मिथा को काजल से ईर्ष्या थी तो उसने कहा लगता है बॉस का दिल बेचारे पंडित आशिक पर आ गया है अब तो वो गया बेचारा बिना मतलब हलाल हो जायेगा।

काजल ने ये सुनकर स्मिथा को एक थप्पड़ जड़ दिया। बाकी लड़कियों ने मुश्किल से स्मिथा को हटाया। ये सब देखकर सोमदत्त भी वहां पहुंच गया पर मामला शांत होता देख वो चला गया।

स्टूडेंट्स युनियन के चुनाव घोषित हुए। बी.कॉम. द्वितीय कॉमर्स ने चुनाव में वाइस प्रेसिडेंट के पद के लिये काजल को खड़ा किया तो काजल ने सोमदत्त को अपना चुनाव प्रबंधक बना दिया। सोमदत्त को तो जैसे मुंह मांगी मुराद मिल गयीं। सोमदत्त ने चुनाव समिति गठित कि जिसमें पांच लड़के और पांच लड़कियाँ थी। चुनाव पन्द्रह दिन बाद था और हर शाम पांच बजे काजल के घर पर चुनाव मीटिंग रखी गयी।

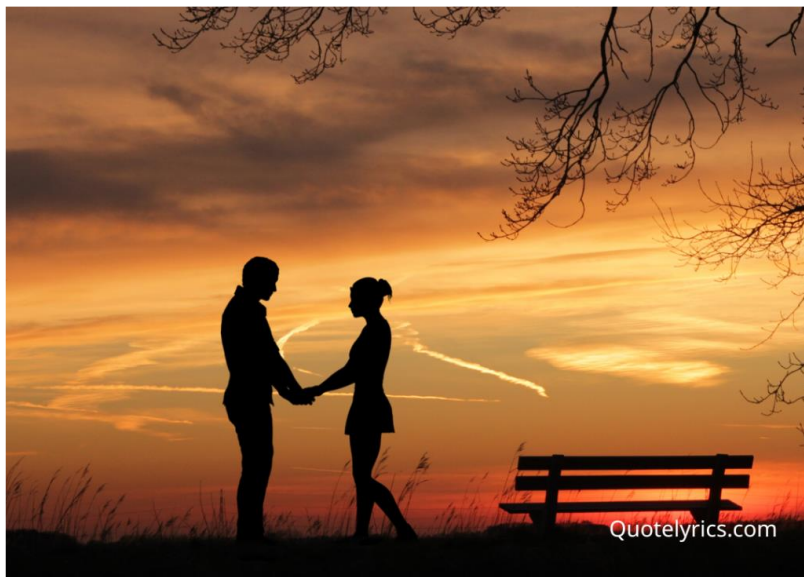
चुनाव के लिये पोस्टर और हैण्डबिल तैयार कराने काजल और सोमदत्त प्रिटिंग प्रेस पहुंचे। सोमदत्त ने हैण्डबिल स्वयं तैयार किया था। हैण्डबिल का शीर्षक था **Rose is the flower liked by all,**

Kajal is the Candidate Selected by all for vice president काजल ने हैण्डबिल पढ़ा और सोमदत्त से पूछा "What About you" सोमदत्त ने अनजान बनते हुए पूछा क्या ? काजल ने कहा अच्छा जानते नहीं गहराई से इन आखों में देखकर बताओं सोमदत्त बोला अच्छा अब समझा "मेरी अम्मा तुम मेरी सब कुछ हो, तुम मेरी J-aa—a-aan हो, तुम मेरा पहला प्यार हो। काजल दौड़ कर सोमदत्त से लिपट गयी।



सोमदत्त को यकीन नहीं हो रहा था क्या धरती पर भी स्वर्ग होता है। काजल ने अपने प्यार के कहने पर साड़ी पहननी शुरू कर दी। साड़ी में वो और आकर्षक नजर आने लगी। रविवार के दिन माँ बाप दोनों घर पर थे तो काजल ने सोमदत्त का परिचय दोनों से करवाया ये कहकर कि सोमदत्त मेरा क्लासमेट और भविष्य में मेरा होने वाला बेटा हाल्प है। माँ बाप दोनों चौंके जरूर पर सोमदत्त का पिता इनकम टैक्स कमिश्नर पद पर कार्यरत है सुनकर खुश हुए। माँ बाप ने काजल को आश्वस्त किया कि वो शीघ्र ही कृष्णदत्त जी से दोनों की शादी की बात करेंगे।

सोमदत्त ने सारे कॉलेज में पोस्टर चिपकवाये और हर स्टुडेंट को हैण्डबिल देते हुए काजल को जीताने के लिए हाथ जोड़ प्रार्थना की। ऐसे लग रहा था कि जैसे सोमदत्त खुद चुनाव लड़ रहा हो। काजल के पिता जी ने अपने बेटी के चुनाव को अपनी प्रतिष्ठा और मान सम्मान की लड़ाई मान लिया था। लाखों रुपये खर्च हुए और जीत काजल की बम्पर मतों से हुई।



काजल के पिता ने जीत का सारा श्रेय सोमदत्त को दिया और इस जीत का जश्न मनाने अपने घर पर बहुत बड़ी पार्टी रखी। काजल के पिता कालीचरण और पत्नी सुमित्रा के घर पार्टी का निमन्त्रण देने पहुंचे तो सोमदत्त के माता-पिता तो घर पर ही थे। कालीचरण जी ने हाथ जोड़कर कृष्णदत्त को पार्टी के लिये आमंत्रित किया और उसके बाद काजल के लिये सोमदत्त का हाथ मांगा। पहले कृष्णदत्त जी ने आनाकानी की पर जब सुमित्रा देवी उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ी हुई तो मना नहीं कर सके। तय हुआ कि इसी पार्टी में सगाई कर दी जायेगी। शादी बी.कॉम. फाइनल परीक्षा के बाद होगी। करीब पोने दो साल का समय बाकी था। कालीचरण ने बेटी

काजल को रिश्ता पक्का होने की बात बताई तो काजल ने मां बाप के माथे को चुम लिया।

पार्टी शानदार हुई और अगले दिन सभी समाचार पत्रों की सुर्खिया बनी। पार्टी के अगले दिन सोमदत्त और काजल शॉपिंग करने गये और जोरदार बारिश के चलते पूरा भीग कर काजल के घर वापस आ गये। प्रथम तल पर काजल का कमरा था और बगल में मम्मी पापा का कमरा। काजल अपने कमरे में सोमदत्त को ले गयी। काजल ने कहा मैं पांच मिनट में कपड़े चेंज कर के फिर तुम्हे पापा का गाउन देती हूँ। काजल की चूँकि सोमदत्त से सगाई हो गयी थी तो उसने सोमदत्त के सामने ही ब्लाउज और ब्रा उतार कर दुसरा ब्रा और ब्लाउज पहना सोमदत्त दूसरी तरफ पीठ किये खड़ा था। काजल ये देखकर दंग रह गयी और फौरन सोमदत्त से लिपट गयी। सोमदत्त ने अपने आप की भावनाओं पर काबू पाते हुए काजल को अलग किया।

सोमदत्त ने काजल से कहा कि मेरे संस्कार शादी से पहले अपनी होने वाली पत्नी को बिना कपड़े देखने की इजाजत नहीं देते, शारीरिक संबंध तो बहुत दूर की बात है। हम दोनों की आत्मा एक हो चुकी है, विचार एक हो चुके हैं, परिवार एक हो चुके हैं इससे बड़ा भगवान का आशीर्वाद क्या होगा। रही दो शरीर भी पौने दो साल बाद एक ही जायेंगे। काजल को लगा साक्षत भगवान उसको उपदेश दे रहे हैं। उसने तुरंत सोमदत्त के चरण छू लिये। सोमदत्त ने उसे हाथ पकड़ कर उठाया और गले लगा लिया।

—000—

कलियुग के रावण और श्रवण कुमार

कलियुग के रावण और श्रवण कुमार



महेन्द्र वर्मा और उनकी पत्नी पूनम एक आदर्श पति पत्नी थे। उनके दो बेटे किशन और रंजित कॉलेज में पढ़ रहे थे। किशन बी. एस. सी. तृतीय वर्ष में और रंजित बी. एस. सी. द्वितीय वर्ष में पढ़ाई कर रहे थे। दोनों बेटे बहुत संस्कारी थे। सवेरे जागते ही माता पिता के पाँव छूकर आशीर्वाद लेना उसके बाद नहा धो कर मंदिर में भगवान की सुबह शाम पूजा करना उनके दिनचर्या में था। महेन्द्र जी ने लकड़ी का एक छोटा सा मंदिर बना रखा था जिसमें सभी देवी देवता विराजमान थे। महेन्द्र जी स्वयं पत्नी के साथ और बेटों संग

आरती करते और प्रसाद वितरण करते। पूजा के बाद सभी डाइनिंग टेबल पर एक साथ बैठ कर नाश्ता करते और फिर किशन और रंजित मोटरसाइकिल पर कॉलेज चले जाते। महेन्द्र जी बेटों से बहुत खुश थे क्योंकि दोनों ने उच्च अंक प्राप्त कर हमेशा परीक्षा उत्तीर्ण की थी। गोपाल चौहान और महेन्द्र वर्मा अच्छे मित्र थे। दोनों का एक दूसरे के घर आना जाना था। गोपाल जी के दोनों बेटे बहुत ही शरारती और हमेशा कॉलेज में लड़ाई झगड़ा करते। बड़ा बेटा हरीश बी. ए. तृतीय वर्ष में और छोटा बेटा प्रतीक बी. कॉम द्वितीय वर्ष में था। दोनों का पढ़ाई में मन नहीं लगता और हमेशा गोपाल जी को उनके लड़ाई झगड़े की शिकायत मिलती। गोपाल जी हमेशा कहते यार महेन्द्र तू बहुत किस्मतवाला है जो हीरे जैसे बेटे पाये है। महेन्द्र कहता — ये सब पूजा पाठ और पुण्य प्रताप का फल है। भगवान राम और माता की आसीम कृपा सब पर बनी रहे ऐसी कामना करता हूँ। गोपाल का बड़ा बेटा हरीश बी. ए. पास करके एक कारखाने में क्लर्क की नौकरी करता है। प्रतीक भी रो धोकर बॉर्डर पर बी. ए. पास करता है और एक फर्म में मार्केटिंग सेल्समैन बन जाता है। गोपाल जी दोनों की नौकरी से खुश नहीं है। महेन्द्र वर्मा का बड़ा बेटा किशन कम्प्यूटर एप्लिकेशन में मास्टर्स डिग्री ज्वाइन कर लेता है और एक साल बाद रंजित भी उसके पदचिन्हों पर चलते हुए उसी कोर्स में ज्वाइन कर लेता है। दोनों बेटे समय समय पर अमेरिका में स्थित अलग अलग कम्पनीज में नौकरी के लिये अप्लाई करते रहते। इस बीच गोपाल के बेटे हरीश के लिये रिश्ता आया। लड़की वाले मध्यमवर्गीय थे। रिश्ता तय हुआ और शादी 10 नवम्बर को हो गयी। प्रतीक के लिये भी एक साल बाद रिश्ता आता है और उसकी शादी भी हो जाती है। महेन्द्र जी के बेटे किशन के लिये सरला का रिश्ता आता है और ससुराल वाले देख कर दंग रह जाते हैं कि इतना पढ़ा लिखा लड़का घर के सभी सदस्यों के चरण छू रहा है और साथ में छोटा भाई रंजित भी उसका अनुसरण कर रहा हैं। सरला के पिता मोहनलाल और माँ कृष्णा बहुत प्रभावित हुए और कहने लगे कि कलियुग में श्रवण कुमार पहली बार देख रहे हैं। रिश्ता तय हो जाता

है और किशन की शादी हो जाती है। सुहाग की सेज पर सरला बैठी है और किशन बैडरूम में प्रवेश करता है। सरला घूँघट ओढ़े हुए आकर पति किशन के पाँव छूती है तो किशन उसे उठाता है और कहता है तुम्हारा स्थान मेरे दिल में है। सरला कहती है आप पति परमेश्वर हो और अब मैं आपकी अर्धांगिनी होने के नाते सुख दुख में बराबर की हिस्सेदार हूँ। किशन कहता है पति और पत्नी गाड़ी के दो पहिये हैं। दोनों जब तक सही चलेंगे गाड़ी कभी रुकेगी नहीं। ये कहते हुए किशन बत्ती बुझा देता है और दो शरीर पहली बार एक दूसरे में समा कर प्यार के समुन्द्र में गोते लगाते हैं। अगले वर्ष रंजित के लिये रिश्ता आता है और लड़की वाले घर के संस्कार देखकर रंजित के लिये हाँ कर देते हैं और रंजित की शादी काव्या के साथ हो जाती है। गोपाल के बेटे हरीश की पत्नी माधवी और प्रतीक की पत्नी कृति में बिल्कुल जमती नहीं थी और रोज लड़ाई करती। दोनों घर में एक भी रुपया खर्च करने को तैयार नहीं थी। गोपाल जी बहुत परेशान थे क्योंकि वो रिटायर हो गये थे और एकमुश्त मिले रुपये इस पर दोनों बहुओं की नजर थी। छह माह तक जब दोनों बेटों ने अपनी तनख्वाह में से एक भी रुपया घर खर्च हेतु नहीं दिया तो एक रात गोपाल ने हरीश और प्रतीक से बात की। एकमुश्त में दी मिली रकम खर्च हो गयी थी। गोपाल जी को चिन्ता थी धीरे धीरे कहीं पूरा रुपया खत्म ना हो जाये। हरीश के बेटा हुआ तो गोपाल जी ने सभी को भोज पर आमन्त्रित किया, पूरा खर्चा किया। मेहमानों ने हरीश के बेटे को जो शगुन डाला था वो बहू ने अपने पास रख लिया। इस पर गोपाल की पत्नी ने बहू को डाँटा। माधवी ने कहा — अगर बेटे के जन्म का शगुन लेना हो तो हम लोग अलग हो जाते हैं हमें रिटायरमेंट के रुपयों में आधा हिस्सा दे दो। इतना सुनकर प्रतीक की पत्नी भी आकर रुपये माँगने लगी। गोपाल जी ने मामला सुलझाया और बचे हुए आठ लाख के चार हिस्से किये। दोनों बेटों को दो दो लाख और माँ बाप को दो दो लाख। लगता था कि हरीश और प्रतीक रुपयों की राह देख रहे थे। अगले दिन ही वो रुपये लेकर दूसरा घर किराये पर ले कर चले गये।

गोपाल और उसकी पत्नी अपने जिंदा बेटों के रहते वृद्धाश्रम शिफ्ट कर गये। गोपाल जी ने बची हुई पूँजी चार लाख रुपये वृद्धाश्रम को दान दे दी। महेन्द्र वर्मा जी के बेटों किशन और बहू सरला तथा रंजित और काव्या का जीवन बहुत खुशहाली में बीत रहा था। दोनों बहुएँ लगता था कि सगी बहनें हों। सुबह का नाश्ता सरला बनाती तो दोपहर का भोजन काव्या बनाती। खाना खाने के बाद सरला अपनी सास पूनम के पाँव दबाती और काव्या ये देखती तो चिल्ला उठाती वाह दीदी पूरा पुण्य क्या तुम्ही जमा करोगी, हमे भी तो पुण्य कमाने दो और जबरदस्ती सास का एक पाँव अपनी गोदी में रखकर दबाती जाती। क्रिस्टोफर साफ्टवेयर कम्पनी ने आनलाइन इण्टरव्यू लिया और दोनों भाई किशन और रंजित सभी मापदण्ड की कसौटियों पर खरे निकले और उनका चयन हो गया। कम्पनी ने किशन और सरला तथा रंजित और काव्या के लिये वीसा और हवाई टिकट भेज दिये। महेन्द्र जी और उनकी पत्नी पूनम के सामने गोपाल जी के दोनों बेटों का कलियुगी रावण का उदाहरण था। गोपाल जी के वृद्धाश्रम जाने पर उनका अकेला दोस्त दूर हो गया था। महेन्द्र जी दिल में सहमे हुए थे पर उन्हें अपने संस्कारी बेटों पर विश्वास था कि अमेरिका जाने के कुछ समय बाद ही बुला लेंगे। किशन और रंजित 10 अगस्त की अमेरिका चले गये। 21 अगस्त को महेन्द्र जी को विदेश से आया एक लिफाफा मिला जो उनके बेटों ने उन्हें भेजा था।



प्रिय पापा व मम्मी,

आपके किशन, रंजित एवं सरला और काव्या का चरण स्पर्श।

पहली बार जीवन में आप लोगों के बिना जीवन बिताना बहुत दुखदायी लग रहा है। हर पल हम सभी आप दोनों की बात करते हैं। पापा आप मम्मी का अच्छे से खयाल रखना क्योंकि मम्मी हमारी अमानत है आपके पास।

मम्मी आपको पापा का खयाल रखना होगा क्योंकि पापा हमारी अमानत हैं आपके पास। पापा मम्मी – आप दोनों को एक दूसरे का खयाल रखना होगा क्योंकि आप दोनों हमारी अमानत बनकर हैं एक दूसरे के पास।

हमने कम्पनी में आप दोनों के वीजा के लिये आवेदन दे दिया है। छह माह के भीतर वीजा और हवाई टिकट आपको मिल जायेंगे। कृपया मकान बेच कर और बाकी इन्डियन करन्सी को अपने नाम से विदेशी डालर में परिवर्तित करवा लेना।

आपके आज्ञाकारी

बेटे किशन/रंजित

बहू सरला/काव्या

महेन्द्र वर्मा और उसकी पत्नी भाव विभोर हो कर अपने आँखों से आँसु पोंछ रहे थे और कह रहे थे – श्रवण कुमार की कहानी सुन रखी थी पर आज हकीकत में कहानी देखने को मिल रही है।

महेन्द्र वर्मा जी और पूनम वृद्धाश्रम जाकर गोपाल जी की हालत देखकर दंग रह जाते हैं। गोपाल जी को हाई ब्लडप्रेसर की शिकायत थी और उन्हें एक सप्ताह पहले पैरालाइसिस हो गया। पत्नी शक्ति ने फोन से सूचना दी पर दोनों बेटों हरीश और प्रतीक ने बात को सुना अनसुना कर दिया। पत्नी रोते हुए कहने लगी ये बेटे नहीं कलियुगी रावण हैं और रोने लगी।

महेन्द्र वर्मा जी ने शहर के एक प्रतिष्ठित डाक्टर अरुण केडिया को गोपाल जी का हर सप्ताह परिक्षण कर दवा देने कहा। महेन्द्र जी ने दस हजार रुपये डाक्टर साहब को दिये और कहा इलाज में कहीं कमी ना हो। डाक्टर के इलाज से गोपाल जी दिन प्रतिदिन स्वास्थ्य लाभ ले कर चंगे हो गये। इस एक माह से ज्यादा समय के इलाज के लिये उन्होंने महेन्द्र वर्मा जी को धन्यवाद दिया। गोपाल जी कहते बड़ी अच्छी किस्मत पाई है तुमने, खूब पुण्य कमाये हो, लगता है पिछले जन्म में मोती दान किये हो जो कि कलियुग में श्रवणकुमार जैसे बेटे मिले और हमे कलियुगी रावण।

महेन्द्र जी ने बेटों के कहे अनुसार प्रापर्टी बेच कर विदेशी अमेरिकी डॉलर में कन्वर्ट कर ली। इसमें उन्होंने रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के गाइडलाइन का बहुत ध्यान रखा। विदेश जाने से एक दिन पहले महेन्द्र अपने दोस्त गोपाल से मिलने गये तो गोपाल जी फुट फुट कर रोने लगे ऐसा लग रहा था कि आज उनका रोना देखकर आसमान फट जायेगा। महेन्द्र जी ने जाते जाते गोपाल जी से वादा किया कि कोशिश करेगा कि तुम्हारे लिये भी कोई आशियाना मैं विदेश मे ढूँढूँ।

अमेरिकन हवाई अड्डे पर दोनो बेटे बहू स्वागत के लिये आतुर थे।

सब ने महेन्द्र जी और पूनम के पाँव छुए। महेन्द्र जी आज परदेस मे थे परन्तु अपने बच्चों को देखकर उनकी छाती फूले नही समा रही थी।

घर पर खाना खाते समय माँ पूनम ने कहा — मैं तो सोचती थी यहाँ केवल नॉन वेज मिलेगा और डर रही थी। वह क्या दाल मखनी और छोले बनाए है दिल खुश हो गया।

बहुएँ — माँ जी ये तो शुरुआत है आगे आगे देखना हम लोग क्या क्या खिलाते है।

पूनम — और क्या है।

बेटा — गुलाबजामुन और रसगुल्ले

पूनम — आप आज मीठा नहीं खाओगे आपको शुगर है।

महेन्द्र — कुछ नहीं होगा, मैं शुगर की दो टेबलेट खा लेता हूँ और फिर दो गुलाबजामुन और दो रसगुल्ले खाता हूँ।

पूनम — आप मानेंगे नहीं।

सभी एक स्वर में कहते हैं आज पापा नहीं मानेंगे।

महेन्द्र वर्मा ने अपने बेटों को गोपाल जी की दुखभरी कहानी सुनाई और बताया कि कितनी दयनीय स्थिति में दोनों हैं। किशन ने अपने मित्र काउन्सलर की मदद से एक कम्पनी में गोपाल जी के लिये सुपरवाइजर का पद ढूँढ लिया। गोपाल जी को सूचना देने पर उन्होंने अपना आवेदन और दस्तावेज कम्पनी को भेजा। एक माह में कम्पनी ने उनका चयन कर उन्हें और पत्नी को वीजा और हवाई टिकट भेज दिये।

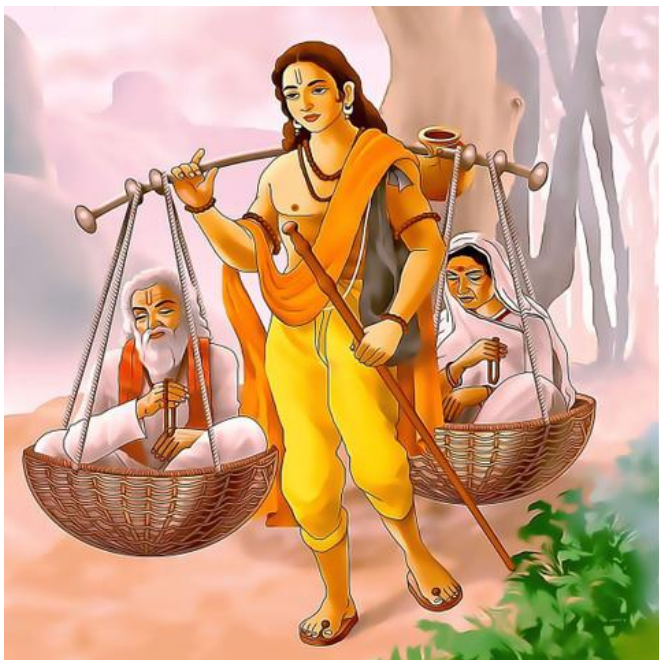
गोपाल जी और इनकी पत्नी अमेरिका जाने से पहले अपने बेटों के घर गये। हरीश और प्रतीक माँ बाप का वीजा और हवाई टिकट देखकर आश्चर्य चकित हुए। गोपाल जी ने कहा — शर्म आनी चाहिये तुम दोनों को जो अपने माँ बाप की दयनीय स्थिति में वृद्धाश्रम में छोड़ दिया।

महेन्द्र जी के बेटे किशन और रंजित कलियुग के श्रवणकुमार हैं, उन्होंने अपने मम्मी पापा के साथ साथ मुझे हमारे लिये भी वीजा और हवाई टिकट भेजा।

तुम दोनों कलियुग के रावण से भी बदतर हो। तुम दोनों ने मुझे पैरालाइसीस हुआ तो देखने तक नहीं आये। तुम दोनों को पाल पोस कर बड़ा किया कि बुढ़ापे की लाठी बनोगे मगर तुम दोनों ने तो हमारी लाठी ही हमसे छीन ली।

किसी ने सच कहा है जाको राखे साइयाँ मार सके न कोई बाल ना बाँका कर सके जो जग भी बैरी होय। हरीश और प्रतीक ने फफक

फफक कर रोते हुए माँ बाप के पैर पकड़ लिये। माँ, बाबूजी हमें छोड़कर मत जाइये। इस पर गोपाल जी और गुस्से से रोते हुए बेटों के हाथ झटकते हुए विदेश जाने हेतु प्रस्थान कर गये।



—000—

भाभी माँ

भाभी माँ



अशोक और जितेन्द्र सगे भाई थे। अशोक छब्बीसप वर्ष का था। दस साल पहले अशोक और जितेन्द्र के माँ बाप एक सड़क दुर्घटना मे स्वर्गवासी हो गये थे। बड़े भाई अशोक ने पूरी जिम्मेदारी निभाते हुए जितेन्द्र को पढ़ाया लिखाया। उसकी हर जरूरत का खयाल रखा। बचपन में जितेन्द्र माँ से बहुत प्यार करता था पर पिताजी से उसे बहुत डर लगता था। ग्यारह साल का जितेन्द्र था जो माँ बाप का साया सिर से उठ गया। दोनों भाई बाप की मृत्यु पर स्थिति को देखते हुए अशोक दिलेरी और साहस का परिचय देते हुए पढ़ाई और रात में एक अकाउण्ट्स लिखने लगा। अशोक की मेहनत और लगन के चलते जितेन्द्र ने बी.कॉम. कर लिया।

अशोक ने बैंक की परीक्षा दी, प्रोबेशनरी आफिसर्स के पद हेतु कठिन तोड़ मेहनत से उसने परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। सत्ताइस वर्ष का हो चुका हो चूका था। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में उसकी जवाइनिंग हुई। अशोक के लिये अच्छे रिश्ते आये, प्रेरणा के घर अशोक को पसन्द किया। अशोक और प्रेरणा की 15 अक्टूबर की शादी तय हो गयी। मामा के परिवार ने बहुत साथ दिया और अशोक का विवाह अच्छे से सम्पन्न हो गया।

शादी के दूसरे दिन सवेरे 7 बजे प्रेरणा ने जितेन्द्र के बालो में उँगलियाँ फेरते हुए गुड मोर्निंग भैया एकबारगी उसे अपनी माँ का अहसास हो गया। जितेन्द्र ने आँखे खोलने की कोशिश की, अपनी प्रेरणा भाभी के माँ के रूप में दिखाई देने लगा और उसने कहा गुड मोर्निंग भाभी मां। प्रेरणा ने पूछा क्या बात भैया पहचान नहीं रहे हो। जितेन्द्र झट से भाभी माँ के पैर छुए। भाभी ने कहा कहीं मैंने तुम्हारी नींद तो खराब नहीं की। जितेन्द्र – नहीं, बिल्कुल नहीं।

प्रेरणा – भैया जल्दी से नहा धोकर तैयार हो जाओ। तुम्हारे भैया खड़े हैं। तुम्हारे लिये ब्रेड आमलेट और चाय बना रही हूँ।

जितेन्द्र – आपको कैसे पता कि ये मेरे फेवरिट हैं।

प्रेरणा – तुम्हारे भैया ने बताया था।

प्रेरणा – फटाफट चाय पीयो और नहा कर आओ।

जितेन्द्र – स्टाइल में।

नाश्ते की टेबल पर अशोक, जितेन्द्र और प्रेरणा नाश्ता कर रहे हैं।

अशोक – जितेन्द्र अब आगे क्या करना चाहते हो

जितेन्द्र – भैया सोचता हूँ किसी फर्म में प्राइवेट नौकरी कर लूँ।

प्रेरणा – नहीं बिल्कुल नहीं— तुम्हें आगे की पढ़ाई करनी चाहिये।

जितेन्द्र – भैया ने आज तक घर का सारा बोझ उठाया है। अब कम से कम भैया का कुछ भार कम करना चाहता हूँ।

अशोक — मेरे मन पर तेरे शरीर का 10 किलो वजन है सिर बहुत दर्द हो रहा है इसलिये।

जितेन्द्र — आप भी ना मजाक करने से पीछे नहीं हटते।

अशोक — प्रेरणा ने कहा है तू आगे की पढ़ाई तय कर और मेरे से अपने पैसे लेकर एडमिशन लें।

जितेन्द्र — भैया ठीक है। आप दोनों की बात सिर आँखों पर पर में वकील बनना चाहता हूँ एक एल.एल.बी. में प्रवेश लूँगा।

प्रेरणा — अरे भैया तुमने तो कुछ ज्यादा नहीं खाया।

जितेन्द्र — आपकी ममता स्नेह और वात्सल्य का जो नाश्ता मैंने किया है लगता है दोपहर में भी भूख नहीं लगेगी।

प्रेरणा — पाजी कहीं के झूठ बोलता है।

जितेन्द्र — नहीं भाभी माँ आपकी कसम।

प्रेरणा — मुझे केवल भाभी रहने दो, माँ मत बनाओ।

जितेन्द्र — कई साल बाद आज माँ की ममता और छत्रछाया आपके चेहरे पर दिखाई दी। मुझसे भाभी माँ कहने का हक मत छीनो।

अशोक — ठीक है प्रेरणा तुम्हारे लिये माँ जैसी है।

जितेन्द्र — भैया चाणक्य कालेज काफी नामी है।

अशोक — आज ही जाकर एडमिशन फार्म ले आओ।

जितेन्द्र — जी भैया।

प्रेरणा — भैया क्या हुआ एडमिशन का

जितेन्द्र — एडमिशन के समय पचास हजार जमा करवाना है। भैया से बात करूँगा।

प्रेरणा — आलमारी खोल कर चकबुक निकालती है और एक चेक पर पचास हजार लिख कर हस्ताक्षर करके जितेन्द्र को दे देती है।

जितेन्द्र — थैंक यू माँ।

प्रेरणा — जितेन्द्र के कान खींचते हुए— भैया ने कहा है ना माँ शब्द मत जोड़ना।

जितेन्द्र — क्या करूँ माँ, माँ नहीं है इसलिये मैं आपको उनके स्थान पर देखता हूँ। ठीक है भाभी माँ।

प्रेरणा — भैया जल्दी लौटना।

शाम को जितेन्द्र घर लौटता है और एडमिशन होने की खुशखबरी देता है।

अशोक — बधाई हो, मन लगा कर पढ़ना।

प्रेरणा — वकील बनोगे तो कभी हमारे बीच लड़ाई झगड़ा होगा हम केस तुम्हीं को सौंपेंगे।

जितेन्द्र — भाभी ऐसी नौबत कभी नहीं आयेगी। भैया बहुत अच्छे हैं।

कालेज का पहला दिन — प्रथम वर्ष। क्लास में सभी बैठे हुए, प्रोफेसर दिनेश का आगमन। सभी स्टूडेंट्स खड़े होकर — गुड मोर्निंग सर।

दिनेश — गुड मोर्निंग, आप सब अपना परिचय दें। बार एसोसिएशन का सदस्य हूँ। विगत दस वर्षों से मैं वकील के रूप में काम कर रहा हूँ। चाणक्य कालेज में गैस्ट प्रोफेसर के रूप में हूँ। सभी का पहले दिन क्लास में स्वागत करता हूँ। अब आप सब एक एक करके अपना परिचय आकर तुरत दें। सबने आकर अपना परिचय दिया।

लंच के समय कैंटीन में भारी भीड़। जितेन्द्र एक कुर्सी पर बैठता है जहाँ क्लास की रूचि अपनी सहेलियों के साथ बैठी है।

जितेन्द्र — आप हाई, रूचि

जितेन्द्र — आपके परिचय के समय सामने वाली बेंच पर मैं बैठा था।

जितेन्द्र — कहाँ रहती हो रूचि

रुचि — हॉस्टल में हूं। ममीं पापा कस्बे मे रहते हैं।

सब चाय पीते हैं, घंटी बजती हैं और सभी क्लास में बैठ जाते हैं।

देखते देखते एक वर्ष बीत गया और भैया भाभी की शादी की प्रथम वर्षगाँठ आयी। अशोक ने घर पर ही सभी को आमत्रित किया था। मेज पर केक रखा हुआ, कमरा रंग बिरंगे फूलों से सजाया हुआ।

जितेन्द्र — हेलो एग्रीबडी, आज शादी की सालगिरह पर आप सभी का स्वागत है। आज हम केक काटने से पहले भैया और भाभी के बीच एक प्रतियोगिता करायेंगे जो हार जायेगा जीतने वाले का चेहरे सब के सामने कस कर चुमेगा। प्रतियोगिता यह है, मैंने एक गुब्बारा उपर बांध रखा है, गुब्बारे के नीचे मेज है हिप हिप हुर्रे बोलते हाथ में जली हुई मोमबत्ती लेकर मेज पर चढ़कर, जो सब से पहले गुब्बारा फोड़ेगा वो ही जीतेगा।

जितेन्द्र — सब तैयार है, तो वन टू थ्री।



फटाफट मेज पर चढ़ गये अशोक की मोमबत्ती मेज पर चलते चलते बुझ गयी और प्रेरणा ने मोमबत्ती से गुब्बारा फोड़ दिया। अशोक ने सभी के सामने प्रेरणा को कस कर चुम लिया और सभी हंसने और ताली बजाने लगे। इसके बाद अशोक और प्रेरणा ने मिल कर केक काटा। पार्टी बहुत अच्छी हुई।

जितेन्द्र और रुचि द्वितीय वर्ष में अच्छे अंको में उत्तीर्ण करके पहुंचे थे। दोनों एक दूसरे को प्रेम करने लगे थे। एक बार जितेन्द्र घर आया तो उसकी चेहरे पर एक जगह लिपिस्टक के निशान थे। भाभी ने ताड़ लिया और पूछा— ये क्या है? शरमा कर भाभी को गले लगा लिया और चरण छूकर आशीर्वाद लिया। भाभी माँ ने अगले दिन रुचि को घर लाने कहा।

जितेन्द्र और रुचि घर में आते हुए।

प्रेरणा — बहु तो चाँद का टुकड़ा है।

जितेन्द्र — भाभी माँ आप को पसन्द आयी।

अशोक बहुत खुश हुआ और आशीर्वाद दिया।

रुचि — ये मॉर्डन युग है। लड़का लड़की हैडशेक करते हैं शिष्टाचार के लिए।

प्रेरणा — खुश रहो।

जितेन्द्र — रुचि भाभी भैया के पाँव धुओ।

रुचि — अरे नहीं नहीं! इट्स अ स्टुपिड थींग।

जितेन्द्र — बीहव प्रापरली।

प्रेरणा — चलो रुचि यहाँ आओ मेरे पास बैठो।

रुचि — आई हैव टू गो फास्ट।

प्रेरणा — मिठाई लेकर आती है।

रुचि — हे नो आई डोन्ट वांट फैंट आन माई बाडी, नो स्वीटस प्लीज।

प्रेरणा — काफी बनाती है।

रुचि — आई विल प्रीफर फिल्टर काफी विदाउट शुगर।

प्रेरणा — रुचि ओह थैंक्स अ लाट!

जितेन्द्र और रुचि घर से निकलते हैं और रास्ते में कोई बात नहीं करते। द्वितीय वर्ष से भी दोनों अच्छे अंकों में उत्तीर्ण कर लेते हैं। तृतीय वर्ष में जितेन्द्र सीनियर वकील पराग गराडिया के साथ जुड़ गया। भाभी गर्भवती हो जाती है और जितेन्द्र घर के काम में भाभी का सहयोग करने लगता है और भाभी को भारी वजन नहीं उठाने देता। घर के काम में पूरा सहयोग करता है।

प्रसव के दिन जितेन्द्र घर पर था और भाभी माँ को लेबर पैन प्रारंभ होते ही एम्बुलेन्स बुलाकर भाभी को अस्पताल ले गया और जाते जाते फोन पर सूचना अशोक को दी। प्रेरणा भाभी के बेटी हुई तो जितेन्द्र हाथों में बेटी को उठाकर कहने लगा, आज बड़े दिनो बाद मेरी माँ मेरे घर आयी है। और रोने लगा। भाभी माँ धीरे से उठकर आती है और जितेन्द्र को पुचकारती है और आँसू पोछती है।

एल.एल.बी. परीक्षा में जितेन्द्र और रुचि दोनों ने मेरिट स्थान प्राप्त किया। इस बीच भैया को शादी के लिये राजी कर लिया था। एक दिन रुचि के ममी पापा घर आये और शादी की तारीख तय हो गयी। 18 अगस्त को विवाह सम्पन्न हुआ। 19 अगस्त की बारात वापस लौट आयी। प्रेरणा ने घर का सबसे अच्छा कमरा पूर्ण स्वरूप से फूलों से सजाया था कमरा भी फूलों से सजा था। जितेन्द्र कमरे में रात करीब बारह बजे दोस्तों को घर भेजकर आया तो रुचि सो चुकी थी। जितेन्द्र संस्कारी पर अपने वैवाहिक जीवन की पहली रात वह खोना नहीं चाहता था सो उसने गुलाब की एक कलिका लेकर रुचि के पाँवों को धीरे से सहलाया। रुचि जाग गई और कहने लगी— क्या समय है तुम्हें मालमु है रात के साढ़े बारह बजे रहे हैं।

ये कह कर वो सो गयी। जितेन्द्र हक्का बक्का रह गया कि क्या ये वो ही प्यार है जो कसमें मेरे साथ खाता था।

सुबह प्रेरणा चाय लेकर आयी ती दरवाजे से ही रूचि ने प्रेरणा को लौटा दिया कह कर मे स्वयं भैंया को पिला दुगी। पहली बार जितेन्द्र को चाय फीकी लग रही थी भाभी के प्यार के बिना। रसाईघर में रूचि ने जाकर प्रेरणा से कहा आप अपना नाश्ता बना ले इनका लिये ब्रैड आमलेट और सैंडविच तैयार कर लूंगी। प्रेरणा को लग रहा था कि उसके साथ रूचि अजनबियों जैसा बर्ताव कर रही है।

नाश्ते की टेबल पर रूचि ने जितेन्द्र से कहा – आई.एम.ए.पोसेसिव, इससे पहले घर में क्या होता है रहा मे नहीं जानती। अब तुम केवल मेरे हो और मेरे अलावा कोई दूसरा तुम्हारे लिये नाश्ता या खाना बनाये मुझे मंजूर नहीं।

जितेन्द्र – रूचि, ये क्या हो है तुम्हें भाभी माँ के प्रेम और स्नेह ने मेरे जीवन में दोबारा जान डाली है। मैंने माँ का चेहरे उनकी आँखों में देखा है।

रूचि – मैंने कहा वो ही फाइनल है।

प्रेरणा कि बिटीया उसी समय भूख के मारे रो पड़ी तो जितेन्द्र उसे गोद में उठाने जाने लगा तो रूचि ने कहा खबरदार अगर तुम उस कमरे में गये।

जितेन्द्र – तुम्हारी मति मारी गई है। तुम्हें जो करना हो करो और खुद बिटीया को उठा लिया। जितेन्द्र ने रूचि को जोर से दरवाजा पटकता देखा।

रूचि अपने अपने माँ बाप के घर चली गई और देर बाद जितेन्द्र भी कोर्ट चला गया। शाम सात बजे घर आया तो देखा रूचि जोर जोर से भाभी माँ पर चिल्ला रही है: आपने बिटरया को हमारे बिस्तर पर लिटाया क्यों। पूरा बिस्तर बिटीया ने खराब कर दिया है। भाभी हाथ जोड़ कर माफी मांग रही थी। जितेन्द्र ने जल्दी पहुंच कर भाभी माँ

के हाथ पकड़ लिये और कहा आप माफी नहीं मांगोगी। इसमें आप की कोई गलती नहीं, अगर एक मासूम छोटी बच्ची बिस्तर गंदा कर रही है तो वो अनजान है। जितेन्द्र ने कपड़ा लेकर बिस्तर साफ किया और रुचि गुस्से में हुंकार कर बाहर चली गई। शाम को अशोक भैया ने प्रेरणा भाभी माँ को समझा कर कहा— बार बार नई बहु का तुम्हें इस तरह अपमानित करना ठीक नहीं।

प्रेरणा — अजी कुछ नहीं हुआ बहु को समझा दुंगी। आप टेंशन मत लें।

कोर्ट में भी कुछ केस में रुचि और जितेन्द्र एक दूसरे के मुवाकिल के लिये बहस करते दीखते जैसे दोनों मवाकिल का नहीं आपस का केस लड़ रहे हो। एक रोज रसोईघर में रुचि रात को जोर जोर से बर्तन फेंक रही थी रुचि कह रही थी बर्तन माँझे नहीं और ऐसे ही रख दिये। प्रेरणा ने रसोईघर जाकर बर्तन उठाए और रुचि से माफी मांगने लगी। रुचि चिल्लाते जा रही थी और कह रही थी अब इस घर में नहीं रहेंगी, जिसे रहना हो रहे।

जितेन्द्र — भाभी से माफी मांगो!

रुचि — तुम्हारे लिये भाभी माँ होगी। मेरे लिये कुछ नहीं। अब माफी नहीं मांगूंगी।

जितेन्द्र — मुझे उन्होंने माँ का प्रेम दिया। मैं उनका मरकर भी एहसान नहीं चुका सकता।

रुचि — तो तुम यहीं रहो और मरकर उनके एहसान चुकाओ मैं अपने ममी पापा के घर जा रही हूँ।

जितेन्द्र — ठीक है तुम्हें जहाँ जाना हो जाओ!

रुचि — मैं तो जा रही हूँ तुम यही कहोगे। सूटकेस पैक करने लगी। प्रेरणा और जितेन्द्र बहु नहीं ऐसा मत करो रुक जाओ।

रुचि — तो जा रही हूँ अगर इन्हे ये घर बहुत प्यारा है तो रहे।

प्रेरणा ने कहा जितेन्द्र — भैया जाओ तुम भी रुचि के साथ— शादी के सात फेरो के बंधन मे बंधने के बाद पति को लिये गये वचन को फेरों के समय की याद करके निभाना चाहिये।

जितेन्द्र — रोने लगता है भाभी माँ मुझे अपने प्रेम और स्नेह के आंचल से दूर मत किये। अपने चरणो मे पड़े रहने दे और फफक फफक कर रोने लगता है।

प्रेरणा ने कहा जितेन्द्र — तुम घर से अलग हो रहे हो पर दिल से तुम हमेशा हमारे और पास आ गये हो और प्रेरणा रोने लगती है।

जितेन्द्र — आँसू पोछते हुन भाभी के चरणो मे बैठ जाता है।

रुचि — धीरे से फुसफुसाती है कि पूरा परिवार नौटंकीबाज है।

रुचि — जितेन्द्र का सामान लेकर बाहर आती है और कहती है जितेन्द्र से चलो जल्दी।

प्रेरणा — जितेन्द्र से हाथ जोड़कर जाओ।

जितेन्द्र — भाभी माँ और भैया के चरण छूकर पत्नी के संग घर के बाहर आता है एक नई राह पर जीवन की शुरुआत करने के लिये। उसे लगता है बिना भैया और भाभी माँ के जीवन का मार्ग आसान नहीं जिस पर अंधकार रुपी उसकी पत्नी रुचि साथ चल रही हो।

प्रेरणा और अशोक — अशोक कहता है प्रेरणा से आज समाज में आधुनिकता का प्रवेश हुआ है। मॉर्डन युग मे ज्यादातर लोग संस्कार भूल चुके है। लड़किया देर रात तक क्लब और पार्टियों मे जाकर अपना विनाश कर रही है। बरदाश्त करने की सीमा सब की लगभग पस्त हो चुकी है। अपना सर्वाधिकार मानती है पति पर इसीलिये अपने पति का बहन या भाभी से मिलना जुलना पसन्द नहीं करती। वो अपने पति को किसी के साथ बाँटना नहीं चाहती इसलिय एक अलग आशियाने में पति के साथ जीवन बिताना चाहती है।

प्रेरणा — माँ बनने पर उसे भी इस जिम्मेदारी का अहसास हो जायेगा। समय परिवर्तनशील है जो आज है कल नहीं जो कल है वो परसो बदल जायेगा।

अशोक — प्रेरणा तुमने सही कहा। ऐसा ही होगा।



—000—

पहला पहला प्यार है

पहला पहला प्यार है



प्रकाश हर साल गर्मी की छुट्टियाँ अपने मामा के घर दिल्ली में बिताता था। उसका छोटा भाई मम्मी-पापा के साथ घर पर ही रहता था। प्रकाश 14 वर्ष अप्रैल को जब मामा के घर पहुंचा तो मामा की दोनों लड़कियाँ एवं मामा-मामी घर पर थे पर एक आकर्षक नैन नकश वाली सुंदर लड़की भी मौजूद थी। मामी ने प्रकाश का परिचय उस लड़की से करवाया और बताया कि ये रीतु है, जो पिछले ढाई माह से कम्प्यूटर ट्रेनिंग करने दिल्ली आई है क्योंकि इस ट्रेनिंग की सुविधा गुरदासपुर के छोटे से कस्बे में उपलब्ध नहीं थी।

रात में भोजन पश्चात् मामा की दोनों लड़कियाँ पायल और पल्लवी रितु और प्रकाश अंताक्षरी खेलने बैठे। रितु ने बताया उसने पिछले साल बी.कॉम. फाइनल फर्स्ट डिविजन में पास किया है। प्रकाश ने रितु को बताया कि वो बी.कॉम. सेकेन्ड ईयर में है। रितु चौबीस साल की थी और प्रकाश बाइस साल का, अंताक्षरी में पायल और रितु एक ग्रुफ में थे और प्रकाश एवं पल्लवी दूसरे ग्रुफ में।

पायल ने गाना शुरू किया “हमें तुमसे प्यार कितना ये, हम नहीं जानते मगर जी नहीं सकते तुम्हारे बिना” प्रकाश ने तुरंत उत्तर दिया। ‘ना ना करते प्यार तुम्ही से प्यार कर बैठे करना था इंकार मगर इकरार तुम्ही से कर बैठे। स्पर्धा में पायल ग्रुफ की जीत हुई और प्रकाश ने पायल और रीतु को बधाई दी। पायल ने भाई से पार्टी मांगी तो प्रकाश ने अगले दिन देने हेतु सहर्ष स्वीकार कर दिया।

प्रकाश बी.कॉम. के विषय कॉमर्स एकाउंट्स के बारे में रीतु के साथ बातचीत करना प्रारंभ किया तो मामा की दोनों लड़कियां बोरियत महसूस कर उठ कर दूसरे कमरे में चली गयी। रीतु हंसती थी तो लगता था जैसे मुंह से फूलों की वर्षा हो रही हो। प्रकाश और रीतु के विचार बहुत मिलते थे। दोनों को हमेशा अकेले में एक दूसरे के साथ रहना भाने लगा।

एक दिन प्रकाश ने अकेले में रीतु से कहा क्या कोई मशीन या दवाई ऐसी नहीं बन सकती कि मेरी उम्र तीन साल बढ़ जाये। रीतु के जोर देकर पूछने पर प्रकाश के स्पष्ट रूप से कहा यार पहली बार तुम जैसी खुबसूरत लड़की से प्यार हो गया है। आज तक प्रकाश को जीवन में कभी प्यार का एहसास नहीं हुआ था। इतना सुनकर रीतु हंसने लगी और बोली मैं सामाजिक बंधन और नियम नहीं मानती। उम्र में दो साल तुमसे बड़ा होना कोई गुनाह तो नहीं है, मैं तुम्हारे साथ शादी करने को तैयार हूं। रीतु ने कहा विचार मिलने चाहिये और दोनों गाड़ी के दो पहियों के भांति जीवन में कर्म करें तो सब कुछ अच्छा होता है। मैं मानती हूं कि शादी दो आत्माओं का मिलन है। प्रकाश को अंसभव लग रहा था। क्योंकि किसी भी कीमत पर मम्मी पापा उम्र में बड़ी लड़की के साथ विवाह करने तैयार नहीं होते।

दिन गुजरने लगे और रीतु का दिमाग जैसे कम्प्यूटर था। उसने बी. कॉम. द्वितीय वर्ष के सभी विषयों में प्रकाश का मार्गदर्शन किया, अगले दिन किचन में रीतु सब्जी काट रही थी अचानक चाकू की तेज धार ने उसकी उंगली को लहुलहान कर दिया। प्रकाश ने

फटाक से रीतु की लहुलहान उंगुली को मुंह में रखकर चुसने लगा तो मामा की दोनों लड़कियां मजाक करने लगी भईया ये बात है। रीतु ने अपनी अंगुली प्रकाश के मुंह से खींच कर शर्मा कर भाग खड़ी हुई। मामा की दोनों लड़कियां जान गयी कि आग दोनों के दिलों में लगी हुई है।

रीतु की ट्रेनिंग खत्म हुई और उसकी गुरदासपुर जाने की कन्फर्म टिकट आज की थी। प्रकाश और रीतु दोपहर में साथ जीने की कसमें ले कर शाम 6:00 बजे स्टेशन पहुंचे। गाड़ी प्लेटफार्म पर आ चुकी थी। प्रकाश का यह पहला प्यार था और रीतु का भी। ट्रेन में बैठते समय प्रकाश की मामी ने रीतु और प्रकाश दोनों को रोते हुए एवं आंसू पोछते देखा। मामी समझ गयी और उन्होंने मामा को इशारे में बताया, रीतु की ट्रेन चलने लगी। प्रकाश वहीं खड़ा हाथ हिलाता रहा।

अगले दिन मामा मामी ने प्रकाश को समझाया कि बहन नहीं मानेगी कभी—भी बड़ी लड़की से विवाह करने हेतु। प्रकाश ने कहा वो जन्म भर कुँआरा रहेगा। रीतु ने जाते वक्त अपना पता और मोबाइल नंबर प्रकाश को देकर उसका नंबर और पता ले लिया। एक सप्ताह बाद प्रकाश भी अपने घर वापस आ गया।

घर पर उसने अच्छे से पढ़ाई की और फर्स्ट डिविजन बी.कॉम. में पास हुआ। उसने इस की सूचना खत के माध्यम से रीतु को दी। रीतु खुश हुई पर उसने दुःख भरी खबर दी कि घर वाले लड़का तालाश रहे हैं। इसलिए तुम जल्द से जल्द अपने मम्मी पापा को मनाकर यहां गुरदासपुर आ जाओ। रीतु ने अपने सहेली का पता और नंबर भेजा की आगे से उसी पते पर खत डालना और सहेली के नंबर पर ही कॉल करना।

प्रकाश ने अपने मामा मामी को फोन कर बोला कि वो आकर मम्मी पापा को मनाये। दो दिन बाद मामाजी दो सौ किलोमीटर का रास्ता तय करके प्रकाश के घर आये। मामा जी ने अपने बहन से बात की

और बताया दोनो एक दूसरे को बहुत चाहते हैं और एक-दूसरे के बीना जीने की कल्पना नहीं कर सकते। मम्मी पापा दोनों तानाशाह स्वभाव के थे और किसी कीमत पर दो साल बड़ी लड़की से बेटे का विवाह नहीं कना चाहते थे। प्रकाश ने कहा आपकी ये मर्जी है तो मैं भी आपका बेटा हूँ और हर हर महोदय की कसम खता हूँ कि मैं जिन्दगी भर कुआरा रहूँगा। आप अपने बहु के अरमान सतीश की शादी करके पूरा करना। मम्मी पापा स्तब्ध हो गये और आंखे खुली की खुली रह गयी। मामाजी ने फिर समझाया लड़का जवान है कुछ गलत कदम उठायेगा तो समाज में बदनामी होगी। मामाजी के लगातार समझाने पर मम्मी पापा राजी हो गये। इतना सुनते ही प्रकाश नाचने लगा। छोटा भाई सतीश भी ताली बजाने लगा।

अगले दिन प्रातः की ट्रेन से प्रकाश उसके मम्मी पापा और मामाजी गुरदासपुर रवाना हो गये, निकलने से पहले प्रकाश ने सूचना रीतु की सहेली को दे दी। सब लोग 06:00 बजे गुरदासपुर पंहुचे और एक घण्टा बस में सफर करके पिण्ड पंहुचे। रीतु के पिता जी का घर ढूँढने में देर नहीं लगी।

रीतु का घर संयुक्त परिवार था। सब लोगों को मेन हाल में बैठाया गया पंहुचते ही चाय और नाश्ता लेकर रीतु आयी और प्रकाश के मामा जी और मम्मी पापा के चरण छुए। मम्मी ने रीतु को अपने बाजू में बैठा लिया और घर के सदस्यों के बारे में पूछने लगी। सभी जानकारी लेने के बाद प्रकाश के मामाजी ने रीतु के घर आने का बुजुर्गों को मकसद बताया। रीतु की सुंदरता देखकर प्रकाश की मां प्रभावित थी। रीतु के ताऊ जी ने कहा अब जमाना बदल गया है इसलिए लड़के और लड़की की रजामंदी से विवाह होना चाहिए भले ही लड़की की उम्र बड़ी क्यों न हो। दोनों को जिन्दगी भर एक दूसरे का साथ निभाना है। रीतु के चाचा ने कहा कि मिया बीवी राजी तो क्या करेगा काजी। दोपहर में खाना खाने के बाद दोनों परिवारों ने मंगनी कर दी। रीतु ने प्रकाश को और प्रकाश ने रीतु को अंगूठी पहनाई।



पंडित बुलवाकर शादी की तारीख बारह दिसम्बर तय हुआ और उसी दिन के लिये सगाई का मुहुर्त भी निकला। घर वापस आने से पहले रीतु ने प्रकाश को अपना घर दिखाया। रीतु ने कहा घर की साज सज्जा मेरी पसन्द से होगी तो प्रकाशने चुटकी भरते हुए कहा क्यों नहीं छोटी को हमेशा बड़ी के आगे झुकना पड़ता है और तुम दो साल उम्र में मुझसे बड़ी हो। रीतु ने धीरे से एक मुक्का प्रकाश की पीठ पर मारा तो प्रकाश ने छेड़ते हुए कहा कहीं तो तुम्हारी ऊंगली एक बार फिर चुस लूं। रीतु ने हसते हुए “पाजी कहीं के” प्रकाश से कहा।

वहां से वापस आने के बाद प्रकाश हर रात दो घंटे मोबाइल पर रीतु से बात करता और अपने सुनहरे भविष्य के सपने संजोता। प्रकाश के दिन कैसे बीतने लगे पता ही नहीं चला। प्रकाश के घरवाले वीडियों कोच पचास सीटर बस से गुरदासपुर के पिन्ड गये। रीतु के घरवालों ने शानदार इन्तजाम किया था और सभी बारातियों को अच्छे खाने पीने के साथ ठहरने का इन्तजाम था। बारात पहुंचे तो सभी बारातियों को एक एक शानदार कंबल उपहार के रूप में दिया गया। मामा—मामी को शानदार पैण्ट—शर्ट और साड़ी मिलनी के समय भेंट

की गयी। वरमाला के समय प्रकाश को उछलकर रीतु को माला पहनानी पड़ीं। रीतु ने एक झटके में प्रकाश को माला पहना दी। संयुक्त परिवार में कई सारी लड़कियाँ थी जो आज प्रकाश की सालियाँ थी। सालियों ने मौका ताक कर प्रकाश के जुते चुरा लिये। जुते वापस देने के लिये प्रकाश को पांच हजार रुपये देने पड़े।



बारात वापस आ गयी और आज प्रकाश की सुहागरात थी। मामा की लड़कियों ने कमरे को फूलों से सजाया था और रात बारह बजे प्रकाश कमरे में पंहुचा तो रीतु ने घुंघट से चेहरा ढक लिया था। प्रकाश ने धीरे से घुंघट उठाया और कहने लगा कि तुम्हारा चेहरा देख कर आइना भी शरमा जाये इस पर रीतु ने चल झुठे कहीं के कहा और कमरे की बत्ती बुझा दी। उसके बाद दोनों आत्माओं का मिलन शारीरिक रूप से हुआ और प्रातः देर तक दोनों थके हारे सोते रहे। प्रकाश की मम्मी ने उन्हें जगाया नहीं और सोने दिया क्योंकि परिवार के वारिस का बीज मम्मी को उम्मीद थी की कल रात रीतु के शरीर में पड़ गया था और आने वाले समय में प्रकाश का बचपन लौट आने वाला था।

—000—

प्यार अंधा होता है

प्यार अंधा होता है



प्रताप रावत का परिवार सुखी सम्पन्न था। प्रताप प्राइवेट फर्म में मैनेजर थे और उनकी तनखाह पर्याप्त थी, जिससे घर खर्च और हर माह बचत भी हो जाती थी। प्रताप की पत्नी किरण गृह कार्य में दक्ष सफल गृहिणी थी और अपने पति का दाया हाथ थी। प्रताप का बड़ा बेटा राजेश रावत बी.एस.सी पास कर घर के पास ही सीलमपुर की एक लैब में सहायक के रूप में कार्य कर रहा था। छोटा बेटा संजय इन्टर में पढ़ाई कर रहा था। दिल्ली की भाग दौड़ से परिवार को कोई मतलब नहीं था और सब अपनी दिन चर्या का निर्वाह अच्छी तरह करते थे।

राजेश रावत की लैब में एक टैक्निशियन काम कर रहा था, जिसका नाम गोविन्द था। राजेश और गोविन्द में गहरी दोस्ती थी। एक दिन गोविन्द ने राजेश से कहा कि चलो आज रात विवाह समारोह में चलते हैं। बारात सीलमपुर से जहाँगीर पूरी दिल्ली जा रही है। राजेश ने चलने से मना किया तो गोविन्द नाराज हो गया। गोविन्द कहने लगा कि मेरे मामा के लड़के की शादी है। तुम नहीं आओगे तो मैं तुम्हारे साथ बातचीत बंद कर दूंगा। गोविन्द के आग्रह को मान कर राजेश शादी में चलने को तैयार हो गया।

तय समय अनुसार राजेश अपने मित्र गोविन्द के घर पंहुच गया और दोनों बारातियों वाली बस में सवार हो गये। बारात जहाँगीरपुर पंहुची और एक बहुत बड़े शादी पैलेस में सभी के लिये खाने पीने और सोने की व्यवस्था बड़े अच्छे ढंग से की गई थी।

रात्रि भोज खाते समय राजेश अचानक एक लड़की से टकरा गया और लड़की बहुत ही खूबसूरत थी। राजेश उसे देखता ही रह गया, गोविन्द ने जब जोर से खांसा तो राजेश को होश आया। राजेश के हाथ में खाने की प्लेट से सब्जी राजेश के पेण्ट पर गिरी। लड़की ने सॉरी कहते हुए अपने हाथ के रुमाल से राजेश के पैण्ट को साफ करने की कोशिश की तो राजेश पीछे हट गया जैसे चार सौ चालीस वोल्ट का करण्ट लगा हो। राजेश ने इट्ज ओके कहा और पैण्ट साफ करने बाथरूम चला गया। बाथरूम से वापस आकर देखा कि लड़की कहीं दिखाई नहीं दे रही थी। राजेश की आँख जगह ढूँढती नजरो को गोविन्द ने भांप लिया और जोर से हंस कर रहा “रब ने बना दी जोड़ी” राजेश अपने दोस्त को मुक्का मारने लगा और कहने लगा साले मजाक उड़ाता है, ऐसा कुछ नहीं है।

अगले दिन बारात वापस लौट आयी। बात आयी गयी हो गयी। पांच दिन बाद राजेश प्रातः दूध लेने डायरी पंहुचा तो उसने शादी वाली लड़की को स्कूटी स्टार्ट करते देखा तो जोर से चिल्ला पड़ा “सुनिये” राजेश की बुलंद आवाज को सुनकर लड़की स्कूटी स्टैण्ड पर खड़ी कर राजेश की ओर चली आयी।

राजेश ने पूछा आप तो जहाँगीरपुरी बारात में थी, लड़की ने कहा मेरा नाम कौसर खाँ है और वधु पक्ष से शादी में शामिल होने आयी थी। वधु मालती उसकी बेस्ट फ्रेंड थी। राजेश ने कहा मैं वर पक्ष की ओर से आया था। वर रंजीत मेरे दोस्त गोविन्द का भाई है। दोनों ने एक दूसरे के मोबाइल नंबर एकचेंज कर एक दूसरे से विदा ली।



कौसर इस तरह राजेश के दिल में बस गयी कि ना चाहते हुए भी शाम को राजेश ने मोबाइल पर कौसर का नंबर मिलाया। फोन रिसिव होते ही कुछ सेकेण्ड तक राजेश कुछ नहीं बोला तो कौसर ने कहा हैलो राजेश चुप क्यों हो बात क्यों नहीं करते। राजेश ने बात करना शुरू किया और पूछा कि तुमने कैसा जाना मेरा फोन है।

कौसर ने कहा मैंने तुम्हारा नंबर फोन में तुम्हारे नाम के साथ सेव कर रखा था।

कौसर ने राजेश से घर वालों के बारे में पूछा तो राजेश ने बताया कि पिताजी कट्टर हिन्दू और मां तो मांस मछली से बहुत परहेज करती है। छोटा भाई संजय इंटर में पढ़ाई कर रहा है। राजेश के पूछने पर कौसर ने अपने वालिद इनायत अली और वालिदा रिजवाना के बारे में बताया। छोटी बहन सलमा सोलह साल की है पर बहुत शरारती है। कौसर स्नातक कर चुकी थी पर घर पर ही छोटे बच्चों के ट्यूशन लेती थी क्योंकि नौकरी बाहर जाकर करने की मनाही थी। राजेश ने कौसर से पूछा क्या मैं छोटा बच्चा बनकर एडमिशन ले सकता हूँ तो कौसर ने कहा उसके लिये मुझे तुम्हारा पेट के ऊपर का हिस्सा कांटना पड़ेगा जो मैं कर नहीं सकती। इस बात पर दोनों हंसने लगे। कौसर ने पूछा क्या कभी किसी से प्यार-ब्यार किया है तो राजेश ने कहा रास्ता साफ है। राजेश ने कहा ये लव एट फर्स्ट साइट है। राजेश ने कहा कि सब्जी गिरने से जो पैण्ट गंदी हुई है, उस जगह को बार-बार चुमता हूँ। सोचता है पैण्ट पर नाइलन कवर चढ़ा कर हमेशा के लिये अपने दिल रूपी अकस में बैठा लूँ। कौसर ने कहा छूटे कहीं के और फोन काट दिया। राजेश की दिल की धड़कने धक-धक करती जा रही थी और वो सोच रहा था कि काश पंख लगे होते शरीर पर तो उड़कर कौसर के पास पंहुच जाता। राजेश ने दोबारा कॉल किया तो फोन उठते ही आवाज आयी मैं रिजवाना खान बोल रही हूँ। आप कौन ? राजेश ने दांत पीसते हुए बिना कोई जवाब दिये फोन काट दिया।

राजेश ने दो दिन तक जानबुझकर कौसर को फोन नहीं किया तो तीसरे दिन कौसर ने फोन कर राजेश को शाम 04:00 बजे महिन्द्र रेस्टोरेंट बुलाया। राजेश 03:00 बजे लैब से छुट्टी लेकर साढ़े तीन बजे महिन्द्रा रेस्टोरेंट पंहुच गया। स्टीवर्ड ऑर्डर लेने आया तो उसने आधे घण्टे बाद ऑर्डर दूंगा कहा। राजेश बार-बार घड़ी देखने लगा और ऐसा लग रहा था जैसे समय काटे नहीं कट रहा । 04:16 पर

एक बुर्खे वाली ने रेस्टोरेंट में कदम रखा और सीधे चलते हुए राजेश के पास आयी। आते ही उसने बुर्खा उतारा तो राजेश को कौसर के दीदार हुए। राजेश ने स्टीवर्ड को वैजसेण्डविच बर्गर और काफी का ऑर्डर दिया। राजेश ने कौसर के सामने अपना दिल खोल कर रख दिया और कहा मैं तुम्हारे बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकता। कौसर ने कहा हम दोनों अच्छे मित्र हैं और रहेंगे पर अभी प्यार नाम की कोई चीज मेरे दिल में तुम्हारे लिये नहीं है। राजेश इस बात को सुनकर चिढ़ गया और बोला मेरे मम्मी और पापा कौन सा तुम्हें अपना लेंगे मैं ही पागल हूँ जो घर में पाकिस्तान युद्ध कराने जा रहा था। नाश्ता और काफी स्टीवर्ड दे गया तो दोनों ने काफी का प्याला उठा लिया पर नाश्ता वैसे ही पड़ा रहा। काफी खत्म होने पर स्टीवर्ड ने बिल दिया और कहा पहली बार देख रहा हूँ कि नाश्ता बिना खाये आप बिल अदा कर रहे हो। राजेश को गुस्सा आ गया और कौसर की उपस्थिति की वजह से शांत रहा। दोनों ने एक-दूसरे से विदा ले लिया।



तीन दिन बाद राजेश के पिता जी ने कहा रविवार को सपरिवार ओखला जायेंगे राजेश के लिये लड़की देखने। आज बुधवार था,

रेस्टोरेंट का गुस्सा राजेश ने मन में अभी शांत नहीं हुआ था। राजेश ने रात के समय कौसर को फोन कर सूचना दी कि रविवार को लड़की देखने ओखला जा रहे हैं। कौसर ने कहा जरूर-जरूर बड़े शोक से देखने जाइये हमें कोई एतराज नहीं। राजेश को कौसर की ये बात ठीक नहीं लगी और उसने फोन गुस्से से काट दिया। रविवार को कार टैक्सी लेकर पूरा परिवार लड़की देखना ओखला गया। लड़की के पिता ने बहुत आवगत की और राजेश का परिचय पूजा से कराया गया। दोनों घरवालों ने राजेश और पूजा को आधे घण्टे के लिये बातचीत करने खुला छोड़ दिया।

राजेश से उसकी दिनचर्या के बारे में पूछा तथा हाबिडिज के बारे में अलग से पूछा। राजेश को पूजा काफी समझदार लगी और बहुत सुंदर भी। राजेश को पूजा से बात करते समय बार बार कौसर का चेहरा पूजा की आंखों में दिखाई देने लगा। ऐसे लग रहा था। कौसर की चाहत उसका पीछा वहां भी कर रही थी। पूजा ने बताया कि वो फैशन डिजाइनिंग कर रही है। पूजा को देखकर लग रहा था कि उसे आधुनिक वस्त्र बहुत पसंद थे। खाना खाने के बाद राजेश ने अपना मो.नं. पूजा को दिया और उससे उसका मो.नं. लिया। प्रताप और किरण को लड़की बहुत पसंद आयी पर उन्होंने पन्द्रह दिन का समय मांगा जवाब देने के लिये। प्रताप जी ने फैसला बेटे राजेश पर छोड़ दिया।

राजेश ने ओखला से वापस आ कर गुस्से से कौसर को फोन नहीं किया। एक सप्ताह बाद लैब में गोविन्द ने बताया कि मेरे मेरे भाई रंजीत का फोन आया था कि भाई अपने दोस्त राजेश को समझाओं, मालती बता रही थी कि उसकी मित्र कौसर ने एक सप्ताह से खाना नहीं खाया है और राजेश की याद में पागल हुए जा रही है। यह सुनते ही जेसे राजेश का दिल कलेजे को आ गया। लैब से तुरंत छुट्टी की राजेश ने और कौसर को फोन किया। यद्यपि पूजा राजेश के मन में बसी हुई थी। कौसर ने गुस्से से कहा क्यों फोन किया तुम्हे तो ओखला वाली लड़की पसंद आ गयी है। मैंने उसके सिर की कसम खा कर कहा ये गलत है और बहुत समझाने पर महिन्द्र

रेस्टोरेंट आने के लिये राजी हुई। आधे घण्टे में हम दोनों रेस्टोरेंट पहुंचे और राजेश ने अपने हाथ से एक सप्ताह से भूखी कौसर को खाना खिलाया कौसर ने पूछा अपने मम्मी पापा को कैसे राजी करोगे तो मैंने कहा ये मेरा काम है।

राजेश ने पापा प्रताप से पूजा का नापंसद होना बतलाया। प्रताप जी ने गुस्से में कहा कि तुम्हारे लिये कोई अप्सरा स्वर्ग से ढुंढनी पड़ेगी।

एक माह बाद प्रताप जी ने कहा रविवार को लड़की देखने जायेंगे। शनिवार रात राजेश घर नहीं आया और मोबाइल बंद कर दिया। रविवार रात घर आने पर मम्मी पापा दोनों उस पर बहुत नाराज हुए। मां किरण का रोते रोते बुरा हाल था। प्रताप जी के ज्यादा जोर देकर पूछने पर राजेश ने बताया कि वो कौसर से प्यार करता है और शादी उसी से करेगा। राजेश ने कहा कौसर से शादी नहीं हुई तो जान दे दूंगा। प्रताप जी ने कहा कि तेरी जो मरजी हो कर पर मैं एक मुसलमान लड़की को अपनी बहु नहीं बना सकता। प्रताप जी ने राजेश से कहा कि तेरे लिये मेरे घर में कोई जगह नहीं है।

मम्मी किरण ने खाना पीना छोड़ दिया पर राजेश पर कुछ असर नहीं हुआ। कौसर के घर वाले भी किसी हिन्दू को अपना दामाद नहीं बनाना चाहते थे।

राजेश ने घर आना छोड़ दिया और गोविन्द के घर रहने लगा। कौसर ने राजेश को फोन करने के लिये मना किया और स्वयं दिन में एक बार फोन करने लगी। कौसर ने कहा वो हिन्दू धर्म अपना कर राजेश से शादी करेगी। किरण का स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। 15 दिन में किरण ने बिस्तर पकड़ लिया। किरण ने खाना पीना बिल्कुल छोड़ दिया था। शरीर एक ढांचे से कम नहीं था। सौलहवें दिन मजबूरी में प्रताप जी पत्नी की चिन्ता को मन में लिये गोविंद के घर जा पहुंचे। उन्होंने राजेश से घर चलने कहा और रोने लगे। पापा को रोता देख राजेश की आंखे भर आयी और वो अपने पापा के साथ घर चला आया। किरण बिस्तर पर बेसुध पड़ी थी। राजेश ने थोड़ा

सा जल मां के चेहरे पर छिड़का और मां हडबड़ाकर उठ गयी बेटे राजेश को गले से लगा लिया, रोने लगी और कहने लगी तेरे पापा मान गये हैं। हम दोनों जल्द ही कौसर के घर जाकर उनके वालिद से कौसर का हाथ मांगेंगे। राजेश ने तुरंत मां और पापा के चरण छुएँ।

राजेश ने फोन करके कौसर को खुशखबरी दी तो कौसर खुशी से फुले नहीं समाई। तीन दिन बाद राजेश और किरण कौसर के घर जाकर उनके वालिद से कौसर का हाथ मांगा पहले तो इनायत अली राजी नहीं थे पर बेगम रिजवाना के जोर देकर कहने पर राजी हो गये।

तीन माह बाद राजेश और कौसर का विवाह हिन्दू रीति रिवाज से हुआ और शादी के समय कौसर का नाम बदलकर रूपा रख दिया गया। गोविन्द ने चुटकी लेते हुए कहा शादी के समय मेरे मित्र राजेश भाभी के रूप पर इतना मोहित हो गये कि उनके प्यार में अन्धे हो कर उनका नामकरण सही तौर पर रूपा करके कर दिया। इस पर सभी लोग हंसने लगे। राजेश की मां किरण बोली हमारे लिये तो बहु का नाम "कौसर" भी बड़ा प्यार नाम है क्योंकि अब बहु हमारे घर की पूजा का 'कौसर' है।

—000—

प्यार एक धोखा है ।

प्यार एक धोखा है।

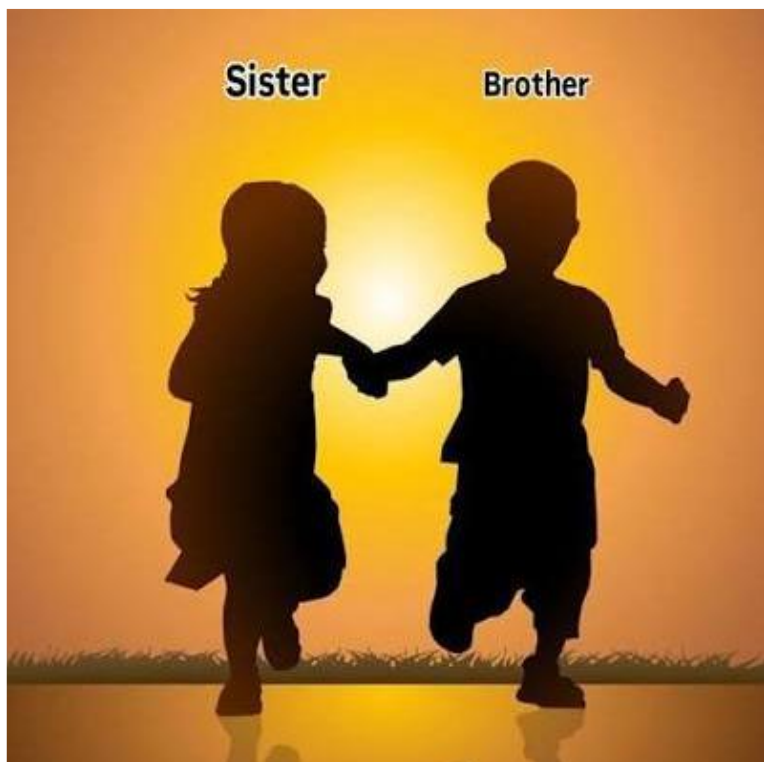


जो तुझे चाहने का हक हमसे लिया था,
वो धोखा देकर दिल से खड़ा किया था। ❤️

रविप्रकाश रावत जी का परिवार कानपुर में रहता था। उनकी पत्नी कौशल्या गृहकार्य में दक्ष थीं और दोनों बच्चों की परवरिश में जी जान से लगी रहतीं। बड़ी बेटी स्नेहा अठारह वर्ष की थी और इन्टर फाइनल कर रही थी। बेटा हर्ष पन्द्रह वर्ष का था और नौवीं कक्षा में अध्ययनरत था। बहन और भाई एक दूसरे पर जान छिड़कते थे। रविप्रकाश जी खाद्य पदार्थों का होलसेल थोक व्यापार करते थे और प्रातः आठ बजे पूजा पाठ के बाद घर से निकलते थे तो रात दस

बजे के बाद ही घर लौटते। गोडाउन में सभी खाद्य पदार्थ स्टोर कर के रखे जाते और आर्डर मिलते पूरे गोडाउन से ही माल चिल्हर परचून व्यापारियों के यहां पहुंचा आते। घर हमेशा अन्न पदार्थों से भरा रहता। कौशल्या दोपहर एक बजे दुकान के नौकर से रविप्रकाश जी को खाना भेज देती। बहन और भाई हमेशा पढ़ाई में दिन रात मेहनत करते और कक्षा में प्रथम या द्वितीय स्थान पाते। हर्ष सेण्ट पाल स्कूल में पढ़ता था। सितम्बर माह में स्कूल ने 20 सितम्बर को एक सप्ताह के लिये विहार यात्रा पर जाने हेतु इच्छुक विद्यार्थियों को 3000 तीन हजार रुपये जमा कराने कहा। विहार यात्रा शिमला जाने वाली थी। रविप्रकाश जी ने प्री बोर्ड कक्षा होने की वजह से मना कर दिया। हर्ष ने माँ से गुहार लगाई पर माँ इस मसले पर चुप हो गयी। रात सोते समय हर्ष बुरी तरह रोने लगा तो स्नेहा से ये देखा ना गया। उसने भाई से कहा कि तुम चिन्ता मत करो। स्नेहा ने कहा वो पापा को मना लेगी। प्रातः स्नेहा पापा के पास चाय देने पहुँची। उसने पापा से कहा – आप कितनी मेहनत करते हो काश मैं आपका सहयोग कर पाती। पापा समझ गये कि जरूर कोई बात है जो स्नेहा अपनी बात मनवाने ये सब कह रही है। रविप्रकाश जी ने पूछा स्नेहा आज सूर्य उदय किस दिशा में उदय हुआ है। इतना सुनते ही स्नेहा ने शर्माते हुआ कहा पापा आप भी ना और रविप्रकाश जी के गले लग गई। स्नेहा ने पापा से कहा – पहले आप कसम खाईये कि मैं जो माँगूगी आप दोगे और पापा के सिर पर अपने हाथों से मालीश करने लगी। पापा ने स्नेहा को बोला ठीक है अब बताओ। स्नेहा ने हर्ष को बिहार यात्रा पर भेजने हेतु स्वीकृति देने हेतु कहा। रविप्रकाश बहन और भाई के बीच अगाध प्रेम और स्नेह देखकर गदगद हो गये और तुरन्त सिर हिला दिया। स्नेहा थैंक्यू पापा कहते हुए नाचते हुए हर्ष के कमरे की ओर दौड़ पड़ी। अपने सो रहे भाई के चेहरे पर पानी छिड़का तो हर्ष चिल्ला उठा, क्या दी आप सवेरे सवेरे नींद क्यों खराब कर रही हो। स्नेहा ने कहा उठ तो पगले पापा ने तुझे बिहार यात्रा पर भेजने के लिये हाँ कह दी। हर्ष खुशी से एक झटका लेकर उठा और अपनी दीदी का हाथ पकड़ कर नाचने लगा और चीखने

लगा 'तक दिना दीन तक दीना दीन शिमला मैं आ रहा हूँ दिना दीन' ।



स्नेहा ने अपने भाई को गले लगा किया और हर्ष कहने लगा दीदी यू आर ग्रेट हो। हर्ष को स्कूल की गाड़ी लेने आयी थी बिहार यात्रा पर के जाने हेतु। पहली बार माँ कौशल्या और बहन स्नेहा एक सप्ताह के लिये हर्ष के बिना रहनेवाली थी। दोनों रोती जा रही थी। इस पर हर्ष ने कहा ठीक है मैं स्कूल की गाड़ी वापस भेज रहा हूँ, इस पर दोनों चुप हुए और हर्ष बिहार यात्रा पर चला गया। एक सप्ताह बाद हर्ष लौटा तो ढेर सारे कपड़े माँ बाप के लिये एवं बहन स्नेहा के लिये लाया। माँ ने हर्ष से कहा तुम एक सप्ताह में कमजोर हो गये तो स्नेहा ने हँसते हुए कहा कि भाई कमजोर नहीं हुआ है हाँ पर आपकी आँखें जरूर कमजोर हो गयी हैं। इस बात पर सब हँसने

लगे। समय बीतता गया और स्नेहा इन्टर फाइनल में कक्षा टॉप कर बी.ए. प्रथम वर्ष में पहुँच गयी और हर्ष दसवीं में पहुँच गया। सेण्ट जेवियर्स डिग्री कॉलेज में स्नेहा का एडमिशन हुआ जहाँ को एजुकेशन था। पहले दिन स्नेहा कॉलेज पहुँची और मेन गेट से क्लास की ओर जाने लगी। लड़कों का एक झुण्ड खड़ा था जो कि सेकेण्ड इयर का था और प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के कान खींच रहे थे। स्नेहा आगे बढ़ी तो एक लड़के ने गाना शुरू किया कि ये काली काली आँखें ये गोरे गोरे गाल ये तीखी तीखी नजरें ये हिरनी जैसी चाल। स्नेहा रुक गयी और पलट कर लड़कों को गुस्से से देखने लगी। उनके झुण्ड में एक सभ्य सा दिखने वाला लड़का साहिल सामने आया और स्नेहा से सॉरी कहा सब की तरफ से स्नेहा इटज् ओके कह कर चली गयी। स्नेहा चूँकि सभ्य परिवार की थी इसलिये चुप रही। दोपहर लंच ब्रेक में अपनी बेंचमेट शीला के साथ पहुँची तो सुबह वाला ग्रुप कैटिन में मेज पर हाथ से डफली बजाते हुए हुड़दंग कर रहे थे। साहिल ने स्नेहा को देखा और मुस्कुरा दिया। साहिल ने अपने ग्रुप को शान्ति से चाय पीने कहा। स्नेहा को साहिल अच्छा संस्कारी लड़का लगा। शाम को बस स्टॉप पर बस का इन्तजार करती स्नेहा को साहिल ने बाइक पर गिफ्ट (लिफ्ट) देने की पेशकश की जिसे स्नेहा ने सहर्ष स्वीकार किया। रास्ते में बातें करते कब सफर कट गया पता ही नहीं चला। साहिल एक कमरा किराये पर लेकर पढ़ाई कर रहा था। स्नेहा का घर साहिल के घर से बहुत आगे था। साहिल ने स्नेहा को उसके घर ड्राप कर दिया। स्नेहा ने चाय का निमन्त्रण दिया, तो साहिल ने फिर कभी कह कर अपने कमरे पर लौट आया। रात में स्नेहा की आँखों में बार बार साहिल का चेहरा आने लगा। एक बार इसी उधेड़बुन में उसने अपने छोटे भाई हर्ष की गालों पर चुम लिया तो हर्ष चीख पड़ा क्या करती हो दीदी सपना देख रही हो क्या ? पूरा गाल गीला कर दिया। एक दिन कॉलेज में साहिल ने स्नेहा को अचानक से प्रपोज कर दिया। प्रपोज करने का स्टाइल बहुत विचित्र था दोनों घुटनों के बल बैठ कर, दोनों हथेलियों को तिरछा कर के माथे पर लगाकर बोला यू

आर माई ड्रीम गर्ल। स्नेहा हतप्रभ रह गयी। अंदर से वो भी दिल से साहिल को पसन्द करने लगी थी (स्नेहा भी अपनी गर्दन को नीचे झुकाकर दोनों घुटनों के बल बैठकर हथेली तिरछी कर के माथे पर लगाकर) साहिल के प्यार को स्वीकृति देते हुए उसके माथे का चुम किया। फिर क्या था साहिल खुशी से चिल्ला उठा स्नेहा आई लव यू। आसपास के छात्र देखने लगे तो झट साहिल बाइक स्टार्ट कर स्नेहा को बिठा कर ले गया। दोनों के रोमाँस की रंगीन दुनिया दिन ब दिन रोमांटिक होती जा रही थी। स्नेहा ने साहिल से सामाजिक दायरे में रहकर प्यार के पग आगे बढ़ायेंगे कहा। साहिल बहुत हैण्डसम लगता था और भी कई लड़कियां कोशिश करती पर साहिल सबसे दूरी बनाए रखता। एक दिन लाइब्रेरी से वापस आते वक्त एक लड़की साहिल से उलझ पड़ी। लड़की बोली है क्यूट हैण्डसम बहुत गर्व है तुम्हे अपने आप पर, लड़की ने कहा हम भी तो कोई कम नहीं और जैकेट उतार कर कहने लगी देखो साहिल मैं स्नेहा से बीस हूँ शारीरिक रख रखाव में, तुम्हे मुझसे इससे ज्यादा ही भोगने को मिलेगा। इतना सुनकर साहिल ने काजल को थप्पड़ जड़ दिया और स्नेहा को लेकर तेजी से निकल गया। स्नेहा बहुत ही आकर्षित हुई साहिल के व्यवहार से। एक दिन कालेज की छुट्टी के समय बरसात होने लगी। साहिल ने स्नेहा को बाइक पर बैठाया और अपने कमरे की तरफ निकल गया। बारिश जोर से हो रही थी सो साहिल ने बाइक अपने कमरे के पास रोक दी। साहिल ने स्नेहा से कहा — बारिश रुकते ही मैं तुम्हे घर छोड़ दूंगा। साहिल ने वाशरूम जाकर कपड़े बदले और एक नाइटगाउन डाल कर चला आया। आते आते साहिल ने फ्रीज से शराब निकाली और दो गिलास साथ में लाकर मेज पर रख दिया। स्नेहा चौंके उठी तो साहिल ने कहा कि यार ठंड लग रही है इसलिये लाया हूँ। साहिल ने दो गिलास में शराब उँडेली और एक गिलास स्नेहा की ओर बढ़ा दिया। स्नेहा गुस्से से आगबबुला हो उठी तो साहिल ने कहा यार ये मार्डन सोसाइटी है और शराब पीते हुए स्नेहा के करीब चला आया। स्नेहा ने साहिल द्वारा बढ़ाया गया गिलास फेंक दिया। साहिल पूरी तरह नशे की

आगोश में था सो आकर स्नेहा को चुमने की कोशिश करने लगा। स्नेहा ने एक झटका देकर साहिल को फर्श पर पटका और घर से बाहर जाने के लिये भाग खड़ी हुई। भागते भागते एक आटो मिल गया और वो आटो में बैठ गयी, साहिल भी पीछे पीछे दौड़ता आ रहा था। आटोचालक स्थिति को भांप कर तेज रफ्तार से आटो लेकर चला गया। सबकुछ इतना जल्दी घटित हुआ कि स्नेहा को लगा कि उसके प्यार का शीशमहल चकनाचूर हो कर गिर गया है।



अगले दिन कालेज पहुँचने पर उसने देखा कि साहिल बाइक पर पीछे दो दो लड़कियों को बैठा कर ला रहा है और लड़कियां बारी बारी से उसे चूमती या गालों को सहला देती। इतने कम समय में प्यार हो जाना और साहिल के प्रति इतना ज्यादा आकर्षण स्नेहा जैसी संस्कारी लड़की के लिये सहज नहीं था। स्नेहा उन दो

लड़कियों के बारे में सोचने लगी जो आज साहिल के साथ बाइक पर सवार थीं और खुले आम अश्लील हरकत कर रही थीं। स्नेहा ने सोचा उसने कल जो कुछ साहिल के साथ किया वो उसके पारिवारिक संस्कार थे। दोनों लड़कियों की अश्लील हरकतें एक बिगड़े हुए मार्डन परिवार को दर्शा रहा था। साहिल का एक झटके में प्यार में धोखा देना और अगले दिन ही कपड़े बदलने जैसा नई दो लड़कियों के साथ फ्लर्ट करते हुए कालेज में प्रवेश करना दर्शा रहा था कि साहिल को केवल चमड़ी से प्यार है और प्यार व आदर से कोई वास्ता नहीं है।

स्नेहा ने भगवान को धन्यवाद दिया कि उसे अच्छे संस्कारी माता पिता मिले जिसकी वजह से उसकी इज्जत बच गयी। उसने सोचा काश मेरे जैसे माता पिता हर परिवार में हो जिससे की ये समाज नंगापन से दूर रहे और शादी जैसे पवित्र बंधन में बँधने के बाद ही दो आत्माओ और दो शरीर मिलने के बाद एक हो जाये। उस मिलन से उत्पन्न जीव एक सुनहरे विकसित भारत की धरती पर खुली साँस ले और पल पोस कर समाज का एक मजबूत आधार स्तम्भ बने जिस पर पूरे भारतवर्ष को गौरव हो।

---000---

दहेज

दहेज



रेडियों पर गाना आ रहा था “दिल के अरमाँ आसुओं में बहे गये” निकाह फिल्म का ये गाना मेरे दिल में बसा हुआ था। गाने के बोल सुनकर मेरी आँखे भी भर आयी और आंसु बहने लेंगे। मैं अतीत की यादों में खो गयी और एक-एक करके अतीत के दृश्य मेरे सामने यू घूमने लगे जैसे हकीकत हो।

मैं घर की सबसे बड़ी बेटी थी। मेरी उम्र 22 वर्ष पार कर चुकी थी। मेरे पिता जी श्री राकेश्वर शर्मा नगर निगम कार्यालय में क्लर्क थे। माँ सुमित्रा सफल गृहिणी थी। मेरे अलावा 20 वर्ष की मेरी छोटी बहन शारदा बी.ए. तृतीय वर्ष में थी। दो छोटे भाई संजय और मुकेश 12 और 10 वर्ष के थे और पाठशाला में 8वीं और 6वीं में पढ़ाई कर रहे थे।

हमारे परिवार में 21 यां 22 वर्ष तक शादी कर दी जाती है इसलिए मेरे माता पिता बहुत परेशान थे तथा हर जगह मेरे लिये वर ढूँढ रहे थे।

मेरे दिल में भी कई अरमान थे कि “मेरे सपनों का राजकुमार घोड़े पर सवार होकर आयेगा और डोली में बैठाकर ले जायेगा।” मैं बेसवरी से अपने होने वाले राजकुमार का इन्तजार करने लगी।

एक दिन पिताजी ऑफिस से आते ही खुशखबरी सुनाने लगे। उन्होंने कहा कि उनके मित्र के पहचान वाले लोग ब्राम्हण है और उनका बेटा सरकारी स्कूल में अंग्रेजी का अध्यापक है तथा एम.ए. अंग्रेजी में उत्तीर्ण किया है। माँ और घर वाले इस खबर को सुनकर बहुत खुश हुअे। पिताजी ने कहा कि लड़का और उसके परिवार वाले रविवार को घर पर राधा को देखने ओयंगे। माँ ने पूछा दहेज की चर्चा हुआ क्या? पिताजी बोले पहले अपनी राधा को पसंद कर ले फिर दहेज के बारे में बात करेंगे।

आज बुधवार था और आने वाले तीन दिनों मे पूरे घर की साफ सफाई और खिड़की पर परदे तथा दरवाजो पर सुंदर झालर लगायी गयी। मैं तो रोज रात सपना देखती कि मेरे सपनों का राजकुमार मोहन हमारे घर आया है और मुझे पसंद कर लिया है। सपने में शादी की तारीख तक दिखने लगी।

आखिर रविवार का दिन आ गया। पिताजी मध्यवर्गीय होते हुऐ भी बाजार से कई प्रकार के फल और मिठाई लेकर आये। पिताजी की तनलख्वाह केवल घर खर्च और छोटी बहन तथा दो छोटे भाईयो की पढ़ाई लिखाई पर खर्च हो जाती। शाम 5:00 बजे तय समय अनुसार मेरा राजकुमार मोहन, उनकी छोटी बहन पायल तथा माता—पिता आये।

मेन हाल में सभी बैठे थे और मैं चाय की तश्तरी नमकीन, मिठाई और काजू बादाम लेकर पंहुची। मैंने खिड़कियों से अपने राजकुमार को देखा तो लगा हकीकत में कोई फिल्मी हीरो सामने बैठा हो।

मोहन की माता जी ने दो चार प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा शांत की। मैंने बी.एस.सी. उत्तीर्ण किया था और आगे भविष्य में फैशन डिजाइनिंग करने का सोच रखा था।



मोहन के पिताजी श्री सु दर्शन जी ने मेरे पापा से कहा कि हमें लड़की पसंद है और जेब से एक लम्बी दहेज की सूची पकड़ा दी। मेरे पिताजी ने अपनी तनलखाह का जिक्र करते हुए इतना ज्यादा सामान देने में असमर्थता व्यक्त की परंतु साथ ही कहा कि गृहस्थी के लिये जरूरी सामान जरूर देंगे। मोहन के पिताजी ने कहा कि इसे पाल पोस कर बड़ा किया है सरकारी स्कूल में सरकारी वेतन पर अध्यापक हैं। और मेरे पास तो कई रिश्ते हैं जिसमें दहेज के सामान के साथ लड़की वाले पाच लाख नकद देने को भी तैयार है।

मोहन के पिताजी ने हम लोगों को तीन दिन का समय दिया दहेज स्वीकृति के लिये परंतु मैं और मेरा परिवार जानता था कि लाखों रुपये का दहेज हम कभी नहीं दे सकते। माँ ने पिताजी से कहा हम लोग उल्टा लटक जायेंगे तब भी इतने सारे दहेज की व्यवस्था नहीं

कर पायेंगे। मोहन के घर वालों के लौटने के बाद मेरे सँपने बिखर गये और मेरा राजकुमार मोहन मेरे सपनों से गायब हो गया।

इसके बाद और तीन राजकुमार मुझे देखने आये पर दहेज के नाम पर सभी खाली हाथ लौट गये। दहेज नाम कि पिशाचनी कब तक हमारे समाज पर हावी रहेगी ये कह नहीं सकते पर हम सभी में किसी न किसी को दहेज की जड़ों को समाज से उखाड़ फेंकना होगा सोच कर मैंने पिताजी से मेरे लिये वर ढूँढ ना बंद करने के लिये कहा।

मैं बी.एस.सी. पास थी, सो मुझे जल्द ही सी.बी.एस.ई. मान्यता प्राप्त स्कूल में साइंस टीचर की नौकरी मिल गयी। तनलख्वाह भी अच्छी थी औ शाम को कई विद्यार्थी ट्यूशन के लिये आने लगे। मैं पिताजी को आर्थिक रूप से मदद करने लगी। मैंने ठान रखा था कि मैं विवाह नहीं करूंगी। पर अपनी छोटी बहन शारदा का विवाह 2 साल बाद धूमधाम से करूंगी।

मोहन के पिताजी ने जो दहेज के सामान की सूची दी थी वो मैंने सँभाल कर रखी थीं। मैं हर माह आधी तनलख्वाह पिताजी को देती तथा शेष आधी तनलख्वाह में दहेज का सामान खरीदने लगी।

दो साल बाद मेरी बहन शारदा को देखने लड़के वाले घर पर आये। घर में प्रवेश करते ही वे लोग हैरान रह गये। क्योंकि दहेज का सारा सामान वहीं मेन हाल में रखा था, मोटर-साइकिल, ए.सी., फ्रीज, वॉशिंग मशीन, डबल बेड सोफा सेट, मिक्सी के साथ और ढेर सारा सामान था। मैंने सभी तैयारी अच्छे से की थी। बहन शारदा उन लोगों को पसंद आ गयी और शायद दहेज देखकर उन्होंने उसी समय शादी की तारीख 14 नवंबर फिक्स कर दी। शारदा का विवाह धूमधाम से हुआ और माता-पिता बहुत खुश थे, परंतु मेरे कुँआरे रहने का गम सदैव उनकी आँखों में दिखाई देता, जो मुझे बहुत खलता पर मैं प्रफुल्लित थी कि मैंने कम से कम दहेज के नाम पर अपनी बहन को कुँआरी नहीं रहने दिया।

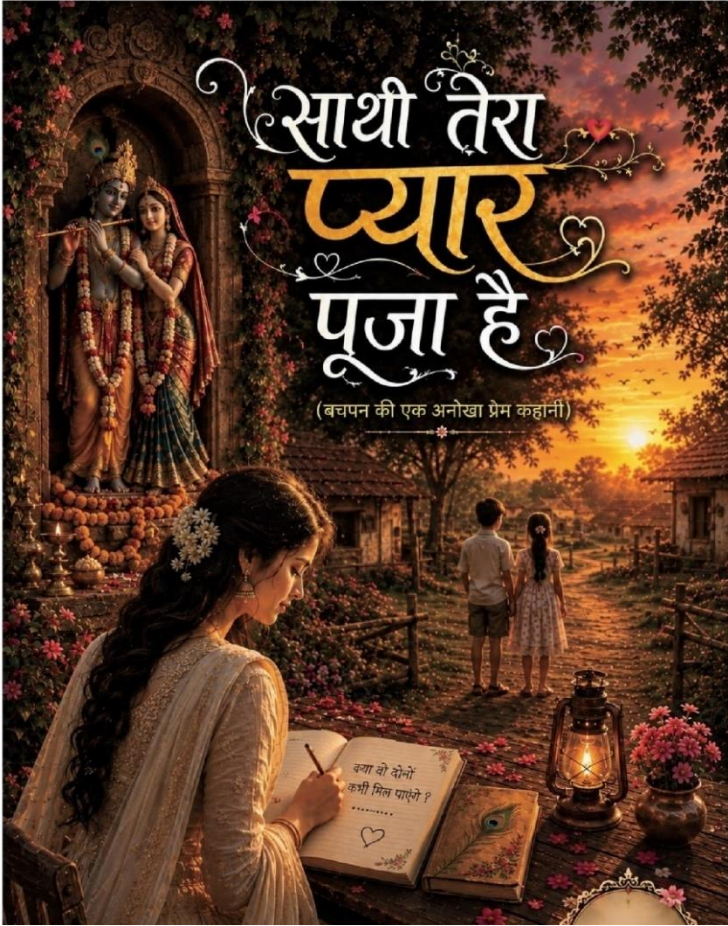


आँखों से बहते हुए आंसुओं को मैंने पोछा और गाना खत्म हो रहा था आखरी बोल के साथ **“हम वफा करके भी तन्हा रहे गये”** मैंने साडी का पल्लू कसकर कमर में बांधा और तैयार हो गयी अपने छोटे भाईयों को पढ़ा लिखा कर काबिल व्यक्ति बनाने हेतु।

———000———

प्यार एक पूजा है

प्यार एक पूजा है



प्रशांत दीक्षित जी को केन्द्र सरकार की ओर से साक्षरता मिशन पर उत्तरप्रदेश के तीन जिलों का प्रभार दे कर भेजा गया। ये जिले थे शिकोहाबाद, फर्रुखाबाद और मैनपुरी। उनकी जिम्मेदारी थी इन तीन जिलों में शिक्षा का प्रचार प्रसार करना और अनपढ़ लोगों को सरकारी स्कूल एवं नाइट स्कूल में प्रवेश दिला कर उनके शिक्षा

प्रगति के आरे में विस्तृत सूची के साथ बैठक में हर माह कलेक्टर को रिपोर्ट देना था। कलेक्टर हर जिले का अपने जिले से संबंधित रिपोर्ट केन्द्र सरकार को अग्रेषित कर देता। प्रशांत जी ने शिकोहाबाद को अपना मुख्य केन्द्र बना कर वहां रहने के लिये घर लिया। घर के प्रथम तल पर आफिस खोल लिया। प्रतिदिन 8 बजे सभी टीम के सदस्य पहुंचते और फिर प्रशांत जी के साथ किसी गांव में चले जाते।



प्रशांत जी की पत्नी सुशीला पति की अनुपस्थिति में जो फोन आते उन्हें रिसिव करके एक रजिस्टर में नोट कर लेती। प्रशांत जी का एक ही बेटा था जो कि 32 साल का था। बेटे का नाम अनुराग था। अनुराग ने एम.ए. अंग्रेजी में तथा इकनॉमिक्स में उत्तीर्ण प्रथम डिविजन में किया था। अनुराग ने एम.एड. तथा अंग्रेजी में पी.एच.डी. की थी। अनुराग धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलता था। पूर्व अनुभव के आधार पर अनुराग को कॉलेज में नौकरी मिल गयी। अनुराग अंग्रेजी और इकनॉमिक्स बी.ए. प्रथम और द्वितीय वर्ष को पढ़ाने लगा। अनुराग अपने छात्रों के साथ बहुत ही फ्रेंडली रहता था इसलिए हर रविवार कॉलेज के मैदान पर क्रिकेट खेलने आते। अनुराग को क्रिकेट खेल बहुत पसंद था इसलिए वो भी उनके साथ खेलने लगा।

अनुराग स्पिन गेंदबाज था और लेग स्पिन डालता था। उसकी स्पिन गेंदबाजी से छात्र डरते थे।

अनुराग का विवाह तीन साल पहले हुआ था। अनुराग की पत्नी माधवी ने बी.ए. कर रखा था और वो वही एक स्कूल में आठवी तक के बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाने लगी। अनुराग की मां पढ़ी लिखी थी पर वो घर पर ही रहती और पति के काम में फोन रिसिव कर के मदद करती।

एक दिन बी.कॉम. प्रथम वर्ष के छात्र अभिषेक ने अपने सर अनुराग को बर्थडे पर घर आने का न्यौता दिया। अभिषेक भी क्रिकेट खेलता था इसलिए बर्थडे वाले दिन अनुराग उपहार लेकर अभिषेक के घर पहुंच गया। बर्थडे केक पर इक्कीस मोमबत्तीयाँ थी और कमरा कॉलेज के छात्रों से भरा हुआ था। अभिषेक ने अपने माता-पिता का परिचय करवाया। अभिषेक की माता राधा ने अनुराग को अभिषेक की बड़ी बहन करीना को प्रतिदिन एम.ए. अंग्रेजी 1 घंटा ट्यूशन पढ़ाने हेतु निवेदन किया। मां ने कहा हम लोग मध्यमवर्गीय हैं। इसलिए 500/- प्रतिमाह देंगे। अनुराग उनका आग्रह नहीं टाल पाया और अगले दिन शाम छः से सात बजे रेगुलर पढ़ाने की स्वीकृति दे दी। करीना ने आगे बढ़कर “थैंक्यु” कहा।

केक काटने से पहले अभिषेक ने जोर से फुंकते हुए इक्कीस मोमबत्तीयाँ एक ही झटके में बुझा डाली। अभिषेक ने जैसे ही केक काटा सभी लोग गुब्बारे फोड़ने लगे और हैप्पी बर्थडे टू यू हैप्पी बर्थडे अभिषेक चिल्लाने लगे। अभिषेक की छोटी बहन उर्मिला ने केक से क्रीम लेकर अभिषेक के चेहरे पर मल दी।

उर्मिला बच कर भागने लगी और अभिषेक मारने के लिए उर्मिला का पीछा करने लगा। अनुराग ने अभिषेक को उपहार दिया तो अभिषेक ने झुककर अनुराग सर के पांव छू लिये। अभिषेक की मां ने सभी के लिये छोले भटुरे बनाये थे। जबरदस्ती करने पर अनुराग ने एक पीस भटुरा खाया।

अनुराग विदा लेकर वापस आ गया। उसने माधवी को अगले दिन से ट्यूशन लेने की बात बताई। माधवी को पता चला कि लडकी को पढ़ाने वाले हैं तो सचेत किया कि बच के रहना सिर्फ पढ़ाई से मतलब रखना। अनुराग ने कहा हां हां क्यों नहीं मैं तो रोमांस करने जा रहूँ।

पहले दिन ट्यूशन लेने अनुराग गया तो करीना अपने कमरे में थी। वहीं एक मेज और कुर्सी पढ़ाने के लिये लगाई थी। अनुराग ने पहले दिन अंग्रेजी लिटरेचर के बारे में पढ़ाया और साथ ही नोट्स लिखाता गया। बीच में करीना की मां चाय और नाश्ता टेबल पर रख कर चली गयी। अनुराग ने चाय पी पर नाश्ता नहीं खाया। अनुराग ने करीना से झूठ बोला कि पेट भरा हुआ है। एक घंटा कहां बीता पाता ही नहीं चला। पढ़ाते-पढ़ाते पन्द्रह दिन हो गये तो एक दिन करीना की तबीयत खराब थी। अनुराग उसके कमरे में पहुंचा तो बुखार से तप रही थी। अनुराग ने हाथ लगाकर देखा तो बुखार 102 डिग्री से कम नहीं था। अनुराग ने करीना से पूछा दवाई ली तो करीना रोने लगी। कमरे का दरवाजा हमेशा बंद रहता इसलिए अनुराग ने थोड़ा साहस करके उसके पलंग पर बैठा तो वो और जोर जोर से रोनी लगी। उसे पानी पिलाया और अपना रुमाल पानी में भिगा कर उसका सिर अपने गोद में रखकर पट्टी पानी की माथे पर रखने लगा।

आधे घंटे पट्टी करने के बाद अनुराग दवाई लेने नीचे दवाई दुकान पहुंचा और एक पत्ता पैरासिटामॉल और ताकत के लिये मल्टीविटामिन का एक पत्ता ले कर आया। उसने एक एक गोली करीना को खाने को दी और बाकी उसके सिरहाने रख दी। करीना ने बताया कि उसकी मां सिर्फ उर्मिला को चाहती है और उससे सौतेला जैसा व्यवहार करती है। बीमार हूं मालूम होने पर भी कोई दवाई देने नहीं आये। पापा मुझको चाहते हैं पर वो काम से रात आठ बजे लौटकर आयेंगे।

करीना को ठंडी पट्टी करते वक्त अनुराग को बार-बार पत्नी माधवी की सावधानी बरतने वाली बात याद आयी। करीना सांवेले नैन नक्शा वाली लड़की थी और बार-बार अपने आप को काली मैया कहकर संबोधन करती। करीना की मां की अपेक्षा के चलते अनुराग दिन ब दिन करीना के करीब आता गया। करीना, कभी-कभी सर की जगह अनुराग जी कहकर बुलाती तो अनुराग को अच्छा लगता।

रविवार के दिन ट्यूशन की छुट्टी थी सो करीना घर चली आयी। अनुराग ने करीना का परिचय माधवी से कराया। करीना के सांवेले रंग को देखकर लग रहा था कि माधवी बेफिक्र हो गयी। माधवी ने करीना को चाय नाश्ता कराया और करीना एक घंटे बाद वापस चली गयी।

कॉलेज में गायन प्रतियोगिता का आयोजन 05 सितम्बर टीचर्स डे पर किया गया। उद्घोषणा की जिम्मेदारी अनुराग को दी गयी। अनुराग कार्यक्रम का सफल संचालन कर रहा था। कार्यक्रम देखने माधवी भी पहुंची। पहली पंक्ति में ही माधवी अपनी दो सहेलियों के साथ और बगल में ही करीना अपनी सहेलियों के साथ बैठी थी। अनुराग की उद्घोषणा और मंच संचालन से करीना इतना प्रभावित हुई की उसने अपने सहेलियों से कहा यार सर आज कितने हैण्डसम लग रहे हैं भगवान करे उनको किसी की नजर ना लगे। सहेलियाँ तपाक से बोली “तेरी जान है सर” इतनी जोर से कहा गया कि माधवी उठ कर चली गयी। मंच के शोरगुल में अनुराग समझ नहीं पाया मामला क्या है। कार्यक्रम समाप्त होते ही अनुराग जल्दी-जल्दी घर भागा जबकि करीना आवाज देती रह गयी पर अनुराग ने अनसुना कर दिया।

अनुराग जब घर पहुंचा तो मां बाप दोनों माधवी को समझा रहे थे और सात्वना दे रहे थे। अनुराग ने भी पत्नी को बहुत समझाया कि अति उत्साहित होकर शायद करीना ने ये कह दिया है। पत्नी माधवी ने जिद पकड़ ली की आप कल से करीना को ट्यूशन पढ़ाने नहीं

जाओगे तो अनुराग के मां बाप ने समझाया मार्च तक पढ़ा लेने दो परीक्षा के बाद जाना बंद कर देगा। बड़ी मुश्किल से माधवी मानी।

अगले दिन अनुराग जब करीना को पढ़ाने पहुंचा तो करीना कमरे में रोते हुए अनुराग से लिपट गयी। करीना बोली मैं आपके बिना जिन्दा नहीं रह पाऊंगी। मैंने आपको अपना पति परमेश्वर मान लिया है। मैं माधवी जी के रास्ते में कभी नहीं आऊंगी। उनकी सेवा करूंगी बस आप मुझे अपने चरणों में पढ़े रहने दो। अनुराग को लगा कि वाकई प्यार ही सच्ची पूजा है तो मैं इस लड़की का जीवन कैसे बरबाद कर सकता हूं।

अनुराग ने ठान लिया कि वो करीना के साथ बेवफाई नहीं करेगा। करीना ने उसके पांव छुए तो अनुराग ने उसे उठाकर गले से लगा लिया। उस दिन करीना की मां चाय रखने आयी तो उन्होंने दोनों को एक साथ लिपटे हुए देखा। मां ने रात में घर पर हंगामा किया और अगले दिन अभिषेक से कहला दिया कि कल से आप ट्यूशन मत आना।

अनुराग को ट्यूशन बंद करना पड़ा पर उसे रात में नींद नहीं आती। कई बार माधवी ने टोका कि सोते क्यों नहीं। इस बीच करीना की गहरी मित्र अनुराग से मिलने आयी और कह कि करीना ने कल दोपहर दो बजे आपको मेरे घर बुलाया है।

अगले दिन अनुराग कॉलेज से आधे दिन की छुट्टी लेकर पहुंचा तो करीना ने बताया कि मां बहुत ज्यादा उसे तंग कर रही थी। अनुराग ने करीना से कहा कि मैं तुम्हारी मित्र के हाथो मोबाइल भेजुंगा रात ग्यारह बजे के बाद मेरे नंबर पर बात करना। अनुराग ने करीना से कहा कि बी.एड. कॉलेज में एक सीट मिल रही है। मैं तुम्हारा एडमिशन वहां कर दूंगा। करीना ने कहा बहुत खर्च होगा अनुराग ने कहा मैं सब इन्तजाम कर दूंगा। अनुराग ने करीना के लिये मोबाइल भेजा जिसे उसने मां से छिपा कर रखा। दोनों लोग रोज बात करते। पन्द्रह दिन बाद अनुराग ने करीना को खुशखबरी दी की तुम्हारा

एडमिशन बी.एड. में हो गया है। कल चलना है। करीना की मां ने अनुराग को घर बुलाया बैठक वाले कमरे में उसके मम्मी पापा छोटा भाई छोटा भाई और बहन बैठे थे। अनुराग ने जाकर खुशखबरी दी कि एक साल के लिये करीना उन्नाव में पेयिंग गेस्ट में रहेगी। बस पापा और भाई खुश हुए की करीना एक साल बाद सरकारी स्कूल में आवेदन कर सकती है। अगले दिन अनुराग को माधवी से झूठ बोलना पड़ा कि कॉलेज के काम से कानपुर जा रहा हूं। कार में सवार होकर अनुराग, करीना और उसके पापा उन्नाव खाना हुए। अनुराग ने पंधुचकर कॉलेज की पूरी फीस तथा पेयिंग गेस्ट का तीन माह का खर्चा जमा कर उनके पापा के साथ वापस आ गया।



प्रतिदिन करीना और अनुराग की बात होती मोबाइल पर और अनुराग पढ़ाई में कड़ी मेहनत करने कहता। तीन माह हो गये थे। एक दिन करीना का फोन आया कल मम्मी आने वाली है मैं उनका सामना नहीं करना चाहती। प्रातः अनुराग कार लेकर उन्नाव पंधुचा और करीना को लेकर कानपुर खरीददारी करने चला आया। करीना की मां बार-बार फोन करती तो करीना ने कह दिया कि हम लोग शाम

को वापस आयेंगे। करीना की मां कहती कोई बोलने वाला नहीं है दोनों खुब ऐश करो। करीना को मां की ये बातें सुनकर करीना चिढ़ जाती।

शाम को वापस घर पहुंचने से पहले ही करीना की मां आखरी ट्रेन पकड़कर वापस जा चुकी थी। अनुराग ने बाकी नौ माह का खर्चो जमा कर वापस आ गया।

करीना के बी.एड. की परीक्षा का परिणाम आया तो उसने नब्बे प्रतिशत अंक लेकर बी.एड. पास किया था। करीना घर वापस आ गयी। करीना को अपने प्यार अनुराग पर गर्व था। जिनकी वजह से वो एक ट्रेन्ड टीचर बन गयी। अप्रैल का समय था और प्रशांत जी का ट्रांसफर मुम्बई कर दिया गया। एक सप्ताह में मुम्बई जॉइनिंग थी।

अनुराग ने फोन पर करीना को सूचना दी तो जैसे करीना पर पहाड़ टूट पड़ा। करीना ने कहा मैं तुम्हारे सहारे ही जिन्दा हूं। तुम चले जाओगे तो मैं कैसे जिऊँगी। अनुराग ने काफी समझाया कि जीवन परिवर्तनशील है, जो आज है वो कल नहीं रहेगा। करीना ने कहा मैंने प्यार नहीं किया तुमसे बल्कि तुम्हारा पूजा की है। सोते जागते हमेशा तुम्हारा चेहरा मेरी आंखों में रहता है। करीना ने अनुराग को साथ ले चलने कहा पर अनुराग ने बहुत सोचा तो मन गवारा नहीं किया कि वो इस रिश्ते को क्या नाम देगा, हजारो ऊंगलिया मेरी तरफ उठेगी, समाज जवाब मांगेगा और फिर कैसे माधवी को अपनी सौत के साथ रहने कहूंगा। अनुराग ने सब सोचकर करीना को बहुत समझाया और फोन रख दिया। बुधवार दोपहर अनुराग के घर के लोगों को ट्रक में सामान भर कर निकलना था। सवेरे दस बजे अनुराग करीना से मिलने पहुंचा। करीना अपने कमरे में बंद थी और उसके पिताजी ने बताया कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है और उसने किसी को भी कमरे के अंदर भेजने से मना किया है। करीना के पिताजी ने जेब से निकाल कर एक बंद लिफाफा पकड़ाया जो

करीना ने अनुराग के नाम लिखा था। अनुराग लिफाफा लेकर आंखों में आंसू लिये लौट आया।

करीना ने उस खत में लिखा था। मेरे प्रिय 'भगवन' मैं इस जन्म में आपकी नहीं हो पायी तो किसी का ना होऊंगी पर आने वाले जन्म में मुझे आपको पति परमेश्वर के रूप में पाने की कामना जरूर रहेगी।

करीना की पत्र पढ़ते-पढ़ते अनुराग फफक-फफक कर रोने लगा।

---000---